Vol.21, Issue 5 | Annual Subscription ₹420

March 2022

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

INDIA
www.rotarynewsonline.org

Rotary

पाकिस्तान
वाइल्ड-पोलियो-मुक्त — 1 वर्ष

11 वर्षों बाद मूल्य वृद्धि

प्रिय पाठक,

रोटरी समाचार में हम 2011 से कीमतों में बढ़ोत्तरी किए बिना आपके लिए पत्रिका ला रहे है। वास्तव में, 2014 में, वार्षिक सब्स्क्रिप्शन शुल्क ₹480 से घटाकर ₹420 कर दिया गया था।

चूंकि कागज की लागत, अन्य लागत एवं प्रशासनिक खर्च लगातार बढ़ रहे है, इसलिए RNT बोर्ड ने सदस्यता मूल्य को हर महीने ₹5 से बढ़ाने का फैसला किया है - **₹35 से बढ़ाकर ₹40** करने का।

इसलिए *रोटरी न्यूज़* (अंग्रेजी, हिंदी और तमिल) के वार्षिक सब्स्क्रिप्शन शुल्क को ₹420 - एक आंकड़ा जिसे कई रोटेरियन नापसंद करते हैं! - से बढ़ाकर **जुलाई 2022 से ₹480 प्रति सदस्य किया जाएगा।**

जुलाई 2022 से ई-संस्करण का वार्षिक सब्स्क्रिप्शन **₹360 से बढ़ाकर ₹420** किया जाएगा।

हम आपका सहयोग और स्वीकृति चाहते है।

संपादक

सब्स्क्रिप्शन ऑनलाइन किया जा सकता है:

Scan here to pay

नाम

रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट

बैंक

HDFC बैंक, मॉन्टीथ रोड, एग्मोर, चेन्नई

बचत खाता संख्या

50100213133460

IFSC

HDFC0003820

शुल्क भेजने के बाद, कृपया ईमेल या व्हाट्सएप पर UTR नंबर, क्लब का नाम, अध्यक्ष/सचिव का नाम, राशि और हस्तांतरण की तारीख साझा करें।

हमारी ईमेल आइडी

rotarynews@rosaonline.org

व्हाट्सएप

9840078074

https://rotarynewsonline.org/wp-content/uploads/2022/01/Subscription-Form-22-23.pdf पर सब्स्क्रिप्शन फॉर्म को डाउनलोड किया जा सकता है।

विषयसूची

12 पाकिस्तान ने एक ऐतिहासिक पड़ाव पार किया- 1 साल वाइल्ड पोलियो केस के बिना

तालिबान और अन्य चुनौतियों से लड़ते हुए, पाकिस्तान ने जनवरी 2022 में एक भी अनियंत्रित पोलियो-वायरस मामले की रिपोर्ट किए बिना पूरे वर्ष का जश्न मनाया।

24 जालना में एक चिकित्सकिय मिशन की शुरुआत

जालना में इस 7-दिवसीय मेगा मेडिकल कैंप में लगभग 673 लोगों का शल्य चिकित्सा द्वारा इलाज किया गया।

32 बेंगलुरु में RCC यों की अद्भुत सेवा

'रोटरी कम्युनिटी कॉर्प्स' सीमाओं के पार सार्थक सेवा परियोजनाओं के साथ जुड़ती है।

40 रोटरी क्लब मद्रास मिडटाउन ने बड़ी सफलतों के साथ पूरे किए 50 साल

क्लब के अतीत की महत्वपूर्ण परियोजनाओं और उसके भविष्य की योजनाओं का एक लेखा-जोखा।

44 स्वर कोकिला शांत हो गई...

संगीत की महानायिका लता मंगेशकर को भावभीनी विदाई, जिनकी विरासत हमेशा बनी रहेगी।

54 रोटेरियन ने किया करतारपुर साहिब गुरुद्वारा का दौरा

रोटरी क्लब मनसा रॉयल के एक प्रतिनिधिमंडल ने पाकिस्तान के गुरुद्वारे की अपनी यात्रा के दौरान पाकिस्तानी-रोटेरियन के साथ तालमेल का आनंद लिया।

60 मुजफ्फरनगर के रोटेरियनों ने साक्षरता पर जोर दिया

रोटरी क्लब मुजफ्फरनगर मिडटाउन, अपनी स्थापना के 24 वर्षों से अब तक स्कूलों और बच्चों को लाभ पहुंचाने के लिए साक्षरता परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

62 रोटरी क्लब पुणे साउथ ग्रामीण महिलाओं के लिए सोया दूध की कार्यशालाएं आयोजित करता है

क्लब ने 11 गांवों की महिलाओं को प्रोटीन युक्त सोया दूध बनाना सिखाया है, जो कुपोषित बच्चों के लिए वरदान है।

Scan our QR code &
visit our Website

कवर फोटोः

पाकिस्तान पोलियोप्लस संग्रह

Scan our QR code &
read our Magazine

आपके पत्र

दिलचस्प सामग्री वाली पत्रिका की मूल्य वृद्धि का स्वागत

11 साल बाद *रोटरी न्यूज़* की सदस्यता में केवल ₹5 प्रति अंक की मामूली मूल्य वृद्धि को लेकर फरवरी अंक में की गई घोषणा का हम स्वागत करते है। इसे पत्रिका पढ़ने के शौकीन रोटेरियनों के लिए भार के रूप में बिल्कुल भी नहीं लिया जाना चाहिए।

रो ई नेताओं के संदेशों को पढ़कर रोटेरियन हर महीने प्रेरित होते है और उन्हें हमारे देश की विभिन्न क्लब गतिविधियों के बारे में भी पता चलता है। सबसे महत्वपूर्ण बात, देश के विभिन्न

हिस्सों की सेवा परियोजनाओं का विवरण उल्लेखनीय होता है।

रोटेरियनों के लिए इस पत्रिका की सदस्यता लेना और हर महीने रोटरी के बारे में इतनी जानकारी प्राप्त करना खुशी की बात है। संयोग से, हमें अपनी पत्रिका के माध्यम से RIPE जेनिफर जोन्स की अध्यक्षीय थीम, *इमेजिन रोटरी,* के बारे में पता चला। दुनिया को बदलने हेतु किए जा सकने वाले बदलावों में संभावनाओं की कल्पना करने के लिए सभी रोटेरियन से किया गया उनका अनुरोध प्रेरणादायक है।

आर श्रीनिवासन
रोटरी क्लब मदुरई मिडटाउन
मंडल 3000

न्यू यॉर्क में नए साल के दिन को चिह्नित करने हेतु आयोजित की गई परेड के दौरान रोज़ फ्लोट के माध्यम से दिया गया एक रोटरी संदेश निश्चित रूप से रोटरी और इसकी थीम के बारे में जागरूकता पैदा करने में मदद करेगा। कवर फोटो रोटरी क्लब राउरकेला के अच्छे कार्य को दर्शाता है।

यह जानकर खुशी हुई कि विश्व हृदय दिवस पर राष्ट्रव्यापी रक्त शर्करा परीक्षण शिविर सफल रहा। जैसा कि संपादक ने समझाया, जलचक्र भावी पीढ़ियों के लिए एक नवीन विचार होगा।

रो ई निदेशक वेंकटेश और रो ई निदेशक महेश कोटबागी का संदेश उल्लेखनीय है। TRF न्यासी अध्यक्ष और TRF न्यासियों के संदेश सूचनात्मक है।

LN4 कृत्रिम हाथों और उन्हें जरूरतमंदों को उपलब्ध कराने में राउरकेला रोटेरियनों की भागीदारी पर दिलचस्प लेख जानकारी से भरा हुआ है। यह जानकर खुशी हुई कि रोटरी क्लब कलकत्ता ने दार्जिलिंग में एक स्कूल का निर्माण किया है। पार्श्व गायक टी एम सौंदरराजन पर लिखित लेख हमें अतीत के सुनहरे दिनों में ले जाता है जहाँ फिल्म संगीत का सभी आनंद लेते थे।

रोटरी ने एक और बच्चे को बचाया, महिलाओं को राहत प्रदान कर रहे जलचक्र, TRF अनुदान: अभिशाप या वरदान, एक झलक और रोटरी उपहारों की मदद से उत्तराखंड का एक स्कूल दोबारा पटरी पर, जैसे सभी लेख सूचनाप्रद है। संपादकीय टीम को बधाई

फिलिप मुलप्पोन एम टी
रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन
मंडल 3211

रोटरी न्यूज में हमारे *प्रोजेक्ट अरिवु* के बारे में लिखने के लिए धन्यवाद। इस लेख ने हमारी जिम्मेदारी बढ़ा दी है। सच कहूँ तो, हमें तब तक यह अंदाज़ा नहीं था यह आपका ध्यान आकर्षित करने लायक अच्छी है जब तक कि आपने फोन करके इसके बारे में जानने की रुचि प्रकट नहीं की।

हमने इसे ग्रामीण छात्रों की सहायता हेतु एक स्वाभाविक प्रवृत्ति के साथ शुरू किया था। हम, रोटरी क्लब पुत्तूर सेंट्रल की टीम अरिवु, हमारे क्लब के सभी सदस्यों के साथ आपके समर्थन के लिए आभारी है। भले ही हमें सिर्फ तीन साल हुए है, फिर भी हर साल हम दीर्घकालिक परियोजनाएं करते है।

बी सनथ राय
रोटरी क्लब पुत्तूर सेंट्रल
मंडल 3181

रोटरी डेज़ ऑफ़ सर्विस पर रो ई अध्यक्ष मेहता के विचार हमारी परियोजनाओं को प्रदर्शित करने का एक बेहतरीन जनसम्पर्क अभ्यास है।

रो ई निदेशक महेश कोटबागी ने हमें लड़कियों को सशक्त बनाने के लिए कहा है और हमारा क्लब इस साल बिल्कुल ऐसा ही कर रहा है। हमारी परियोजना रेड MHM सत्रों के माध्यम से लड़कियों को सशक्त बना रही है। हमारा इरादा इस साल कम से कम 4,000 लड़कियों के जीवन को प्रभावित करने का है।

पत्रिका में शामिल परियोजनाएं हर महीने विविध होती है।

रोटरी क्लब भरूच की साइक्लोथॉन परियोजना प्रेरणादायक है। जिस तरह से महाब्स संस्थान को विस्तार से कवर किया गया था, वो मुझे बहुत अच्छा लगा। RIPE जेनिफर जोन्स ने अपनी अध्यक्षीय थीम इमेजिन रोटरी प्रस्तुत की है।

विवेक खंडेलवाल
रोटरी क्लब देवनार
मंडल 3141

आपके पत्र

जब हम पार्श्व गायक टी एम सौंदरराजन के बारे में सोचते है, तो हमारा दिमाग गीतकार कन्नदासन, वाली, संगीतकार जोड़ी एम एस विश्वनाथन-राममूर्ति और संगीतकार के वी महादेवन की यादों को भी ताज़ा कर देता है, क्योंकि इन सभी ने तमिल फिल्म जगत में अपनी एक जगह बनाई है।

आपको उनके चित्रों को भी लेख टी एम एस, उम्मीद जगाने वाले गायक में प्रकाशित करना चाहिए था जो बढ़िया तरीके से लिखा गया एक दिलचस्प लेख है।

डॉ सुब्रमण्यम
रोटरी क्लब पुलियांगुडी
मंडल 3212

मैं *रोटरी न्यूज़* का एक नियमित ग्राहक रहा हूँ। मेरे पुस्तकालय में इस अद्भुत मासिक पत्रिका की लगभग सभी प्रतियां मौजूद है।

जनवरी संस्करण विशेष रहा है। रो ई अध्यक्ष मेहता ने अपने लेख *जीवन बदलने के लिए अपने व्यवसाय का उपयोग करें* को अद्भुत ढंग से लिखा है। वर्षों से मैं ऐसी सामग्री के आकर्षक संकलन की तलाश में हूँ।

यह पहली बार है कि हम रोटेरियन भारत में जो महान कार्य कर रहे है, उसका एक पृष्ठ का सारांश हमारे सामने है। इसे छापने के लिए रशीदा को धन्यवाद। पृष्ठ के सबसे अधिक दिखाई देने वाले हिस्से पर बहुत अच्छा कवरेज।

मैंने अपने डेस्क बोर्ड पर इसका स्नैपशॉट चिपका दिया है ताकि सभी इसे पढ़ सकें और गर्वित महसूस कर सकें।

विपन बहल
रोटरी क्लब जयपुर बापू नगर
मंडल 3054

विधान परिषद पर लिखे गए लेख की बढ़िया रिपोर्टिंग की गई है, जनवरी अंक में रोटरी नेतृत्वकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत किए गए परिषद के सभी पहलुओं को शामिल किया गया था। विधान परिषद को वित्तपोषित करने एवं उसमें भाग लेने के लिए रोटेरियन 1 डॉलर का वार्षिक शुल्क अदा करते है।

रोटरी क्लब रासीपुरम ने विधान परिषद सत्र में मंडल सचिवों की भूमिका और जिम्मेदारियों को स्वीकार करने के लिए एक प्रस्ताव पेश किया जिसे 70 प्रतिशत मतों के साथ स्वीकार किया गया। मैं रो ई मंडल से मंडल सचिवों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के लिए पाठ्यक्रम तैयार करने का अनुरोध करता हूँ ताकि उन्हें उचित रूप से प्रशिक्षित किया जा सके।

रामास्वामी एन पी
रोटरी क्लब रासीपुरम
मंडल 2982

रो ई अध्यक्ष मेहता ने रोटेरियनों से जीवन बदलने के लिए अपने व्यवसाय का उपयोग करने का आग्रह किया और यह भी कहा कि हमें हर महीने गरीब लोगों की आजीविका में सुधार लाने के लिए कुछ मूल्यवान कार्य करना चाहिए।

संपादक रशीदा भगत और उनकी टीम को कोविड महामारी के चरम समय में एक बार भी चूके बिना समय पर इस पत्रिका को प्रकाशित करने हेतु बधाई।

एस मुनियांडी
रोटरी क्लब डिंडीगुल फोर्ट
मंडल 3000

दुर्गापुर में संजीवनी अस्पताल बनने को तैयार

आपके लेख *संजीवनी शैली से नन्हें दिलों को सुधारना* (अक्टूबर अंक) ने मुझे एक नई रोशनी और प्रेरणा दी है ताकि मैं समुदाय के लिए और अधिक कर सकूँ। अंतिम पैराग्राफ कहता है कि न्यासी पूर्वी यूपी या बंगाल, बिहार और झारखंड में एक शहर की तलाश कर रहे है। मैं उन्हें दुर्गापुर में एक ऐसा केंद्र स्थापित करने का सुझाव देता हूँ क्योंकि यह शहर पूर्वी क्षेत्र में एक शैक्षिक और चिकित्सा केंद्र के रूप में उभर कर सामने आया है। यहाँ के सभी अस्पताल बिहार, झारखंड, उत्तर पूर्व और यूपी के कुछ हिस्सों के मरीजों की सेवा करते है।

मैं संजीवनी अस्पताल की स्थापना में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना चाहूंगा।

हमारे मंडल ने कुछ साल पहले एक वैश्विक अनुदान परियोजना *दिल से दिल तक* के माध्यम से 300 से अधिक जन्मजात हृदय सर्जरियाँ (CHD) पूरी की है।

अमित कुमार शर्मा
रोटरी क्लब दुर्गापुर स्मार्ट सिटी
मंडल 3240

We welcome your feedback. Write to the Editor:
rotarynews@rosaonline.org;
rushbhagat@gmail.com.
Mail your project details,along with hi-res photos, to
rotarynewsmagazine@gmail.com.

Messages on your club/district projects, information and links on zoom meetings/webinar should be sent only by e-mail to the Editor at
rushbhagat@gmail.com or
rotarynewsmagazine@gmail.com.
WHATSAPP MESSAGES WILL NOT BE ENTERTAINED.

Click on **Rotary News Plus** on our website
www.rotarynewsonline.org
to read about more Rotary projects.

SERVE TO CHANGE LIVES

लड़कियों को सथक्त बनाने के नए तरीके खोजें

रोटरी के प्यारे परिवर्तनकारियों को मेरा नमस्कार,

हमने पिछले दो वर्षों में अनेक चुनौतियों को पार करते हुए लोगों की जिंदगियाँ बदली है। यह मेरे लिए बहुत खुशी की बात है कि हमने इस साल रोटरी को *हर एक, लाए एक* पहल के माध्यम से विकसित करने के लिए कड़ी मेहनत की है। इसके परिणामस्वरूप सदस्यता में बढ़िया वृद्धि देखने को मिली। चलिए इस गति को बनाए रखें।

11 मार्च 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने घोषणा की कि कोविड-19 एक महामारी है। दो साल बाद, जो बात महत्वपूर्ण है वह यह है कि हमनें दुनिया भर के लोगों को निरंतर चुनौतियों से निपटने में मदद करने के लिए बीमारी की रोकथाम और उसके उपचार में अपनी विशेषज्ञता का इस्तेमाल करना जारी रखा है। यह महामारी सारी उम्मीदों पर पानी फेरती जा रही है, लेकिन हम डर के मारे रुक नहीं सकते। हमारा काम बहुत महत्वपूर्ण है। यह भी महत्वपूर्ण है कि हम एक-दूसरे के लिए समय निकाले, और मैं आपसे ह्यूस्टन में आयोजित होने वाले 2022 रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन हेतु पंजीकरण करने का आग्रह करता हूँ।

हम सबसे अधिक कमजोर लोगों की मदद करने हेतु अपने संसाधनों का उपयोग करके उम्मीदें जगाना और शांति का प्रसार करना जारी रख सकते है। इस महामारी का लड़कियों पर विशेष रूप से विनाशकारी प्रभाव पड़ा; अपनी पहली वर्षगांठ पर यूनिसेफ के कार्यकारी निदेशक हेनरीटा फोरे ने कहा कि लड़कियों और उनके परिवारों को पहुँचने वाली क्षति को कम करने के लिए तत्काल कार्यवाही की आवश्यकता है। यह जरूरत एक साल बाद भी उतनी ही मजबूत है। इस महामारी ने अनोखे तरीकों से लड़कियों को प्रभावित किया है - उनकी शैक्षिक योग्यता को प्रभावित करके, उनकी नौकरी की संभावनाओं को कमजोर करके और बाल विवाह एवं मानव तस्करी जैसे अन्य भयानक परिणामों में योगदान देकर।

यूनिसेफ के डेटा से पता चलता है कि हमारी कार्यवाही इतनी जरूरी क्यों है। 2010 के दशक में बाल विवाह की प्रथा को समाप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई और यूनिसेफ का अनुमान है कि दुनिया भर में ऐसे 25 मिलियन विवाह रोके गए थे। दुर्भाग्य से इस महामारी ने उन सकारात्मक अभ्यासों को उलट दिया और इसके परिणामस्वरूप इस दशक के अंत तक 10 मिलियन अतिरिक्त लड़कियां बाल वधू बनने की चपेट में है।

यही कारण है कि लड़कियों को सशक्त बनाने पर हमारा इतना ध्यान है और मुझे खुशी है कि अध्यक्ष निर्वाचित जेनिफर जोन्स इस पहल को जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध है। अपनी यात्रा के दौरान मैंने क्लब परियोजनाओं के कई अद्भुत उदाहरण देखे जो हमारे महिला सशक्तिकरण लक्ष्यों का समर्थन करते है। लेकिन सभी रोटरी सदस्य यह जानते है कि वास्तविक परिवर्तन के लिए अनेक वर्षों तक निरंतर बड़े प्रयासों की आवश्यकता होती है। यह हमारे वैश्विक अनुदानों और हमारे ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में किए जाने वाले कार्य की ताकत है।

मैं क्लबों को उनकी अनुदान परियोजनाओं की रूपरेखा तैयार करते समय लड़कियों को सशक्त बनाने हेतु नवीन तरीकों के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। लड़कियों की शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और आर्थिक अवसरों में सुधार लाने के लिए हम जो भी कदम उठाते है वो उनकी पूरी क्षमता हासिल करने में उनकी मदद करने हेतु एक महत्वपूर्ण बदलाव लाता है। अवसर के साथ हम उम्मीद जगाते है और आशा के साथ हम दुनिया भर में संघर्ष के मूल कारणों को संबोधित करते हुए स्थायी शांति स्थापित करने की स्थिति तैयार करते है।

हम में से कोई नहीं जानता कि कोविड-19 का यह वायरस कब तक रहेगा - और पोलियो को मिटाने के लिए दशकों तक अथक प्रयास करने वाले एक संगठन के रूप में हम भविष्य में आने वाली कठिनाइयों को बेहतर समझते है। इसलिए हमें यह आवश्यकता है कि हम जो संभव है उस पर ध्यान केंद्रित करें - अपने गुजरे जीवन के बारे में सोचकर उदास हुए बिना भविष्य की उन संभावनाओं पर ध्यान केंद्रित करें जो इस अवसर का उपयोग *जीवन परिवर्तक सेवा* हेतु करती है। मैं आपके साथ इस अच्छे काम को जारी रखने को लेकर उत्सुक हूँ।

Shekhar Mehta

शेखर मेहता

अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

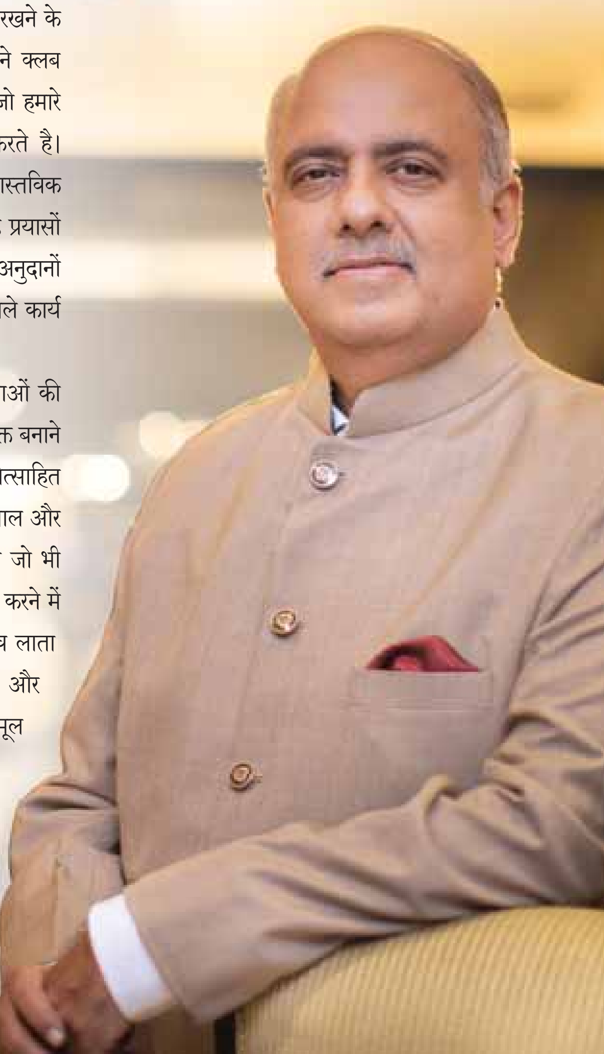

संपादक
का संदेश

एक महान क्षति...

जैसे ही भारतवासियों द्वारा सुनी जाने वाली भारत की सर्वाधिक मधुर आवाज़ ख़ामोश हुई सम्पूर्ण राष्ट्र स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर के निधन पर शोक में डूब गया। ये खबर लगभग हम सभी को अपने मनपसंद संगीत की यादों में ले गई... जो शायद सबसे अधिक हमारे फोन की ऐप्स पर सहेजी हुई हैं, एक बार फिर उस जादुई, मंत्रमुग्ध कर देने वाली सुरीली आवाज़ को सुनने के लिए। जैसा कि एसआर मधु अपनी श्रद्धांजलि में कहते हैं, यह वो आवाज थी जो राष्ट्रीय राजमार्गों के लम्बे सफर पर अकेलेपन से घिरे ट्रक चालकों की हमसफ़र बनी, जिसे सुनते हुए दिल्ली या कहीं और नुक्कड़ पर बैठा दुकानदार अपना माल बेचता है, और अपने परिवार से दूर बैठे सेना के जवान इसे सुनते हुए हमारे राष्ट्र की सीमा की निगरानी करते हैं। बिना किसी अतिशयोक्ति के इस सूची में हम ऐसे एक हज़ार समूह और उप-समूह और जोड़ सकते हैं।

सभी इंसानों की तरह, यहां तक कि सबसे असाधारण और अति विशिष्ट भी, लता में भी खामियां थीं, लेकिन तसल्ली, आराम, दिलासा, जोश और असीम शांति प्रदान करने वाली उनकी धुनों के सामने तोला जाये तो वो नगण्य हैं। निश्चित रूप से आने वाली कई पीढ़ियों के लिए कोई और लता नहीं होगी, और जो खालीपन वो छोड़ गई है वो बहुत गहरा है। भारत की दो - तीन पीढ़ियां जो उनकी धुनों के साथ पली-बढ़ीं हैं, रात को लता के गीत उनकी माताओं की आवाज़ में सुनते हुए सोने से लेकर, लता के एकल या युगल गीत के ज़रिये अपने प्रेमी को लुभाने से लेकर खोए हुए प्रेम के विरह में आहें भरने तक और जीवन के अन्य कई मार्मिक क्षणों में, उनका महाप्रयाण एक भारी, बहुत भारी क्षति है। एकमात्र तसल्ली ये है कि उन्होंने सम्पूर्ण जीवन संतोषप्रद तरीके से जिया जिसे उनके लाखों प्रशंसकों के प्यार और प्रशंसा ने और समृद्ध कर दिया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से लेकर शाहरुख खान तक कई नामचीन, प्रतिष्ठित हस्तियां और उनके प्रशंसक व्यक्तिगत रूप से, कोविड महामारी में, उन्हें अंतिम श्रद्धांजलि देने पहुंचे थे।

शुक्र है, कम से कम अभी तो यही लगता है कि कोविड महामारी का प्रभाव कम हो रहा है, सीमाएं खोली जा रही हैं और यात्राएं बढ़ रही हैं। लेकिन मरने वालों की संख्या - लता भी कोविड-संबंधी जटिलताओं की शिकार हुई थी - और तबाही के जो निशाँ ये वायरस अपने पीछे छोड़ जाएगा, वो अभूतपूर्व है। इस महामारी ने जो आर्थिक तबाही मचाई है, साधन संपन्न लोग उसका अंदाजा भी नहीं लगा सकते हम जैसे। रहने के लिए एक आरामदायक घर, भोजन और खाद्य सामग्री प्राप्त करने के साधन, महामारी के सर्वाधिक प्रकोप के समय भी और हमारे बच्चों की पढ़ाई ना छूट जाये यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त ऑनलाइन उपकरण, हमारे पास सदैव उपलब्ध थे। इसमें नेटफ्लिक्स और प्राइम वीडियो और जोड़ दें और हम अपने तरीके से उन चुनौतियों का समाधान ढूंढ निकालने में सफल रहे, इसके लिए कोरोना वायरस को धन्यवाद है।

निया भर में रोटरी और रोटेरियनों द्वारा महामारी से त्रस्त लोगों की मदद के लिए दी गई सेवाओं को वो लोग वो कृतज्ञतापूर्वक याद करेंगे, जिनके आपने आँसू पोंछे, जिनके बच्चों को आपने भोजन खिलाया और आजीविका प्राप्त करने में जिनकी मदद की। जिस तरह से आपने अद्भुत सामुदायिक सेवा परियोजनाओं द्वारा इस महामारी से तबाह हुए हजारों लोगों की मदद की है उससे ये बार-बार साबित हुआ है, ''सेवा रोटरी का व्यवसाय है।'' मेरा यकीन कीजिये, इन लोगों की मदद करते हुए आपने तसल्ली के जिन शब्दों से आपने ढाढस बंधाया है, उन के लिए वो शब्द लता के एक सुमधुर गीत से जरा भी कमतर नहीं हैं, जिनकी ज़िन्दगी को आपने छुआ और बदल दिया, कितना भी कम सही।

रोटेरियनों, आप वाकई सलाम के हक़दार हैं, जो सेवा आपने की उसके लिए और जो करते रहेंगे।

रशीदा भगत

Governors Council

RID 2981 S Balaji
RID 2982 K Sundharalingam
RID 3000 R Jeyakkan
RID 3011 Anup Mittal
RID 3012 Ashok Aggarwal
RID 3020 Rama Rao M
RID 3030 Ramesh Vishwanath Meher
RID 3040 Col Mahendra Mishra
RID 3053 Sanjay Malviya
RID 3054 Ashok K Mangal
RID 3060 Santosh Pradhan
RID 3070 Dr Upinder Singh Ghai
RID 3080 Ajay Madan
RID 3090 Parveen Jindal
RID 3100 Rajiv Singhal
RID 3110 Mukesh Singhal
RID 3120 Samar Raj Garg
RID 3131 Pankaj Arun Shah
RID 3132 Dr Omprakash B Motipawale
RID 3141 Rajendra Agarwal
RID 3142 Dr Mayuresh Warke
RID 3150 K Prabhakar
RID 3160 Thirupathi Naidu V
RID 3170 Gaurishkumar Manohar Dhond
RID 3181 A R Ravindra Bhat
RID 3182 Ramachandra Murthy M G
RID 3190 Fazal Mahmood
RID 3201 Rajasekhar Srinivasan
RID 3203 Shanmugasundaram K
RID 3204 Dr Rajesh Subash
RID 3211 Srinivasan K
RID 3212 Jacintha Dharma
RID 3231 Nirmal Raghavan W M
RID 3232 Sridhar J
RID 3240 Dr Mohan Shyam Konwar
RID 3250 Pratim Banerjee
RID 3261 Sunil Phatak
RID 3262 Santanu Kumar Pani
RID 3291 Prabir Chatterjee

Printed by PT Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd, 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014, India, and published by PT Prabhakar on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions — original content — is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced with permission and attributed to RNT.

रोटरी में डिजिटलाइज़ेशन

कुछ समय पहले की बात नहीं है जबकि रोटेरियन ने वस्तुतः मिलने के बारे में कभी सपने में भी नहीं सोचा था। रोटरी दुनिया भर के लोगों को जोड़ने वाली संस्था है। महामारी के बाद के जीवन ने हमें डिजिटल तकनीक के अनुकूल बनाया और हमने वस्तुतः बंधन का एक नया तरीका खोजा। चाहे कोई अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन हो या सभा, या अन्य कांफ्रेंस, हमने अपने फोन या लैपटॉप का उपयोग करके इनमें वस्तुतः भाग लेना सीख लिया है। इस महामारी ने रोटरी में डिजिटल क्रांति लाने में मदद की है।

भारत में एक और बड़ा बदलाव ऐप और वेबसाइट द्वारा लाया गया - *www.rotaryindia.org* इस उपकरण ने क्लब के कार्य करने के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया; इसने मैनुअल प्रक्रिया का आधुनिकीकरण किया जिसका पहले क्लबों ने पालन किया तथा क्लब और जिला-नेताओं के जीवन को आसान और सरल बना दिया। ई-गवर्नेंस, सार्वजनिक छवि और संचार तीन प्रमुख क्षेत्र हैं जिनसे इस उपकरण ने आधुनिकीकरण में मदद की है।

भारत में रोटेरियन और क्लब रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट द्वारा लाए गए इस खूबसूरत मोबाइल ऐप, 'रोटरी इंडिया' से जुड़े हुए हैं, और रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता के लिए एक सपना सच हो गया है, जो लंबे समय से हम सभी में इस बदलाव को शामिल करना चाहते थे।

www.rotaryindia.org भारत के सभी क्लबों के लिए एक मूल वेबसाइट, उपमहाद्वीप में क्लबों द्वारा की गई सभी परियोजनाओं की लाइव जानकारी है। यह वेबसाइट देश भर में रोटरी क्लबों द्वारा विभिन्न फोकस क्षेत्रों में, बाकी दुनिया के लिए किए गए सुंदर काम को प्रदर्शित करती है! यह कॉरपोरेट्स को उनके सीएसआर फंड के लिए सही क्लब और प्रोजेक्ट खोजने में भी मदद करता है। प्रत्येक रोटरी क्लब समुदाय को लाभ पहुंचाने के लिए अद्भुत परियोजनाएं संचालित करता है, लेकिन सार्वजनिक छवि पर ध्यान की कमी और अपर्याप्त तकनीकी सहायता और अज्ञानता के कारण, बाहरी दुनिया को कभी भी हमारे द्वारा की जाने वाली सेवा की शक्ति का पता नहीं चला। 'रोटरी इंडिया ऐप' ने इसमें पूरी तरह-से क्रांति ला दिया। इसकी प्रमुख विशेषताओं के साथ इसने हमारी गतिविधियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद की है।

इस डिजिटलाइज़ेशन ने क्लबों और मंडलों को सदस्यों के साथ अधिक प्रभावी ढंग से संवाद करने में मदद की है और विभिन्न परियोजनाओं और बैठकों के लिए अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित की है, और यह सुनिश्चित किया है कि सदस्यों को आगामी क्लब कार्यक्रमों के बारे में सूचित किया जाए। यह प्रत्येक सदस्य के जन्मदिन या वर्षगांठ पर आटोमेटिक-रिमाइंडर भी भेजता है। डिजिटल OCV/GOV जैसी सुविधाओं ने क्लब-नेताओं के रातों की नींद हराम होने से बचा दी है, जिन्हें गवर्नर के आधिकारिक यात्रा की तैयारी करनी होती है। गवर्नर के मासिक पत्र (जीएमएल) और क्लबों द्वारा डिजिटल न्यूज़लेटर्स तथा *रोटरी समाचार* पत्रिका आज केवल एक बटन के क्लिक पर हर रोटेरियन तक पहुंचती है। यहां तक कि किसी क्लब या मंडल की 'डिजिटल निर्देशिका' भी सदस्यों से जुड़ने के लिए वास्तव में बड़ी आसान है।

डिजिटल टूल्स के लागू होने से क्लब और जिले पेपरलेस होते जा रहे हैं। ऑडियो-वीडियो डिजिटल जिला सम्मेलन और आभासी वास्तविकता का प्रदर्शन हमें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के समकक्ष लेकर आएगा। भारत में रोटरी के डिजिटलीकरण से न केवल सदस्यों को बल्कि पर्यावरण को भी मदद मिली है!

महेश कोटबागी
रो ई निदेशक, 2021-23

का संदेश

टेक-संचालित मिश्रित क्लब आगे बढ़ेंगे

हमारे क्षेत्र के कई क्लब और मंडल सामान्य स्थिति में वापस आ रहे है। यह देखकर खुशी होती है कि उत्साह और उत्सुकता कम नहीं हुई है। हालांकि आगे बढ़ना और पिछले दो वर्षों की घटनाओं पर विचार नहीं करना अच्छा है, लेकिन सीखे गए सबकों को याद रखना और सकारात्मकता को बरकरार रखना भी आवश्यक है। हो सकता है कि कुछ बदलाव हम पर थोपे गए हो, किन्तु जिस गति से हर स्तर पर तकनीक को अपनाया गया वह आश्चर्यजनक था। एक बदलाव जिसे आने में आमतौर पर पांच साल लगते थे, उसे दो वर्षों में आते देखा गया है।

क्लबों ने इन आभासी बैठकों में अधिक उपस्थिति देखी क्योंकि यह उन सदस्यों के लिए अधिक सुविधाजनक था जिनके लिए बैठक हेतु यात्रा करना मुश्किल होता था। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे है, क्लब अपनी कुछ या सभी बैठकों को मिश्रित प्रारूप में आयोजित कर सकते है। इस तरह हम अधिकांश सदस्यों को क्लब की गतिविधियों में व्यस्त रखने में सक्षम होंगे, भले ही वे शारीरिक रूप से भाग लेने में असमर्थ हो।

तकनीक ने क्लबों को अपनी नियमित बैठकों के लिए मशहूर वक्ताओं को शामिल करने की अनुमति दी, जिनमें से कई विदेशों से थे। इससे सदस्यों के व्यस्तता स्तर में बढ़ोत्तरी देखी गई। हमें इस अभ्यास को बंद नहीं करना चाहिए। आइए हम भविष्य में ऐसी बैठकों के लिए तकनीक का उपयोग करना जारी रखें, भले ही वर्तमान परिदृश्य की तरह ही इसकी आवश्यकता हो या न हो।

महामारी के दौरान, दुनिया भर में फैले कई क्लबों की कई संयुक्त बैठकों का आयोजन किया गया। तकनीक ने हमें वह विलासिता प्रदान की। इसने राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सीमाओं से परे मेल-जोल और मैत्री को भी सक्षम बनाया। इस मेल-जोल के कारण कई सेवा परियोजनाओं को भी अंतिम रूप दिया गया। आइए हम आने वाले दिनों में भी इस मेल-जोल का विस्तार करना जारी रखें। संभवतः क्लब हर तिमाही में एक अंतरराष्ट्रीय बैठक के बारे में सोच सकते है और वास्तव में हमारे संगठन की अंतर्राष्ट्रीयता को महसूस कर सकते है।

महामारी के संकट ने हमारे अधिकांश क्लबों को अपनी कमर कसने और हमारे शुल्क-भुगतान करने वाले सदस्यों को लाभ पहुंचाने के लिए अपने खर्चों को कम करने के लिए विवश किया। मैंने पिछले दो वर्षों में कई क्लबों को सदस्यता शुल्क कम करते देखा है। जहां व्यक्तिगत रूप से मिलने, उसकी परिचारक लागत के बावजूद भी, के अपने फायदे है और इसे नजरंदाज नहीं किया जाना चाहिए, फिजूलखर्ची का मूल्यांकन करना विवेकपूर्ण साबित हो सकता है। महामारी ने हमें ऐसा करने का अवसर दिया और हमें इसे बर्बाद नहीं करना चाहिए।

आइए हम सीखे गए सबकों का लाभ उठाएं और हमारे सभी सदस्यों के लिए एक सार्थक, उद्देश्यपूर्ण और योग्य सदस्यता अनुभव सुनिश्चित करने के लिए हमारे क्लबों के काम करने के तरीके में उचित बदलाव करें। इसके बाद ही हम कह सकते है कि महामारी भी किसी काम में आई है। जैसा कि कहा जाता है 'कठिन समय नहीं टिकता, कठिन लोग टिकते है।'

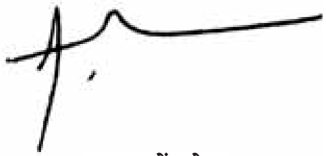

ए एस वेंकटेश
रो ई निदेशक, 2021-23

Board of Trustees

Shekhar Mehta — RID 3291
RI President

Dr Mahesh Kotbagi — RID 3131
RI Director &
Chairman, Rotary News Trust

A S Venkatesh — RID 3232
RI Director

Gulam A Vahanvaty — RID 3141
TRF Trustee

Rajendra K Saboo — RID 3080
Kalyan Banerjee — RID 3060
Panduranga Setty — RID 3190
Ashok Mahajan — RID 3141
P T Prabhakar — RID 3232
Dr Manoj D Desai — RID 3060
C Basker — RID 3000
Dr Bharat Pandya — RID 3141
Kamal Sanghvi — RID 3250

Executive Committee Members (2021–22)

Gaurish Dhond — RID 3170
Chairman
Governors Council

Anup Mittal — RID 3011
Secretary
Governors Council

Ramesh Meher — RID 3030
Secretary
Executive Committee

V Thirupathi Naidu — RID 3160
Treasurer
Executive Committee

Jacintha Dharma — RID 3212
Member
Advisory Committee

Editor
Rasheeda Bhagat

Deputy Editor
Jaishree Padmanabhan

Administration and Advertisement Manager
Vishwanathan K

Rotary News Trust
3rd Floor, Dugar Towers,
34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600 008, India.
Phone: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

Now share articles from
rotarynewsonline.org
on WhatsApp.

चलिए दुनिया भर में स्वच्छ जल उपलब्ध कराएं

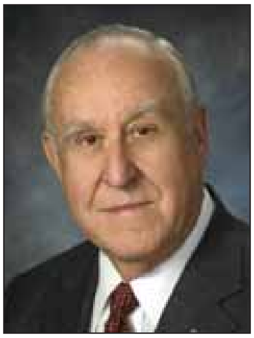

अभी, 21वीं सदी में हम में से कई लोग पानी का मूल्य नही समझते क्योंकि हम भाग्यशाली रहे है कि हम ऐसी जगहों पर रहते है जहाँ स्वच्छ जल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। लेकिन दुनिया भर के अन्य लाखों लोगों के साथ ऐसा नहीं है। संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है कि 2 बिलियन लोगों - धरती पर 4 में से 1 व्यक्ति - के पास सुरक्षित रूप से प्रबंधित पेयजल की कमी है। दुनिया की आधी से भी कम आबादी के पास सुरक्षित रूप से प्रबंधित शौचालयों और स्वच्छता प्रणालियों तक पहुंच की कमी है और लगभग एक तिहाई आबादी के पास साबुन और साफ जल के साथ हाथों की धुलाई की बुनियादी व्यवस्था नहीं है।

क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है कि तत्काल सूचना और अंतरिक्ष पर्यटन के युग में हम अभी भी इतने अधिक लोगों को जल, स्वच्छता और साफ-सफाई (WASH) की आवश्यकताओं की गारंटी नहीं दे पाए है?

रोटरी इसके लिए कुछ कर रही है; WASH परियोजनाएं हमारे ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में सबसे अधिक वित्त पोषित है: 2014 के बाद से रोटरी क्लबों ने संस्थान वित्तपोषण की मदद से 154 मिलियन डॉलर का उपयोग करके WASH से संबंधित 2,100 से अधिक वैश्विक अनुदान परियोजनाएं की है जिससे अनगिनत लोग प्रभावित हुए है।

इसके अलावा, USAID के साथ रोटरी के WASH का गठबंधन एक दशक से भी अधिक मजबूत है जिसे पोलियोप्लस के बाहर रोटरी की सबसे बड़ी साझेदारी माना जाता है। रोटरी और USAID ने घाना और युगांडा जैसे देशों में राष्ट्रीय स्तर पर बड़े पैमाने के रणनीतिक प्रयासों के लिए WASH वित्तपोषण हेतु संयुक्त रूप से 18 मिलियन डॉलर की प्रतिबद्धता जताई है। यह साझेदारी सैकड़ों समुदायों में व्यावहारिक, टिकाऊ WASH समाधान खोजने के लिए स्थानीय नेतृत्व और रोटरी सदस्यों की वकालत के साथ USAID के विकास पेशेवरों की तकनीकी विशेषज्ञता को एक साथ लाती है। आप *riusaidwash.rotary.org* पर और अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते है।

22 मार्च को मनने वाले विश्व जल दिवस की थीम है भूजल: अदृश्य को दृश्यमान बनाना। यह क्लबों के लिए WASH मुद्दों के बारे में अधिक जानने और सार्वभौमिक WASH सेवाओं तक पहुंचने की गति को तेज करने और उसे बनाए रखने के लिए सामूहिक रूप से कार्यवाही करने का एक उपयुक्त समय है। रोटरी सदस्य वैश्विक स्तर पर सेवा देने वालों की कहानियों, अनुभवों और WASH जरूरतों को साझा करके WASH चुनौतियों की ओर ध्यान आकर्षित कर सकते है जो हमें स्थानीय रूप से प्रभावित करती है।

रोटरी के पास दुनिया भर के लाखों जरूरतमंद लोगों के लिए WASH सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए संसाधन, साझेदारी और जुनून है। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे पास ऐसे लोग है जो इस पर काम कर सकते है - आप और मैं।

जॉन एफ जर्म

ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

क्षेत्र यात्राएं

जॉन एम कनिंघम

हालांकि इसके स्काईलाइन पर ग्लास और स्टील का प्रभुत्व है, फ़िर भी ह्यूस्टन ने कुछ 40,000 एकड़ में 500 से अधिक पार्क और हरित-क्षेत्र को बनाए रखा है। जब आप 'रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन 4-8 जून' में भाग लेने जा रहे हैं, तो आउटडोर मनोरंजन के लिए शहर के विकल्पों का लाभ उठाने पर विचार करें। यदि आप अपने शरीर को आकार में रखने के बारे में सोच रहे हैं - या बस कुछ ताजी हवा का आनंद लेने के मूड में हैं - तो यहाँ अवसरों की भरमार है।

शहर के पश्चिम में लगभग 4 मील की दूरी पर, 'मेमोरियल पार्क' ह्यूस्टन का सबसे बड़ा पार्क है; यह न्यूयॉर्क शहर के सेंट्रल पार्क के आकार का लगभग दोगुना है। प्रथम विश्व युद्ध के प्रशिक्षण शिविर की साइट पर निर्मित, इसमें 30 मील से अधिक दौड़ने और चलने के रास्ते, एक विश्व स्तरीय गोल्फ कोर्स और अन्य खेल सुविधाएं शामिल हैं। यह पार्क, ह्यूस्टन की वनस्पतियों और प्राकृतिक सुन्दरता का भी घर है, जहां आप देशी-पौधों और जानवरों को स्व-निर्देशित और स्व-विकसित निवास स्थानों पर देख सकते हैं।

कन्वेंशन सेंटर के करीब 'बफ़ेलो बेउ पार्क' है, जिसका नाम घुमावदार जलमार्ग पर रखा गया है। खाड़ी में पैडल मारने के लिए एक कश्ती या डोंगी किराए पर लें। या एलन लैंडिंग जैसे स्थलों के बीच ज़िप करने के लिए एक बाइक किराए पर लें, जो ह्यूस्टन की स्थापना और वॉ ब्रिज के नीचे चमगादड़ कॉलोनी की याद दिलाता है। बगीचों, पिकनिक मंडपों और एक बहुस्तरीय प्रकृति खेल क्षेत्र के साथ, यह विशाल पार्क परिवारों के लिए एकदम सही है।

यदि आप इसके बजाय पेशेवरों को पसीना बहाते हुए देखना चाहते हैं, तो आप भाग्यशाली हैं: मेजबान संगठन समिति ने 3 जून को ह्यूस्टन डायनमो (सॉकर) और ह्यूस्टन सेबरकैट्स (रग्बी) मैचों की योजना बनाई है। आप यहाँ से टिकट खरीदें - **houstonri2022.org/events**.

और अधिक जानने तथा पंजीकरण करने के लिए यहाँ जाएँ

convention.rotary.org

ADVT

INSIGHT VACATIONS

Travel Again
TRAVEL IN STYLE

DISCOVER PREMIUM GUIDED TOURS

Ready to plan your next dream vacation?

Now more than ever, a guided tour is the ideal choice. Simply relax and enjoy your vacation as your Travel Director brings the destination to life and new Well-Being Director takes care of all health protocols.

BEST OF BRITAIN

9 Days

Get the Royal Treatment During a 9-Day Guided Tour of England, Scotland & Wales

HIGHLIGHTS OF SPAIN

9 Days

Experience the Art and Architecture of Spain During a 9-Day Guided Tour

WONDERS OF TURKEY

11 Days

Travel from Istanbul to Golden Cappadocia on an 11-Day Guided Tour

AS A ROTARY CLUB MEMBER, SAVE 10%*
ON ALL WORLDWIDE PREMIUM TOURS

To learn more, contact us at +91 9967552744 | harshali.darpel@ttc.com
or visit insightvacations.com

*T&Cs apply.

पाकिस्तान ने एक ऐतिहासिक पड़ाव पार किया- 1 साल वाइल्ड पोलियो केस के बिना

रशीदा भगत

अंततः पोलियो प्रभावित दो राष्ट्रों में से एक से पोलियो-उन्मूलन के मोर्चे पर रोटेरियन के लिए कुछ खुशखबरी है। जनवरी 2021 में, पाकिस्तान में पूरे एक साल से - 365 दिनों में - जंगली पोलियो वायरस का एक भी मामला सामने नहीं आया है। तीन दशक से भी अधिक समय से पोलियो से छुटकारा पाने के भागीरथ कार्य के लिए संघर्ष कर रहे दुनिया भर के रोटेरियनों के लिए ओ ईसके क्या मायने हैं, ये उस बधाई सन्देश में उल्लिखित है जो टीआरएफ ट्रस्टी और पाकिस्तान नेशनल पोलियोप्लस कमेटी के अध्यक्ष अज़ीज़ मेमन को रो ई मुख्यालय से प्राप्त हुआ है।

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता और टीआरएफ ट्रस्टी अध्यक्ष जॉन जर्म द्वारा संयुक्त रूप से हस्ताक्षरित और पाकिस्तान के रोटेरियनों को संबोधित इस सन्देश में उन्हें अपने देश को ''इस ऐतिहासिक पड़ाव पर पहुंचने के लिए बधाई दी गई है। दशकों से चली आ रही हमारी पोलियो उन्मूलन की लड़ाई में ऐसा पहली बार हुआ है, जब पाकिस्तान से, पिछले एक साल से पोलियो वायरस से बच्चे के लकवाग्रस्त होने की एक भी रिपोर्ट नहीं आई है। शेष बचे दो जंगली पोलियो-स्थानिक देशों में से एक, पाकिस्तान का यह पड़ाव सार्थक प्रगति का द्योतक है और ये प्रमाणित करता है कि हमारी

जापान के एक रोटेरियन कराची में एक एनआईडी में भाग लेते हुए।

लाहौर के बादामी बाग पीटीपी में रोटरी इंटरनेशनल पोलियोपस कमेटी के अध्यक्ष माइकल मैकगवर्न (बीच में)। चित्र में उनके दाहिनी ओर टीआरएफ ट्रस्टी और पाकिस्तान पोलियोप्लस कमेटी के अध्यक्ष अज़ीज़ मेमन भी शामिल हैं।

दुनिया को पोलियो मुक्त करना संभव है और ये हमारी पहुँच में है।''

पर्यावरण में जंगली पोलियोवायरस के विद्यमान रहने तक इस के खतरों के प्रति सावधान रहने के लिए आगाह करते हुए, सन्देश में ''पोलियो उन्मूलन के बारे में जागरूकता फैलाने, सरकारी महकमों में इसकी वकालत करने, धार्मिक और सामुदायिक नेताओं को शामिल करने, दान करने और हमारी अनुदान निधि के माध्यम से अनुदान संचय और हजारों स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का सहयोग करने, आदि के लिए उनकी प्रशंसा की है। सन्देश में वर्णित है कि पाकिस्तान में अभी तक पोलियो उन्मूलन गतिविधियों में हमने लगभग 364 मिलियन डॉलर का सहयोग किया है।''

मेमन ने पूर्व रो ई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी की प्रेरणा, रुचि और सहायता का उल्लेख किया, जिन्होंने बधाई देने के लिए फोन किया था, ''और जो सहायता, सहयोग और मार्गदर्शन करते हुए पृष्ठभूमि में हमेशा सक्रीय रहे, और रो ई अध्यक्ष

जमाली गोथ स्वास्थ्य शिविर में सिंध जोनल पोलियो समन्वयक मसूद भाली (दाएं)।

पाकिस्तान नेशनल पोलियोप्लस कमेटी के अध्यक्ष मेमन कराची में घर-घर जाकर टीकाकरण अभियान के दौरान एक बच्चे को पोलियो की दवा पिलाते हुए।

रहते हुए उनके अपने कार्यकाल में, जब भारत ने पोलियो का कोई भी मामला नहीं होने का एक वर्ष पूर्ण किया था, उस वक़्त उन्होंने मुझसे कहा था कि इस उपलब्धि को हासिल करने वाला अगला देश पाकिस्तान होना चाहिए।'' मेमन के राष्ट्रीय अध्यक्ष का पदभार संभालने से पहले पाकिस्तान के प्रथम पोलियोप्लस अध्यक्ष रहे पीडीजी कासिम दादा (1980-88) और पीडीजी अबुल हइ खान (1988-2009) की कड़ी मेहनत, लगन और समर्पण की भी उन्होंने प्रशंसा की।

लेकिन पाकिस्तान के रोटरी नेता अभी जश्न मनाने से कतरा रहे हैं; ''दुनिया भर के रोटेरियन, रोटारैक्टर्स, हमारे पार्टनर्स और अन्य लोगों से... मिल रही बधाई भी स्वीकार नहीं कर रहे ।'' ट्रस्टी मेमन कहते हैं। यद्यपि पोलियो मामले रहित एक वर्ष के रूप में ये महत्वपूर्ण दिन है, पर हम जानते कि हमें बहुत सतर्क रहना होगा और यह अंत नहीं बल्कि शुरुआत है। हम आत्मसंतुष्ट हो कर, चैन की सांस नहीं ले सकते, हमें अपने सहयोगियों और सरकार के साथ अपना काम जारी रखना होगा ताकि इसकी पुनरावृत्ति न हो, जैसा नाइजीरिया में 21 महीनों के बाद हुआ था। इसलिए अभी कोई उत्सव नहीं मनाया जा रहा है क्योंकि इस वायरस का कोई भरोसा नहीं है और यह कभी भी, कहीं भी प्रकट हो सकता है... हमें अत्यंत सतर्क और सावधान रहने की ज़रुरत है।''

सावधानी बरतते हुए इस क्षेत्र से पोलियो सम्बंधित एक खुशखबरी और है। पिछले साल अफ़गानिस्तान में पोलियो के सिर्फ 4 मामले दर्ज हुए हैं, चूँकि पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान सीमा को साझा करते हैं, इस वजह से क्या यह उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती की वजह नहीं रहेगी, मैंने पाकिस्तान पोलियोप्लस की मुख्य नेतृत्व टीम से ज़ूम कॉल पर पूछा था। और, क्या उन्होंने तालिबान के साथ किसी प्रकार की बातचीत की है जो ऐतिहासिक रूप से बच्चों को पोलियो के विरुद्ध प्रतिरक्षित करने का विरोध करता रहे हैं?

इसके जवाब में पंजाब पोलियो जोनल समन्वयक पीडीजी मुहम्मद सईद शम्सी ने कहा, ''दरअसल, इन दिनों हम एक बड़ा बदलाव देख रहे हैं कि अफ़गानिस्तान की नई सरकार (तालिबान) पोलियो कार्यकर्ताओं को घर-घर जाकर पोलियो की दवा पिलाने की इजाज़त दे रही है।''

यह एक सकारात्मक और बड़ा परिवर्तन कैसे है, इसे मेमन ने समझाया, ''और यह करीब चार महीने से चल रहा है। पहले, उस क्षेत्र में, एक हुजरा, या एक सभा स्थल निर्दिष्ट हुआ करता था, जहाँ परिवार के लोग अपने 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को पोलियो की ख़ुराक दिलाने के लिए एकत्रित होते थे। लेकिन अब तालिबान ने इसे घर-घर टीकाकरण में बदल दिया है, जोकि रोटरी

अभियान का निर्णायक क्षण वो दिन था जब उस अभियान के दौरान 1994 में पाकिस्तान की तत्कालीन प्रधान मंत्री बेनजीर भुट्टो ने अपनी बेटी आसिफा को पोलियो की पहली ख़ुराक दी थी। यही वो समय था जब इस कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान और मान्यता मिली थी।

अज़ीज़ मेमन
पाकिस्तान पोलियोप्लस अध्यक्ष

हमेशा से चाहती थी, लेकिन पहले न तो इसकी अनुमति थी और न ही यह संभव था।''

शम्सी बोले, ''आपने बिलकुल सही कहा, हमें बहुत सतर्क रहना होगा क्योंकि हमारी सीमा अफ़गानिस्तान के साथ लगती है। लेकिन पोलियो समाप्ति को ले कर मैं बहुत आशान्वित हूँ, क्योंकि यह बदलाव बहुत मददगार साबित होगा और परिवर्तन लाएगा।'' हुजरे में टीकाकरण करने की तुलना में, घर घर जा कर बच्चों को ड्रॉप्स पिलाने से बच्चे छूट जाने की सम्भावना बहुत कम रहेगी। ''इसलिए मुझे उम्मीद है कि अभी तक अफ़गानिस्तान में हम जितना कर पाए हैं, उससे कहीं बेहतर कर पाएंगे।''

उन्होंने उस वक़्त को याद करने के लिए कहा जब पाकिस्तान में पोलियो टीकाकरण अभियान में शुरू हुआ ही था और पोलियो की मुख्य टीम को घोर निराशा का सामना करना पड़ा था, मेमन कहते हैं: ''आशा और निराशा दोनों के पल आये थे। हमें कई बार लगा था कि हम पोलियो उन्मूलन के बिलकुल करीब है। उदाहरण के लिए, 2018 में हमें पोलियो के मामले एकल अंक में मिले थे और लगने लगा था कि हम मंज़िल तक पहुंच रहे हैं

लिंग अनुपात असमंजस

पाकिस्तान के पोलियोप्लस चेयर और ट्रस्टी अजीज मेमन का साक्षात्कार करते हुए, कि पाकिस्तान में बिना किसी जंगली पोलियो वायरस मामले के हुए एक साल का मील का पत्थर पार किया है, मैं उनसे पूछता हूं कि क्या पोलियो की बूंदों से होने वाली नपुंसकता के झूठे प्रचार के परिणामस्वरूप लड़कों की तुलना में अधिक लड़कियों को टीका लगाया गया। वह जवाब देते हैं: ''यह आपने बड़ा दिलचस्प सवाल उठाया! करीब चार साल पहले, जब पेशावर और केपी के अन्य क्षेत्रों से पोलियो प्रभावित रोगियों के आंकड़े सामने आए, तो हमने देखा कि इसके ज्यादातर शिकार लड़के थे। हम समझने की कोशिश कर रहे थे कि टीकाकरण अभियान में ऐसा गलत क्या हुआ था और फिर हम समझ गए, जब पोलियो की टीमें ड्रॉप्स देने आती थीं, तो माताएँ केवल अपनी बेटियों को ही ड्रॉप दिलवाती थीं और अपने बेटों को यह सोचकर छिपा लेती थीं कि वे नपुंसक हो जाएंगे।''

इसका दुखद परिणाम यह हुआ कि इनमें से कुछ लड़के पोलियो का शिकार हो कर अपंग हो गए। लेकिन बूँदें लेने के बावजूद लोग जब पिता बने तो समाज को समझ आ गया, ये सबूत काफी था और उन्हें यकीन होने लगा कि कि वो प्रचार गलत था।

पंजाब के समन्वयक शम्सी कहते हैं, ''हर अभियान पर जाने से पहले हम आकलन करते हैं कि एक घर में कितने बच्चों को टीका लगाया जाना है। इसलिए जब हमने देखा कि पोलियो वायरस से लड़कियों की अपेक्षा लड़के अधिक संक्रमित हो रहे हैं, तो हम यह समझ गए कि लड़के माता-पिता द्वारा छिपाए गए थे। कई जगह, हम जानते थे कि एक घर में 2, या 3 या 4 बच्चे हैं, और हम उन सभी का टीकाकरण करना चाहते थे। लेकिन अक्सर हम माता-पिता को समझा नहीं पाते थे।''

RID 3272 के डीजी सैफुल्ला एजाज़ एक बच्चे को पोलियो की दवा पिलाते हुए।

और फिर अचानक पेशावर में एक मज़हबी जमात ने हमारे खिलाफ साजिश रच दी।''

उन्होंने अफवाह फैला दी थी कि पोलियो ड्रॉप देने के बाद 50 बच्चों की मौत हो गई; ''जबकि एक की भी मृत्यु नहीं हुई थी। इसलिए हम केवल उग्रवाद से ही नहीं बल्कि धार्मिक अंधविश्वासों से भी जूझ रहे थे... धर्म के नाम पर वो अफवाहें फैला रहे थे। भारत को भी बिहार और यूपी में ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ा था।''

वापस उन्हीं क्षणों की तरफ लौटते हुए, जब रोटरियनों की मदद से पाकिस्तान में पोलियो टीकाकरण अभियान ने गति पकड़ी थी, मेमन, जिन्होंने राष्ट्रीय पोलियोप्लस अध्यक्ष का पदभार 2009 में ग्रहण किया था, बताते हैं कि अपने पोलियो उन्मूलन अभियान का निर्णायक क्षण वो दिन था जब उस अभियान के दौरान 1994 में पाकिस्तान की तत्कालीन प्रधान मंत्री बेनजीर भुट्टो ने अपनी बेटी आसिफा को पोलियो की पहली खुराक

इन दिनों हम एक बड़ा बदलाव देख रहे हैं कि अफगानिस्तान की नई सरकार (तालिबान) पोलियो कार्यकर्ताओं को घर-घर जाकर पोलियो की दवा पिलाने की इजाज़त दे रही है।

दी थी। ''यही वो समय था जब इस कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान और मान्यता मिली थी।''

आंकड़ों के बारे में उन्होंने कहा कि एक समय था जब पाकिस्तान में पोलियो मामलों की संख्या भारत की तुलना में बहुत कम थी। लेकिन इसके बाद पाकिस्तान में तालिबान विद्रोह शुरू हो गया और शरणार्थियों के अफगानिस्तान से पलायन कर पाकिस्तान पहुँचने के साथ और तालिबान के पाकिस्तान में सक्रिय होने के साथ, संख्या बढ़कर 380 पहुँच गई।

मेमन ने बताया कि 2011 में ओसामा बिन लादेन के मारे जाने के बाद, तालिबान खैबर पख्तूनख्वा (केपी) प्रांत में उत्तर और दक्षिण वजीरिस्तान पर कब्जा कर चुके थे, जिस क्षेत्र के समन्वयक अब्दुल रऊफ रोहैला हैं और तालिबान ने पोलियो टीकाकरण पर प्रतिबंध लगा दिया था। ''मैं वहां गया और पोलियो टीकाकरण की अनुमति देने के लिए उनसे बातचीत की लेकिन वो एक ही ज़िद पर अड़े थे कि ड्रोन हमले रुकवा दिए जाएँ। पाकिस्तान के पोलियो उन्मूलन अभियान का वो सबसे खराब दौर था।''

लेकिन बाद में वहां स्थिति बेहतर हो गई क्योंकि उत्तर पूर्व क्षेत्र में सेना ने अपनी उपस्थिति बढ़ा दी थी, खासकर दिसंबर 2014 में पेशावर के एक आर्मी स्कूल पर किए गए हमले के बाद, जिसमें 132 बच्चों की मौत हो गई थी, जिसे तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) से जुड़े छह बंदूकधारियों ने अंजाम दिया था। पाकिस्तानी सेना ने टीटीपी के विरुद्ध एक आक्रामक अभियान चलाया था पर पोलियो टीकाकरण की अनुमति दे दी और पोलियो के मामले कम होने लगे।

रोहैला कहते हैं कि केपी प्रांत हमेशा सबसे अधिक समस्याग्रस्त रहा है; कानून और व्यवस्था वहां एक बड़ा मसला है, हत्याएं अक्सर होती रहती हैं और यह उनके लिए बड़ी चुनौती है। असुरक्षा के हाशिये पर जा कर रोटेरियनों को उग्रवाद और सुरक्षा मुद्दों से उस समय और आज भी निपटना पड़ता है, अभी तीन दिन पहले ही, केपी के करक जिले में पोलियो कार्यकर्ताओं की टीम की सुरक्षा कर रहे एक पुलिसकर्मी की हत्या कर दी गई। पोलियो संबंधित अधिकांश हत्याएं केपी प्रांत में ही हुई हैं।

केपी के दौरे को प्रभावित करने वाली किसी भी भयानक अनुभव के बारे में पूछने पर, मेमन ने जवाब दिया: ''पोलियो उन्मूलन अभियान में हमारे लगभग 200 पोलियो कार्यकर्ता और सुरक्षाकर्मी मारे गए। स्वात, बन्नो और ऐसी ही अन्य जगहों पर जाते समय हम अपने मेहमानों को साथ नहीं आने देते, खासकर विदेशी मेहमान जो हमारे एनआईडी के लिए आते हैं, लेकिन अगर हम खुद भी नहीं जाएंगे तो वहां और कौन जाएगा? इसलिए रोटेरियनों ने बहुत बड़ा जोखिम उठाया है और हमेशा वहां गए हैं और केपी प्रांत में ऐसी कई खतरनाक असुरक्षित जगहों पर जाते रहेंगे।''

2007-08 की एक घटना को याद करते हुए, रोहेला ने बताया कि तालिबान के दौर में, ''हम उत्तरी

प्रमाणीकरण अभी नहीं

ट्रस्टी अज़ीज़ मेमन बताते हैं कि पाकिस्तान में भले साल भर से जंगली पोलियो वायरस का एक भी मामला नहीं मिला हो, लेकिन अभी उसे रो ई से कोई प्रमाण पत्र नहीं मिलेगा, क्योंकि रोटरी में ये प्रमाण पत्र क्षेत्रवार दिया जाता है। ''उदाहरण के लिए, श्रीलंका 18 साल पहले और बांग्लादेश भारत से 12 साल पहले पोलियो मुक्त हो गए थे, लेकिन दोनों देशों को प्रमाणन करने के लिए भारत के पोलियो मुक्त होने का इंतजार करना पड़ा था। हम EMRO (Eastern Mediterranean region) या पूर्वी भूमध्यसागरीय क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं, हमें अफगानिस्तान में शून्य मामले आने तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी और इसके बाद ही EMRO क्षेत्र को पोलियो मुक्त घोषित किया जाएगा। तब तक,'' वे कहते हैं, ''आगामी दिनों में हमें अपना संघर्ष महीनों तक जारी रखना होगा ताकि हमें पोलियो मुक्त क्षेत्र का प्रमाणीकरण मिल सकें।''

लाहौर में एक बच्चे को OPV देते हुए पीडीजी एम सईद शम्सी।

वज़ीरिस्तान गए थे, जबकि सेना ने हमें अनुमति नहीं दी थी और स्थानीय प्रशासन भी बिलकुल राजी नहीं था। लेकिन मना करने के बावजूद भी, जब हम वहां गए ... अज़ीज़ मेमन हमारे साथ थे, ... और वहां स्थानीय भाषा में जब उनसे बात की तो उन लोगों ने कहा कि आज तक यहां कोई भी नहीं आया और यह सब हमें विस्तार से बताया, और हमें टीकाकरण करने की अनुमति मिल गई।''

जैसे जैसे रोटेरियनों पर उनका विश्वास जमने लगा, ''हमारे पास स्वास्थ्य शिविरों के लिए भी अनुरोध आने लगे - एक बार केपी के मुख्यमंत्री ने खुद रोटेरियनों से लगभग आठ साल पहले एक स्वास्थ्य शिविर आयोजित करने का अनुरोध किया था। तालिबान तो वहां मौजूद थे, लेकिन उन्होंने शिविर के आयोजन की अनुमति दे दी थी।''

पोलियो उन्मूलन अभियान में हमारे लगभग 200 पोलियो कार्यकर्ता और सुरक्षाकर्मी मारे गए। स्वात, बन्नो और ऐसी ही अन्य जगहों पर जाते समय हम अपने मेहमानों को साथ नहीं आने देते, खासकर विदेशी मेहमान जो हमारे एनआईडी के लिए आते हैं, लेकिन अगर हम खुद भी नहीं जाएंगे तो वहां और कौन जाएगा?

TRF ट्रस्टी **अज़ीज़ मेमन**

रो ई ने टीकाकरण कार्य के दौरान मारे गए पोलियो कार्यकर्ताओं और सुरक्षा कर्मियों के बच्चों की मदद करने का निर्णय किया, मेमन का कहना है कि जब के आर रवींद्रन रो ई अध्यक्ष थे तो एक छात्रवृत्ति कोष की स्थापना की गई थी जिससे उनकी फीस का भुगतान करने के लिए मदद दी जाती है।

सिंध जोनल पोलियो के समन्वयक अध्यक्ष मसूद भाली कहते हैं कि ''पाकिस्तान के रक्षा बलों और राष्ट्रीय व प्रांतीय दोनों सरकारों ने रोटरी के पोलियो टीकाकरण शिविरों और अभियानों में सदैव सहायता और सहयोग किया है।''

तालिबान और कुछ धार्मिक नेताओं द्वारा पोलियो के टीके की वजह से नपुंसकता उत्पन्न होने के भ्रामक प्रचार अभियान की समस्या का मुकाबला पोलियोप्लस कोर टीम ने किस प्रकार किया, मेमन ने बताया कि उन्होंने एक उलेमा समिति का गठन किया है जो उचित जानकारी देने के लिए पूरे पाकिस्तान में नियमित रूप से कार्यशालाएं आयोजित करती है। ''पाकिस्तान सरकार ने मक्का और मदीना से

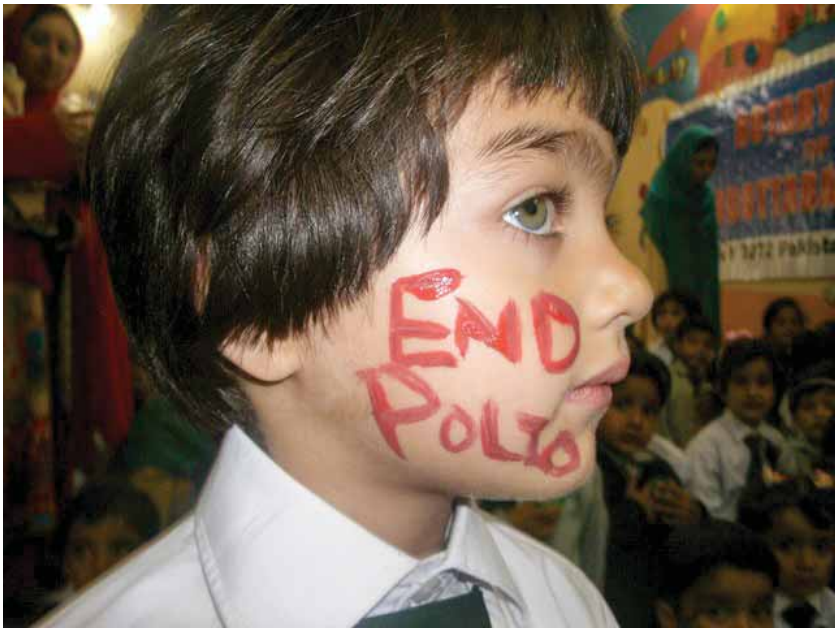

मानसेहरा में एंड पोलियो का प्रचार करता हुआ एक बच्चा।

उलेमाओं को आमंत्रित कर बैठकों और कार्यशालाओं को संबोधित करने में भी हमारी मदद की, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि इन पोलियो की बूंदों को लेने में कोई धार्मिक या चिकित्सा सम्बन्धी परेशानी नहीं है और असल में ये आपके बच्चों को पोलियो जैसी गंभीर बीमारी से बचाती हैं। जो बच्चे ये ड्रॉप्स लेते हैं वे वास्तव में बाप बन सकते हैं और धीरे-धीरे धार्मिक भ्रांति कम होती चली गई।''

पाकिस्तान के रोटेरियनों को विभिन्न प्रकार की भ्रामक जानकारियों से जूझना पड़ा है। जैसा ट्रस्टी मेमन बताते हैं, ओसामा बिन लादेन के मारे जाने के बाद, उत्तर और दक्षिण वज़ीरिस्तान दोनों में ओपीवी (ओरल पोलियो वैक्सीन) पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। ''मुख्य कारणों में से एक यह भी था कि जब टीका लगाने वाले आते हैं, तो वे जासूसी करते हैं और सीआईए को जानकारी देते हैं कि तालिबान या अन्य विद्रोही कहाँ छिपे हैं, ताकि वे ड्रोन हमले कर सकें। इसलिए वे टीके लगाने वालों को अनुमति नहीं दे रहे थे। हमने उनसे कहा कि हम सब सेल फोन के बगैर आएंगे, तस्वीरें नहीं लेंगे, आदि। इस कारण ड्रोन हमलों ने पोलियो के खिलाफ हमारी लड़ाई को और भी लंबा कर दिया था, क्योंकि बिन लादेन के मारे जाने के बाद ये गलत सूचना फैल गई थी कि उसके छिपने के स्थान की जानकारी पोलियो कार्यकर्ता द्वारा ही दी गई थी।''

बलूचिस्तान के समन्वयक सलीम रजा का कहना है कि पोलियो के रेड जोन किल्ला अब्दुल्ला में पिछले साल सिर्फ एक मामला सामने आया था. किल्ली बुजुर्गों, धार्मिक नेताओं और अन्य लोगों से जुड़े जागरूकता अभियानों ने इनकार की दर को कम करने में मदद की। ''अफ़गानिस्तान के करीब होने के नाते सीमा, वायरस को नियंत्रित करना एक चुनौती है। इसलिए आने वाले और बाहर जाने वाले सभी लोगों का टीकाकरण और निगरानी की जा रही है,'' वे कहते हैं। परमानेंट ट्रांजिट पॉइंट्स (PTPs) पर चयनित बिंदुओं पर फ्रंटलाइन वर्कर्स को खड़ा किया गया। यह पोलियो की बूंदों की जाँच और प्रशासन में बहुत सक्रिय और सहायक हैं। हमें जागरूकता अभियानों की गति को बनाए रखने और सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त सावधानी बरतनी होगी और सभी बच्चों को पोलियो की दवा मिले यह सुनिश्चित करना होगा।

लेकिन एक बार यकीन हो जाने के बाद, इस समुदाय ने रोटेरियनों से संपर्क किया और कहा कि उनके पास पानी, सड़क आदि की सुविधा उपलब्ध नहीं है। ''अब, सड़कें बनाना तो बहुत बड़ा काम है जो केवल सरकार ही कर सकती है, लेकिन जहाँ भी, जितना भी हो सका, हमने स्थानीय समुदायों की कई प्रकार से सहायता की है। हमने अपने पोलियो प्लस कार्यक्रम में 'प्लस' पर जोर देने के लिए साफ़ पानी के लिए फ़िल्टर प्लांट स्थापित किए हैं और कई स्वास्थ्य शिविर आयोजित कर उन्हें यह संदेश दिया है कि हम केवल उनके बच्चों को दो बूंद पिलाने के लिए ही नहीं आते बल्कि उनके सम्पूर्ण परिवार के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए भी आते हैं। इससे हमारी साख और स्वीकार्यता बढ़ी है।''

रोटेरियन पोलियो सुधारात्मक सर्जरी भी करते हैं, जिसमें रोटरी क्लब कराची और लाहौर जैसे कई क्लबों ने पोलियो से पीड़ित लोगों के पुनर्वास के लिए स्थायी केंद्र निर्मित किये हैं। ''सर्जरी से कहीं अधिक, हम बैसाखी देते हैं या जयपुर फुट लगाते हैं। दान दाता सर्जरी और पुनर्वास प्रयासों में सहयोगकरने के लिए आगे आते हैं,'' मेमन कहते हैं। शम्सी ने जानकारी दी कि लाहौर में रोटरी द्वारा सुधारात्मक सर्जरी 1964 से की जा रही है।

अब आगे क्या, इस पर सतर्कता की आवश्यकता को महत्वपूर्ण बताते हुए मेमन कहते है, क्योंकि ''हमारी सबसे बड़ी समस्या एक अत्यंत जोखिम वाली घुमक्कड़ आबादी है।'' पोलियो टीकाकरण कार्यक्रम द्वारा सीमा पर स्थापित स्थायी पारगमन बिंदु (पीटीपी) यह सुनिश्चित करेंगे कि प्रवासियों के एक प्रांत से दूसरे प्रांत में जाने पर बहुत सावधानी बरती जाए। अकेले सिंध में ही ऐसे 29 पीटीपी स्थान हैं। शम्सी बताते हैं कि आर्थिक रूप से अन्य प्रांतों की तुलना में पंजाब प्रांत बेहतर है, इसलिए रोजगार के लिए यहां आने वाले लोगों की संख्या बहुत अधिक है। ''हम सुनिश्चित करते हैं कि इन केंद्रों पर 24 घंटे कार्यकर्ता तैनात रहें और यदि कामगार अपने बच्चों को भी साथ लाते हैं, तो उन्हें पोलियो की दवा पिलाई जाती है।''

मेमन कहते हैं कि पाक-अफगान की सीमाओं पर रोटरी ने सभी आयुवर्ग के लिए टीकाकरण केंद्र बनाये गए हैं और यहां तक कि वयस्कों को भी ड्रॉप्स दिए जाते हैं क्योंकि वे भी इसके वाहक हो सकते हैं। ''वैसे ही, जब आप हज के लिए जाते हैं, सऊदी सरकार सुनिश्चित करती है कि सभी वयस्कों द्वारा पोलियो की दवा ले ली गई है।''

चित्रः Pakistan's PolioPlus archives

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

ADVT.

GUINNESS WORLD RECORDS
FIRST OF IT'S KIND IN THE WORLD !!!
LIMCA BOOK of RECORDS
GUINNESS WORLD RECORD BREAKING
WHEELCHAIR DANCE PERFORMANCES
BY DIFFERENTLY ABLED ARTISTS!
MIND-BLOWING DANCE SHOWS
WHICH INSTANTLY MOTIVATES
AND TRANSFORMS YOUR LIFE.
Ability Unlimited shows have captivated audiences and won accolades across the Nation and in USA, UK, Canada, Italy, Muscat, UAE, Kuwait, Paris, Johannesburg, Moscow, Malaysia, Nepal, etc.
Live Stage Shows !!!
ABILITY UNLIMITED
Virtual Shows !!!
ANY OCCASION IS GOOD FOR OUR SHOWS
Founders Day, National and international conferences, Award Ceremonies, Motivational program for employees, Concerts, Ceremonies, Entertainment Spectaculars, Traders and dealers Meet, Silver and Golden Jubilee Celebrations, Product Launches, Fashion Shows, Inaugural/Launch of Company (National and International), Product Promotions, Campaigns, weddings, family occasions and Tailor made shows for all your needs and every occasion.
CONTACT FOR THE SHOWS
+91 9811340308, 9597167987 abilityunlimited@gmail.com http://abilityunlimited.com

एक संयोजक

निर्वाचित अध्यक्ष जेनिफर जोन्स रोटरी को एक जीवंत, वैविध्यपूर्ण भविष्य में ले जाने के लिए तैयार हैं

इलिनुआ के इवान्स्टन स्थित रोटरी इंटरनेशनल वर्ल्ड मुख्यालय में निर्वाचित अध्यक्ष जेनिफर जोन्स का कार्यालय अपने पूर्ववर्तियों से कुछ अलग लग रहा है, लेकिन इसकी वजह ये नहीं है कि 1 जुलाई को वह रोटरी की पहली महिला अध्यक्ष बनेंगी। कार्यालय में हाल ही में एक मित्र से मिला उपहार दीवार पर टंगा है - विश्व का एक काला खरोंच-बंद नक्शा जिस पर वह अगले दो वर्षों के दौरान यात्रा पर जाने वाले प्रत्येक रोटरी गंतव्य को खरोंच कर रिकॉर्ड कर सकती है। अभी सितंबर चल रहा है, दो महीने पहले ही उन्होंने अध्यक्ष निर्वाचित का पदभार ग्रहण किया है, और नक्शे पर, केवल शिकागो का खुलासा हुआ है - कोविड -19 मामलों में वृद्धि के कारण पूर्व नियोजित कई कार्यक्रमों को को रद्द या स्थगित कर दिया गया था। वन रोटरी सेंटर की 18वीं मंजिल पर आज वो अकेली बैठी हैं। कोई फोन नहीं बज रहा है, उनके दरवाजे के बाहर स्थित कक्षों से उंगलियों द्वारा कीबोर्ड चलाने से होने वाली टैप-टैप-की कोई आवाज़ नहीं आ रही है। रोटरी बोर्डरूम में कोई भी उठा पटक कर सकता था और बाहर किसी को पता नहीं चलेगा।

जेनिफर ने अपने आगंतुकों, *रोटरी* पत्रिका के वरिष्ठ कर्मचारी लेखक डायना शॉबर्ग और वरिष्ठ संपादक जेफ्री जॉनसन का कोहनी छू कर अभिवादन करती हैं। फिर, उनके कार्यालय में अलग अलग मेज पर बैठ, वे आगामी वर्ष के लिए उनके दृष्टिकोण पर चर्चा करते हैं। ''यदि आप सोचना शुरू करें कि इस दुनिया पर रोटरी कितनी तीव्र गति से प्रभाव डाल सकती है, हम एक क्लब से बहुत विशाल हैं,'' वह कहती हैं। ''हम एक आंदोलन हैं।''

जेनिफर विंडसर, ओंटारियो में मीडिया स्ट्रीट प्रोडक्शंस इनकारपोरेशन की अध्यक्ष और सीईओ हैं, जहां वह रोटरी क्लब ऑफ विंडसर-रोजलैंड की सदस्य हैं। (उनके पति, निक क्रेयासिच, रोटरी क्लब ऑफ़ ला सैले सेंटेनियल के पूर्व अध्यक्ष हैं और हाल ही में उन्हें मंडल 6400 के गवर्नर-मनोनीत के रूप में चुना गया था।) उनकी कंपनी की विशिष्टताओं में रेडियो और टेलीविज़न प्रोडक्शन, कॉर्पोरेट और गैर-लाभकारी वीडियो और लाइव शो प्रोडक्शन शामिल है।

अपनी मीडिया पृष्ठभूमि का उपयोग कर रोटरी की वैश्विक छवि में वृद्धि कर इसे ऊंचा उठाना उनके अध्यक्ष पद के प्राथमिक लक्ष्यों में से एक है, और वह इसकी योजना पर कार्य कर रही हैं, जिसे वे ''इमेजिन इम्पैक्ट टूर'' कहती है ताकि रोटरी के प्रत्येक क्षेत्र में बड़े पैमाने पर की गईं कई टिकाऊ परियोजनाओं को विश्व में प्रदर्शित किया जा सके। ''मैं इसे अपनी सदस्यता बढ़ाने के विकल्प के रूप में देखती हूं,'' वह कहती हैं। ''जब हम अपनी कहानियां सुनाते हैं, तो समान विचारधारा वाले लोग हमारे साथ जुड़ना चाहेंगे।''

1996 से रोटरी की सदस्य, जेनिफर ने स्ट्रेंथनिंग रोटरी एडवाइजरी ग्रुप के अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं दे कर संगठन की छवि को पुनर्स्थापित करने में प्रमुख भूमिका निभाई है। वह एंड पोलियो नाउ काउंटडाउन टू हिस्ट्री कैंपेन कमेटी की सह-अध्यक्ष हैं, जिसका उद्देश्य पोलियो उन्मूलन प्रयासों के लिए 150 मिलियन डॉलर एकत्रित करना है। उन्होंने 2020 में #RotaryResponds वर्चुअल टेलीथॉन का भी सफल नेतृत्व किया, जिसके माध्यम से महामारी से राहत दिलाने के लिए महत्वपूर्ण धन जुटाया गया और इसे 65,000 से अधिक बार देखा गया था।

रोटरी की छवि निखार कर इसे ऊपर उठाने और विविधता, समानता और समावेशन की दिशा में चल रहे इसके प्रयासों जैसे अधिक गंभीर विषयों के बीच, हमारी बातचीत 1980 के दशक के टेलीविज़न शो, *द गोल्डन गर्ल्स* (जेनिफर का अनुमान है कि इसकी

सामाजिक टिप्पणी आज भी प्रासंगिक है) और नृत्य पार्टियों की रेट्रो अपील के आसपास घूमती है। (जब भी कोई अच्छा गाना बजता है, तो ये हो ही नहीं सकता कि उस पर ध्यान नहीं जाये , वह कहती हैं)। बातचीत के अंत में, उनके पिता का फोन आता है, फोन पर एक डिंग की झंकार के साथ वे बोलते हैं, पास हो गया - लगभग 80 साल की उम्र में वह अभी भी काम कर रहे हैं और जेनिफर को बताना चाहते है कि नौकरी के लिए दी गई एक वार्षिक परीक्षा में वो पास हो गए हैं।

''वो मुझे सबसे प्रिय हैं,'' चेहरे पर एक मुस्कान लिए कहती हैं। कुछ दिन पहले, उनके लिए लिखे एक सन्देश में एक दिल का इमोजी आया था और साथ में यह प्रश्न लिखा था कि दुनिया को सही दिशा में ले जाने का कार्य कैसा चल रहा है? अपने पीछे रोटरी के पूरे परिवार के साथ, जेनिफर अपने मार्ग पर अग्रसर हैं।

आप रोटरी की पहली महिला अध्यक्ष बनने जा रही हैं। रोटरी के लिए इसके क्या मायने है?

जब मेरा चयन हुआ, हालांकि यह प्रक्रिया आभासी थी, साक्षात्कार के दौरान कही गई बातों पर मेरे विचार जानने के लिए वहां उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति ने मुझसे कुछ न कुछ बात ज़रूर की थी। जिस एक बात पर बार-बार जोर दिया गया, वह यह कि मुझे मेरी योग्यता के आधार पर चुना गया था, न कि महिला होने के कारण। साक्षात्कार में उतरने के समय मेरे ज़ेहन में मेरे महिला होने का विचार सर्वोपरि नहीं था। फिर भी, मुझे लगता है कि हमारे संगठन के लिए, आश्चर्यजनक रूप से यह एक महत्वपूर्ण क्षण था। सिर्फ रोटरी ही नहीं बल्कि हमारी दुनिया के लिए भी विविधता, समानता और समावेश बहुत महत्वपूर्ण है, प्रासंगिक है। संभव है कि मेरा नामांकन उचित समय पर हो रहा हो।

2021 के आभासी सम्मेलन में जब मैंने अपना स्वीकृति उद्बोधन पढ़ा था, तो सम्मेलन के उद्घाटन के समय मैंने अपनी 10 वर्षीय भतीजी की चर्चा भी की थी। उसने मुझे अपना एक चित्र दिया था जिस पर ये शब्द लिखे थे, ''अलग होना हमेशा बेहतर होता है। अलग हूँ मैं स्वयं।'' ये पंक्तियाँ मुझे बहुत पसंद आईं और इस कथन के लिए मुझे उस पर इतना गर्व हुआ, कि मैंने उसके शब्दों का यथावत उपयोग करते हुए अपना भाषण समाप्त किया था। अलग होने या दिखने में क्षमा याचना जैसी कोई बात नहीं है। हमारी मूलभूत मान्यताओं में से एक है विविधता, और यह एक अन्य तरीका है जो विविधता दर्शाता है। बस, इसके घटित होने में 117 साल लग गए।

हमारे संगठन के लिए विविधता का क्या अभिप्राय है?

हमारी रोटरी की दुनिया में विविधता दिखती है, लेकिन क्या हमारे सबसे नज़दीकी प्रभाव क्षेत्र, हमारे अपने क्लबों में भी विविधता है? जब हमारे यहां विचारों की विविधता, उम्र की विविधता, संस्कृति की विविधता, लिंग की विविधता, व्यवसाय की विविधता होती है, तो हम इन पर चर्चा करते हैं। ये हमारा अदृश्य तरीका है। यही तरीका हमें समस्याओं का समाधान ढूंढने में सहायक होता है जो अन्य नहीं कर सकते। इसे हम अपने अनुभव के उस केलिडोस्कोप के माध्यम से देख कर इस पर बातचीत करते हैं।

ऐसे क्लब भी हैं जो कहेंगे, ''नहीं, हम ठीक हैं। हमने विविधता का समाधान कर लिया है।'' और शायद वे करते हैं और शायद नहीं भी। लेकिन मेरा विचार है कि इतिहास के इस दौर में, इस तरह के वार्तालाप के लिए विशिष्टतः एक संगठन के रूप में हम ईमानदार मध्यस्थ की भूमिका निभाने के लिए तैयार हैं। वजह, क्योंकि हम गैर-राजनीतिक हैं और गैर-धार्मिक हैं, हमारे पास इस प्रकार के संवाद आयोजित करने का सामर्थ्य है, वो भी एक विश्वसनीय जगह पर जहां हम एक-दूसरे का सम्मान करते हैं।

आप रोटरी अध्यक्ष की भूमिका को कैसे पुनर्परिभाषित करेंगी?

मुझे नहीं मालूम कि मैं परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य से अध्यक्ष पद पर आ रही हूं। मैं इसे इस नज़रिये से देखती हूं कि आज की संस्कृति और परिवेश में एक संगठन के रूप में हम किस तरह से प्रासंगिक हैं। हम उन चीजों को किस प्रकार करते हैं जो हमारे भविष्य के लिए अग्रसक्रिय और सकारात्मक हैं?

हो सकता है कि पिछले कई वर्षों से हम विशिष्ट जनसांख्यिकी आंकड़ों तक पहुंचने के सन्दर्भ में जो प्रयास कर रहे हैं, उसमें थोड़ा बहुत परिवर्तन हो। शायद इसके लिए हमें और अधिक ईमानदारी के साथ कोशिश करने की जरूरत है। अपने संगठन में यदि हम अधिक महिलाओं को शामिल होने की बात करते हैं और हमने इसके परिणाम भी देख चुके हैं, लगभग नगण्य, तो शायद एक दूसरों को प्रेरित करने का अवसर है ताकि वो भविष्य की संभावनाओं की ओर देख सकें और कह सकें, ''अगर वो ऐसा कर सकती है, तो मैं भी कर सकती हूं।'' यदि हम अपने संगठन में युवा सदस्यों और युवा विचारकों की खोज कर रहे हैं, तो ये हमारे आचरण और व्यवहार में परिलक्षित होना चाहिए। हमें यह बताने की ज़रूरत है कि उनके लिए यह क्यों महत्वपूर्ण है - यह सुनिश्चित करें कि लोगों को अपने संगठन में सम्मिलित करने के लिए हम उन्हें सार्थक उद्देश्य दे रहे हैं।

सबसे बड़ी बात जो मैं सामने लाने की उम्मीद कर रही हूं वह लिंग से सम्बंधित नहीं है बल्कि संचार से ताल्लुक रखती है - इन चीजों को हम अपने फ्रंटलाइन सदस्यों और उन लोगों तक कैसे पहुंचाएं जो हमारे परिवार का हिस्सा हैं, ये समझने के लिए कि अलग स्वभाव का होना एक अच्छी बात है और इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा कि हम कौन हैं। हमारे डीएनए में तो सत्य ही है और रहेगा। हमारी मूल मान्यताएं भी अटल हैं। वे चीजें हमारी शैली से बाहर नहीं जाएंगी। लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में क्या हम चीजों को एक अलग नजरिए से देख सकते हैं?

आपने युवा विचारकों के साथ-साथ युवा सदस्यों का भी प्रयोग किया है। दोनों में क्या फर्क है?

क्या आप ऐसे किसी 25 साल के व्यक्ति से मिले हैं जो बूढ़ा है? हम सब के आस पास है। क्या आप किसी ऐसे 86 वर्षीय व्यक्ति से मिले हैं जो युवा है? निश्चित ही मिले होंगे। इसलिए मैं युवा विचारकों की बात करती हूं। ये हमेशा गूंजती रहती है भले मैं दुनिया के किसी भी कोने में हूं।

इस तथ्य को स्वीकार करते हुए कि हम कार्य करने वाले लोग हैं, पूरे आनंद और मस्ती में रहते हैं। हम बाहर निकलते हैं। हम काम करते हैं। युवा विचारकों के संदर्भ में भी मैं यही सोचती हूं। हम वे लोग हैं जो हमारी दुनिया और हमारे समाज में चीजें क्रियान्वित कर उन्हें संभव करते हैं।

हमारे पास क्रॉस-मेंटरशिप अपनाने का शानदार अवसर है जो मुझे बेहद पसंद है।

कभी-कभी एक महान विचार अनुभव की दूरबीन से आता है, और कभी-कभी उस व्यक्ति से जिसे पहले से ये नहीं कहा गया हो कि वे कुछ नहीं कर सकते हैं या इसे इस तरह से करने की आवश्यकता है। जब

हम अपने संगठन में युवा प्रतिभागियों की ओर देखते हैं, तो उनमें मुझे आशा की किरण दिखाई देती हैं कि हम चीजों को नई दृष्टि से देख सकते हैं, हम क्रमिक विकास की स्थिति में निरंतर बने रह सकते हैं।

यह सामान्यीकरण बहुत व्यापक होने जा रहा है: यदि आपके पास एक महान नया विचार आया और आपने इसे रोटारैक्ट क्लब को दिया, तो कुछ ही दिनों में वे निर्णय कर लेंगे कि इस बारे में वे क्या करने जा रहे हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर किसी प्रकार की उपस्थिति दर्ज की है। उन्होंने बाहर से भागीदारों को आमंत्रित कर जोड़ा हैं। उन्होंने हर तरह के प्रयास किये हैं। वास्तव में वे द्रुत गति से कार्य करते हैं। और यही विचार आप रोटरी क्लब को दे कर देखें, और हम क्या करते हैं? पहले हम एक समिति बनाते हैं, फिर हमारी बैठकें होती हैं, और फिर बहुत सारी बैठकें होती हैं।

यह विचार विमर्श के उस तरीके को गलत नहीं बता रही; मैं मजाक में कह रही हूं। लेकिन कभी-कभी लालफीताशाही की धीमी गति हमार मार्ग अवरुद्ध कर सकती है और ये बात लोगों के लिए निराशाजनक साबित हो सकती है।

हम युवा जनसांख्यिकीय आंकड़ों को देखें तो हमारे लिए इसमें एक उपयुक्त अवसर है। बस वे चीजों को अलग तरह से करते हैं। और मुझे लगता है कि हम उनसे वास्तव में बहुत कुछ सीख सकते हैं।

आप एक स्वाभाविक कहानीकार हैं। आपकी प्रेसीडेंसी के शुरुआती अध्याय का पहला वाक्य क्या है?

यह एक शब्द है: इमेजिन - कल्पना कीजिए।

यह आपका थीम है, है ना?

रोटरी की कल्पना करो।

आप इस थीम के निष्कर्ष पर कैसे पहुंची?

Imagine (कल्पना) मेरे लिए सपनों और उन सपनों के पीछे दौड़ने के कर्तव्य से सम्बद्ध है। मैं चाहती हूं कि लोग उन चीजों के बारे में सोचें जो वे हासिल करना चाहते हैं, और फिर वहां पहुंचने के लिए वाहन के रूप में रोटरी का उपयोग करें। हमारे सामने इतने बड़े - बड़े अवसर हैं, लेकिन हमें अपनी ऊर्जा को इस तरह से दिशा देने की जरूरत है कि हम जो कुछ भी करें उसके बारे में स्थायी और प्रभावशाली निर्णय ले सकें। किसी सदस्य के लिए सबसे ताकत यह है कि वह कह सके, मेरे पास एक विचार है। और फिर इसे दूसरों के साथ साझा करना और इसका विस्तार करना और यह समझना कि इस विचार के साथ कहां तक जाना है। Imagine एक ऐसा सशक्त शब्द है, जो लोगों में यह कहने का साहस जगाता है कि अपनी दुनिया को बेहतर बनाने के लिए वो कुछ करना चाहते हैं, और निश्चित रूप से वे ऐसा कर सकते हैं क्योंकि वे इस परिवार का हिस्सा हैं।

समकालीन नेतृत्व क्या है, और आपकी नेतृत्व शैली किस प्रकार फिट बैठती है?

पिछले दो वर्षों ने हमें चिंतन करने का यह गहन अवसर दिया है कि हमारे लिए क्या महत्वपूर्ण है और हम किन चीजों से निजात पाना चाहते हैं, जो हमारे सिर और कंधों पर बोझ बनी हुई हैं। आगे, अब हम देख सकते हैं कि चीजों को थोड़ा अलग तरीके से कैसे किया जाए और, शायद सबसे ज़रूरी है, अधिक विश्वसनीय तरीके से। किस प्रकार हम खुद के प्रति सत्यनिष्ठ और ईमानदार हो सकते हैं कि अपने समय का उपयोग हम कैसे करना चाहते हैं, हम अपना समय किसके साथ व्यतीत करना चाहते हैं, और एक-दूसरे का सहयोग करने की दिशा में किस प्रकार बेहतर काम कर सकते हैं, सिर्फ दोस्तों और पड़ोसियों के रूप में ही नहीं बल्कि इंसानियत के रूप में ?

समकालीन नेतृत्व के नजरिए से देखें तो हमें निकृष्ट में से सर्वश्रेष्ठ उठाने की जरूरत है। हमने विश्व के नेताओं को उनकी रसोई और उनके तहखाने से प्रसारण करते हुए देखा है।

हमने सीखा है कि अलग कैसे होना चाहिए और अन्य लोगों के अनुभवों की अधिक प्रशंसा करनी चाहिए। रोटरी के रूप में, इसमें हम हमेशा से अच्छे रहे हैं। अब हमारे जगमगाने का समय है।

अध्यक्ष पद के लिए आप की ताकत और कमजोरियां?

मुझे एक कनेक्टर होने पर गर्व है। मुझे लोगों से सामान्य बनाना पसंद है, और मुझे लोगों को कहानियों से जोड़ना पसंद है। मैं देखूँगी कि इसका उपयोग कैसे किया जा सकता है। मुझे लगता है कि मेरी ताकत संचार में भी है और यह चीजों को थोड़ा अलग तरीके से करने में भी हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात जो हम कर सकते हैं वह यह सुनिश्चित करना है कि हमारे संगठन का प्रत्येक सदस्य यह समझे कि इसका हिस्सा बनने का मतलब क्या है। इसे संप्रेषित करने के कई अलग-अलग तरीके हैं, और केवल एक ईमेल भेजना काफी नहीं है। ये लोगों के लिए उस उद्देश्य का सृजन करने के सम्बन्ध में है जिससे लोग संगठन के बारे में ध्यान से सुनें।

हाँ, एक चीज जो मैं करना चाहती हूं वो ये की बोर्ड की बैठक के तुरंत बाद सीधे लाइव होना। मैं लोगों को बताना चाहती हूं कि उनका संगठन क्या कर रहा है - वास्तव में अभी अभी क्या हुआ है। इवान्स्टन की 18वीं मंजिल से ब्रेकिंग न्यूज, और आपके क्लब के सन्दर्भ में इस के ये मायने हैं। क्या हम वो कहानी सुना सकते हैं? मैं कुछ नए टूल उपयोग करना चाहती हूं; जब मैं यात्रा पर रहूंगी तो मेरे पास मेरा छोटा गो-प्रो कैमरा होगा। मैं अपनी अध्यक्षता का सृजन मैदान में ही करना चाहती हूं। मैं लोगों को दिखाना चाहती हू कि मैंने अभी-अभी क्या देखा हैं और इस व्यक्ति ने मुझसे क्या कहा।

कमज़ोरी? संतुलन। अपना ख्याल रखने की कोशिश करना - सही खाने की कोशिश करना, व्यायाम करना, दोस्तों और परिवार के लिए समय निकालना। मैं इसमें हमेशा अच्छी नहीं हूँ। मुझे लगता है कि यह उस कार्य को नुकसान पहुंचाता है जो हम महामारी के सम्बन्ध में कर रहे हैं। हम सभी को पॉज़ बटन को पुश करने का यह अवसर मिला है। कभी-कभी हम जिस चीज़ पर काम कर रहे होते हैं, उसकी तरफ एक हज़ार प्रतिशत बढ़ जाते हैं, जबकि शायद ये सही तरीका नहीं है। हम तभी मजबूत हो सकते हैं जब हम खुद के लिए बेहतर हों। मुझे लगता है कि वास्तव में हमने यह सबक सीख लिया है; कम से कम मैंने तो सीख लिया।

जिन चीजों पर मुझे अपने पूरे जीवन गर्व रहा है उनमें से एक है, गलती नहीं करना। आज मैं उस मुकाम पर पहुंच गई हूं जहां बहुत कुछ घट रहा है, और इसके चलते मैंने स्वयं को कुछ गलतियां करने की इज़ाज़त दे दी है।

ईमेल, टेक्स्ट, व्हाट्सएप, फेसबुक, लिंक्डइन, या ट्विटर के माध्यम से लोग अब विभिन्न तरीकों से संवाद करते हैं। मेरे पास दो फोन हैं। यह मूर्खता है। इसलिए मैंने खुद को इससे दूर रहने और फोन से न बंधे रहने का निर्णय किया है। मैं इसके महत्त्व को जानती हू, मैं इसका सम्मान करती हू, लेकिन मुझे थोड़ा अधिक उपलब्ध रहने की जरूरत है। मैं वास्तव में चौबीस घंटे बातचीत कर सकती हूँ पर इससे किसी को फायदा नहीं है।

आप गले मिलने के लिए मशहूर हैं। तो नया आलिंगन क्या है?

वह मुश्किल है। कोहनियां छूना निश्चित रूप से आगे प्रचलन में रहेगा, हो सकता है कभी कभार एक मुट्ठी भी टकराये।

चित्र: मोनिका लोज़िंस्का

© *Rotary*

रो ई मंडल 3141 और 3070 कृत्रिम अंग फिटमेंट शिविर के लिए सहयोग करते हैं

टीम रोटरी न्यूज़

रत्न निधि चैरिटेबल ट्रस्ट, मुंबई के सहयोग से, मुंबई के रोटरी क्लब, रो ई मंडल 3141 और रोटरी क्लब धर्मशाला, रो ई मंडल 3070, ने हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में एक कृत्रिम- अंग फिटमेंट शिविर का आयोजन किया। लगभग 165 शारीरिक रूप से अक्षम (दिव्यांग) लोगों को जयपुर में कृत्रिम-अंग फिट किया गया और 10 लोगों को व्हील चेयर दिए गए। डीजी राजेंद्र अग्रवाल (रो ई मंडल 3141) और डीजी डॉ उपिंदर सिंह घई (रो ई मंडल 3070) ने शिविर में भाग लिया और रो ई मंडल 3141 के विभिन्न रोटरी क्लबों और मेजबान क्लब के सदस्यों के 170 रोटेरियन के एक टीम की सहायता की।

बाद में रोटेरियन ने 50 'हैप्पी स्कूलों' में 5,000 नोटबुक वितरित किए और शहर के 800 सुविधा से वंचित लोगों को गर्म कपड़े प्रदान किए।■

जालना के रोटेरियनों ने महामारी में एक चिकित्सकिय मिशन की शुरुआत की

रशीदा भगत

जनवरी 2021 में, रो इ मंडल 3132 के पीडीजी राजीव प्रधान ने, जब जालना के पांच रोटरी क्लब और महाराष्ट्र, अंबाद के एक क्लब के रोटेरियनों के सान्निध्य में, महाराष्ट्र के स्वास्थ्य मंत्री राजेश टोपे को एक कोविड योद्धा के रूप में सम्मानित किया, ये सम्मान उनके नेतृत्व में राज्य के स्वास्थ्य विभाग द्वारा कोविद प्रबंधन में प्रदत्त अनुकरणीय सेवाओं के लिए दिया गया, उस समय मंत्री महोदय को एक बार फिर रोटेरियनों द्वारा अफ्रीका और भारत में रोटरी द्वारा किए गए कई चिकित्सा मिशन के बारे में अवगत कराया। ''ऐसा नहीं है कि उन्हें इसकी जानकारी नहीं थी; वह मेरे शहर जालना से हैं, और रोटरी के चिकित्सा मिशन के बारे में मैंने पहले भी कई बार बताया है, जिनमें से अफ्रीका और भारत में 10 मिशन में मैंने भाग लिया है, समारोह के दौरान मंत्री ने कहा कि आप जालना में एक मिशन करने की क्यों नहीं सोचते,'' रोटरी क्लब जालना के नेत्र सर्जन डॉ माधव आंबेकर कहते हैं।

जालना रोटेरियनों और रोटरी चिकित्सा मिशन के एक अन्य अनुभवी पीडीजी डॉ प्रधान ने इसे स्वीकार किया और बाद में जालना रोटेरियनों के साथ शिविर के आयोजन की बारीकियों पर चर्चा करने जालना पहुँच गए। ''शुरुआती प्लानिंग में,

जालना के चिकित्सा शिविर में सर्जरी करते हुए रोटेरियन डॉ रामेश्वर।

ऑपरेशन थियेटर में डॉ रामेश्वर और एनेस्थेसियोलॉजिस्ट रोटेरियन डॉ सोमानी।

गांव में स्वास्थ्य सर्वेक्षण करते रोटरी आशा कार्यकर्ता।

सोलापुर, नांदेड़, नगर, सतारा और पनवेल के रोटेरियन डॉक्टर 8-9 दिन के लिए जालना चलने को सहमत हो गए थे। लेकिन तभी, कोविड की दूसरी लहर शुरू हो गई, कई तरह की परेशानियां और रसद की समस्याएं सामने आ खड़ी हुई। लेकिन जालना से हमारे रोटेरियन सर्जन और साथ में सरकारी डॉक्टर जरा भी विचलित हुए बिना शिविर में पहुँच गए, और पूर्व में आमंत्रित डॉक्टरों से अनुरोध करना पड़ा कि वे जालना न आएं,'' डॉ प्रधान ने बताया।

रोटरी क्लब जालना सेंट्रल के दो रोटेरियन डॉक्टरों - डॉ आंबेकर और डॉ सुचित्रा गाड़िया (एक एनेस्थेटिस्ट) के साथ, सभी प्रशासनिक जिम्मेदारी उठाते हुए, यह शिविर जिसे शुरू में विलंबित करना पड़ा था, RID 3132 के डीजी ओमप्रकाश मोतीवाले से अनुमति मिलने के बाद अंततः 4-10 जनवरी को आयोजित किया गया, क्योंकि महामारी का कहर अभी भी जारी था।

रोटेरियन भली भांति जानते थे कि महामारी का कहर अभी भी जारी है, और सरकारी तंत्र, विशेष रूप

से आशा कार्यकर्ताओं के माध्यम से ''जागरूकता फैलाने के कारण, अधिकाँश लोगों को शिविर के बारे में जानकारी थी और हमें भारी भीड़ की उम्मीद थी। हम दुविधा में पड़ गए, लेकिन फिर उन लोगों से अनुरोध किया कि जिन्हें तत्काल सर्जिकल हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है, कृपया शिविर में नहीं आएं, और दुबारा जांच की गई।'' यहां जिन्हें तत्काल सर्जरी की आवश्यकता नहीं थी, डॉक्टरों ने उन रोगियों को परामर्श दिया, आश्वस्त किया और समझाया कि कोविड का खतरा अभी टला नहीं था, इसलिए जहां तक हो सके घर पर ही रहें और अस्पताल आकर जोखिम नहीं उठाएं।

महामारी के दौरान एक मेगा मेडिकल कैंप आयोजित करने में आने वाली मुख्य चुनौतियों के बारे में, डॉ आंबेकर बताते हैं, ''सबसे पहले सरकारी कर्मचारियों को घर-घर जा के सर्वेक्षण करने के लिए राजी करना था, जबकि स्वास्थ्य मशीनरी पहले से ही बहुत थकी हुई थी, क्योंकि उन्हें केवल कोविड प्रबंधन और उपचार के लिए काम करने के निर्देश दिए गए थे'' सरकारी डॉक्टरों ने रोटेरियनों से इस शिविर में कर्मचारियों को पूरे दिल से अपना योगदान देने के लिए प्रेरित करने का अनुरोध किया, ''हमने उनसे बात की और समझाया

परियोजना का मूल तत्व यह था कि शुरू से ही मैंने सभी को स्पष्ट कर जागरूक कर दिया था कि इसे कुछ क्लबों की नहीं बल्कि जालना के सभी क्लबों और सम्पूर्ण रोटरी परिवार की परियोजना समझें।

डॉ माधव आंबेकर
सदस्य, रोटरी क्लब जालना

कि ये पुण्य का काम है, और उन्हें इस शिविर के लिए पूरे उत्साह के साथ काम करने के लिए मना लिया।''

उनका कहना है कि इस परियोजना का मूल तत्व यह था कि ''शुरू से ही मैंने सभी को स्पष्ट कर जागरूक कर दिया था कि इसे कुछ क्लबों की नहीं बल्कि जालना के सभी क्लबों और सम्पूर्ण रोटरी परिवार की परियोजना समझें ... हमने स्वयं को 'रोटरी परिवार' कहा। चिकित्सा शिविर के लिए एकत्र किए गए धन को सुरक्षित रखना था इसलिए हमने इसे रोटरी क्लब जालना ट्रस्ट में जमा कर दिया।''

जिस योजना की कल्पना रोटरियनों ने की थी वो वास्तव में बहुत बड़ी थी और उन्होंने ₹25 लाख के बजट का अनुमान लगाया था, इसके लिए धन एकत्रित करने के प्रति वे निश्चिन्त थे क्योंकि जालना के कई औद्योगिक घरानों जैसे जालना स्टील मैन्युफैक्चरिंग एसोसिएशन, कलश सीड्स, विक्रम टी प्रोसेसर और कई रोटेरियनों ने भी आर्थिक सहयोग दिया। डॉ आंबेकर ने कहा, ''सबसे उत्साहवर्धक बात ये थी कि हमारे पास दो परोपकारी थे जिन्होंने बड़ी राशि दी थी - धनश्याम गोयल और सतीश अग्रवाल - उन्होंने कहा धन की जरा भी चिंता न करें, जितना भी आवश्यक होगा उसकी व्यवस्था एसोसिएशन के व्यापारिक प्रतिष्ठानों से हो जाएगी।'' अन्नामृत फाउंडेशन, एक सामुदायिक रसोई ने सभी रोगियों और अस्पताल के कर्मचारियों को उन दिनों रियायती दरों पर भोजन उपलब्ध कराया।

डॉ आंबेकर, डॉ सुमित्रा और डॉ क्रिस्टोफर मोसेस की अगुवाई में रोटेरियनों की कई बैठकें हुईं जिला स्वास्थ्य अधिकारी, जिला परिषद के

कान की सर्जरी करने के लिए तैयार रोटेरियन डॉ मनथाले।

सीईओ, जिला कलेक्टर और सिविल सर्जन डॉ अर्चना भोंसले के साथ। स्वास्थ्य मंत्री ने अपने ओएसडी डॉ गौरीशंकर चव्हाण को संपर्क व्यक्ति नियुक्त किया। कई मुद्दों से जूझने के साथ टीम को उपकरणों की कमी, सर्जिकल डिस्पोजेबल, चिकित्सा आपूर्ति आदि का सामना पड़ा था। सर्जरी की व्यवस्था सरकारी सिविल अस्पताल, सरकारी महिला अस्पताल और अंबाद उप-जिला अस्पताल में की गई थी।

एक आउटरीच कार्यक्रम के माध्यम से मरीजों का चयन किया गया, ''कोविड के कारण ज्यादा संख्या में रोगियों के लिए ओपीडी की व्यवस्था करना संभव नहीं था।'' तीन तालुकों के सभी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के कर्मचारियों और आशा कार्यकर्ताओं ने घर-घर जा कर सामान्य सर्जरी, ईएनटी, स्त्री रोग, आर्थोपेडिक्स, दंत और नेत्र उपचार के लिए सर्जिकल उपचार की प्रतीक्षा कर रहे रोगियों की पहचान की। रोटेरियनों ने 20 से अधिक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में बैनर, पोस्टर और ब्रोशर वितरित किये।

डॉ सुमित्रा कहती हैं, ''आश्चर्य की बात ये है कि सरकारी तंत्र ने बहुत सहयोग किया और उन्होंने महसूस किया कि निजी डॉक्टरों की तरहही, हर संभव मदद और सहायता प्रदान की जानी चाहिए, हाँ, चिकित्सा उपकरणों की आपूर्ति और दवाओं की व्यवस्था सरकार ने की थी। भीड़ को सही प्रकार से प्रबंधित कर, रोगियों को ठीक से समझाया गया ताकि कोविड प्रोटोकॉल का पालन किया जा सके और सभी की कोविड जांच की गई।''

डॉ आंबेकर चिकित्सा शिविर में टायम्पैनोप्लास्टी करते हुए।

दोनों सरकारी अस्पतालों के ऑपरेटिंग थिएटर अधिकांश समय डॉक्टरों द्वारा काम में लिए गए थे और ''वास्तव में सुबह से शाम तक सर्जन ऑपरेशन में व्यस्त रहे थे, जिससे सर्जरी की कुल संख्या 673 पहुँच गई। दरअसल, सरकारी सर्जनों ने शिविर के कुछ दिनों बाद भी ऑपरेशन करना जारी रखा क्योंकि वो मरीजों की पहचान कर चुके थे,'' डॉ आंबेकर कहते हैं।

स्त्री रोग टीम का नेतृत्व करने वाले डॉ अनिल ठाकरे ने कहा कि कोविड महामारी के कारण कुछ समय से लंबित हिस्टेरेक्टॉमी के लगभग 43 मामले भी सर्जनों की टीम द्वारा किए गए थे।

डॉ सुमित्रा ने बताया कि आज जालना के रोटेरियन को विश्वास हो गया है कि वे इस स्तर और परिमाण की परियोजनाओं को हाथ में सकते हैं और इसी तरह की परियोजनाएं मंडल 3132 के अन्यत्र निष्पादित करने की योजना भी बना सकते हैं। पीडीजी प्रधान आगे बोले, ''कोविड के कारण व्यक्तिगत रूप से मैं जालना में उपस्थित नहीं हो सका था, लेकिन निरंतर उनके संपर्क में था। डॉ आंबेकर, डॉ सुमित्रा और क्लब के सभी अध्यक्षों ने ऐसा अद्भुत काम किया है कि मेरी कमी महसूस ही नहीं हुई! PRIP राजेंद्र साबू द्वारा बोए गए चिकित्सा परियोजनाओं के बीज, आज समर्पित रोटेरियनों की एक नई और जीवंत पीढ़ी के रूप में पल्लवित हुए हैं, जो विगत 23 वर्षों में मेरे द्वारा किए जा रहे काम को जारी रख सकते हैं या उससे भी आगे निकल सकते हैं।''

कहानी का सबसे अच्छा भाग अंत के लिए छोड़ रखा था, हालांकि शुरू में रोटेरियनों ने ₹25 लाख के बजट की योजना बनाई थी, जिसे घटा कर उन्होंने ₹10 लाख कर दिया था क्योंकि महामारी के कारण शिविर के आकार को छोटा करना पड़ा था। इसलिए, हमने अपने प्रायोजकों से ₹10 लाख ही मांगे थे, पर हुआ यूं कि सरकारी मशीनरी भी हरकत में आई और शुरु में जो सामग्री उपलब्ध नहीं हो रही थी, किसी तरह वो सरकार से मिल गई, इसलिए हम परियोजना की लागत को नियंत्रित कर पाए। बची हुई ₹4 लाख से अधिक की राशि जब हमने प्रायोजकों को लौटाई तो वे हैरान रह गए और बोले, पैसे तो हम कई धर्मार्थ परियोजनाओं को देते हैं लेकिन यह पहली बार है जब हमें बची हुई राशि लौटाई जा रही है। भविष्य में आपको जब भी ज़रुरत हो, आप निस्संकोच हमारे पास आइये!'' ■

बची हुई ₹4 लाख से अधिक की राशि जब हमने प्रायोजकों को लौटाई तो वे हैरान रह गए और बोले, पैसे तो हम कई धर्मार्थ परियोजनाओं को देते हैं लेकिन यह पहली बार है जब हमें बची हुई राशि लौटाई जा रही है।

PDG राजीव प्रधान

उत्तर पूर्व की एक अविस्मरणीय यात्रा

रशीदा भगत

जंगलों से पटे परिधीय पहाड़ों के बीच समतल सड़कों पर सवारी करते हुए, हरे-भरे चाय के बागानों और चावल के सुनहरे खेतों के साथ घनी आबादी वाली ब्रह्मपुत्र घाटी, मध्यम आबादी वाले पहाड़ी क्षेत्र एवं पठार और विरल आवासित हिमालयी क्षेत्रों की पृष्ठभूमि... इन सब ने मिलकर मेरी यात्रा को अत्यंत खास बनाने के लिए प्राकृतिक और सांस्कृतिक परिदृश्यों का एक अनूठा मिश्रण तैयार किया।''

विशाल गुप्ता, एक उत्साही बाइक चालक और रोटरी क्लब सिलीगुड़ी सेंट्रल के चार्टर अध्यक्ष, और उससे पहले एक इंटरेक्टर एवं रोटरेक्टर, हॉर्नबिल फेस्टिवल में भाग लेते हुए अपनी प्रिय हार्ले डेविडसन सॉफ्टेल हेरिटेज 2021 पर अपने हालिया रोमांचक अभियान का वर्णन करते हुए काव्यात्मक हो जाते है। ''हमारे 7-सदस्यीय समूह ने सिलीगुड़ी से गुवाहाटी, गुवाहाटी से दीमापुर और फिर कोहिमा, नागालैंड, के लिए 6 दिन की सवारी की। मैं समूह में एकमात्र रोटेरियन था जिसने रोटरी के झंडे के साथ अपने राइडिंग जैकेट पर रोटरी का लोगो पहनकर रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ावा देने का प्रयास किया,'' वह गर्व से कहते है।

अंतर-जनजातीय संपर्क को प्रोत्साहित करने और नागालैंड की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए, नागालैंड सरकार हर साल हॉर्नबिल महोत्सव का आयोजन करती है; पहला उत्सव 2000 में आयोजित किया गया था।

इस त्योहार का नाम भारतीय हॉर्नबिल के नाम पर रखा गया था जो कि विशालकाय रंगीन वन पक्षी है जिसे राज्य की अधिकांश जनजातियों की लोककथाओं में वर्णित किया जाता है।

रोटेरियन विशाल गुप्ता अपनी हार्ले डेविडसन के साथ।

अपने इस अभियान से हर्षित होकर, 1997 से सवारी कर रहे यह उत्साही बाइक चालक नागालैंड के लोगों की प्रशंसा करते हुए कहते है; ''वे बहुत दयालु, मिलनसार और मेहमाननवाज थे। जिन लोगों को पहाड़ों, राजमार्गों, नदियों, अच्छे भोजन, आतिथ्य की खोज करना पसंद होता है, उनके लिए उत्तर पूर्व एक पूरा पैकेज है।''

बाइक चलाने के अपने जुनून के बारे में बताते हुए गुप्ता कहते है कि उनके लिए सवारी करने का मतलब सिर्फ यह नहीं है कि ''बस उठे, बाइक निकाली और किसी मंजिल तक पहुंच गए। इसके लिए योजना बनाने और सावधानीपूर्वक उसका निष्पादन करने की आवश्यकता होती है।'' स्वयं एक ऑटोमोबाइल डीलर होने के नाते उनकी योजना अमेरिका से अपनी नवीनतम हार्ले बाइक प्राप्त करने के साथ शुरू हुई। ''मैंने हार्ले इसलिए चुना क्योंकि यह एक भारी एवं मजबूत और सुरक्षित वाहन है।'' इसकी ऑन रोड कीमत उन्हें लगभग ₹32 लाख पड़ी। वे आरामदायक 3-सितारा होटलों में रुक रहे थे और इस उत्सव में जाने वाले प्रत्येक प्रतिभागी द्वारा पेट्रोल, होटल, भोजन आदि की लागत को मिलाकर लगभग ₹50,000 से ₹60,000 तक खर्च किए गए।

उनके समूह की यात्रा सिलीगुड़ी से शुरू हुई और उनका पहला पड़ाव गुवाहाटी था और 550 किलोमीटर का ''यह रास्ता उत्तम सड़कों, राजमार्ग और अनुशासित चालकों एवं ड्राइवरों के साथ आनंदमय था। रास्ते में आपको मालबाज़ार, तिहू, बंगाओगॉन जैसे छोटे शहरों का अनुभव होने के साथ ही शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों तरह के भोजन का अच्छा विकल्प मिलेगा और स्थानीय लोगों की गर्मजोशी आपको मंत्रमुग्ध कर देगी।''

अगले दिन यह दल गुवाहाटी से सुबह 7 बजे निकला और दीमापुर में थोड़ी देर रुकने के बाद रात को करीब 8 बजे कोहिमा पहुंचा। हालांकि अधिकांश यात्रा समतल सड़कों पर ही थी, पर सवारों की टीम को कोहिमा पहुंचने से पहले खराब और बदहाल सड़कों के कई हिस्सों का सामना करना पड़ा। एक खास हिस्से में, जहां सड़क निर्माण चल रहा था और वहाँ ढेर सारे पत्थर, मलबा और पानी था, उनकी बाइक फिसल गई और वह गिर गए। ''लेकिन मैं बहुत कम गति पर चल रहा था इसलिए धीमे से गिरा।''

बाइक और सवारों के बारे में नौसिखिया होने के नाते मैंने उनसे पूछा कि जब वह इतनी धीमी गति से चल रहे थे तो भी वह बाइक को नियंत्रित क्यों नहीं कर सके, इसके जवाब में वह कहते है, वहाँ का ''तापमान 3-4 डिग्री था, सड़क गीली थी और मेरी बाइक पूरी तरह यानी 180 डिग्री घूम गई थी। मेरी हार्ले का वजन लगभग 485 किलोग्राम है और जब ये बाइकें गिरती है, तब यदि आप उसे गिरने से रोकने की कोशिश करते है, तो आप या तो अपनी कोई हड्डी तोड़ लेंगे या बहुत बुरी तरह से चोटिल हो जाएंगे।''

सवारों को भोजन शानदार लगा; ''मैं शाकाहारी हूं और मुझे कोई समस्या नहीं हुई क्योंकि हर तरह का शाकाहारी भोजन उपलब्ध था। लेकिन लोगों ने हमारी यात्रा को यादगार बनाया। वे बहुत सुरक्षात्मक थे और हमें सड़कों पर न निकलने के बारे में चेतावनी देते रहते थे क्योंकि क्षेत्र में उग्र गतिविधियों का ज़ोर है।''

वह एक घटना को याद करते है; जब 20 बाइक सवार कोहिमा में सवारी कर रहे थे, ''गलती से मैं एक गलत मोड़ लेकर सड़क के दूसरे छोर पर आ गया। पुलिसकर्मी ने मुझे न केवल सही रास्ता दिखाया बल्कि सड़क के गलत छोर से बाहर निकलने में मेरी मदद करने के लिए ट्रैफिक को भी रोक दिया। इस तरह के भाव आपके दिल पर कितनी सुखद छाप छोड़ते है! कुल मिलाकर यह एक शानदार अनुभव था।''

यहाँ इस अनुभवी यात्री ने एक मूल्यवान टिप दी है। ''यदि आप असम घूमना चाहते है, तो मैं ज़ोर देकर आपको सिलीगुड़ी से सवारी करने और उत्तर पूर्व की सुंदरता, इसकी समृद्ध विरासत को देखने और धर्मों, परंपराओं एवं रीति-रिवाजों के समागम से परिचित होने के लिए कहूँगा। असम की स्थानीय चाय खरीदना और बांस से बने गांवों को देखना न भूलें, यह एक ऐसा अनुभव है जिसे आप हमेशा याद रखेंगे,'' गुप्ता आगे कहते है।

गुप्ता को आप उनके यूट्यूब चैनल *https://youtube.com/thehighwayrider* पर फॉलो कर सकते है। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

चेन्नई के एक सरकारी अस्पताल को हाई-टेक चिकित्सा उपकरण दान किए गए

किरण ज़ेहरा

तमिलनाडु के स्वास्थ्य मंत्री मा सुब्रमण्यन ने रोटरी क्लब मद्रास सेंट्रल (RCMC), रो ई मंडल 3232, द्वारा चेन्नई के ओमांदुरार सरकारी अस्पताल को दान किए गए अल्ट्रासाउंड कलर डॉपलर (UCD) और पूर्ण रूप से स्व-चलित जैव रसायन मशीनों का उद्घाटन किया। रेडियोलॉजी विभाग की डॉ सौम्या शनमुगम कहती है, ''हमारे पास जांच के लिए रोगियों की लंबी कतार होती है,'' क्योंकि डॉक्टरों ने तुरंत ही नए उपकरणों का उपयोग करना शुरू कर दिया है।

एक 50 वर्षीय मरीज के कंधे और छाती पर अल्ट्रासाउंड कलर डॉपलर को घुमाते हुए उन्होंने अल्ट्रासाउंड स्क्रीन पर एक रंगीन स्थान की ओर इशारा करते हुए उस क्षेत्र में प्रतिबंधित रक्त प्रवाह की पुष्टि की। ''यह मशीन न केवल विभिन्न अंगों में रक्त प्रवाह की दिशा और उसके वेग का पता लगाती है बल्कि यह सुरक्षित, किफ़ायती, वजन में हल्की और अधिक सटीक है। इसने एंजियोग्राफी जैसे महंगे और चीर-फाड़ युक्त इलाज के तरीकों की जगह ले ली है,'' वह कहती है।

रोगियों वाला नीला गाउन पहने और अपने हाथों में IV पुश कीमो ड्रिप लिए हुए 23 वर्षीय शोभना, एक ल्यूकेमिया रोगी, उस कमरे में झाँकती है जहाँ नया UCD रखा गया है ताकि उस मशीन की एक झलक देख सकें ''जो मेरे उपचार में मदद कर सकती है,'' वह मुस्कुराती है। नर्स रमुथाई मुझे बाद में बताती है, ''शोभना के कैंसर का कोई इलाज नहीं है और उसके पास कुछ ही वर्ष का समय बचा है। इस नई मशीन की मदद से हम उसके दर्द का कारण समझ सकते है और उसे तुरंत राहत प्रदान करने के लिए एक इंजेक्शन लगा सकते है। चूंकि यह मशीन गतिशील है इसलिए शोभना जैसे मरीजों को जांच के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का हमारा काम भी कम हो जाएगा।''

परीक्षण के लिए मशीन के अंदर नमूने रखते हुए, जैव रसायन विभाग की प्रमुख डॉ आर शांति

शोभना, नर्स रामुथाई के साथ प्रशामक देखभाल इकाई में प्रतीक्षा करती हुई।

बाएं से: गोपीनाथ, एसआर बालाकृष्णन, डॉ आर जयंती, ओमांदुरार सरकारी अस्पताल और कॉलेज की डीन, नल्लम्मई, डॉ कुमार और डॉ शांति, हरीशकुमार, DRFC अंबालावनन एम, राघव राव, PDG अभिरामी रामनाथन,डॉ पी श्रीनिवासन, विनोद सरोगी और सूर्यनारायण राव।

यह मशीन न केवल विभिन्न अंगों में रक्त प्रवाह की दिशा और उसके वेग का पता लगाती है बल्कि यह सुरक्षित, किफ़ायती, वजन में हल्की और अधिक सटीक है। इसने एंजियोग्राफी जैसे महंगे और चीर-फाड़ युक्त इलाज के तरीकों की जगह ले ली है।

विशेष रूप से इस स्व-चलित जैव रसायन विश्लेषक के साथ काम करने को लेकर रोमांचित है। वह बताती है: ''हमारा 400 बिस्तरों वाला एक सरकारी सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल है। अब हम एक ही स्थान पर अनेक परीक्षण (विभिन्न जाँचों के लिए लगभग 200 नमूने) कर सकते है, अधिक समय लेने वाली परीक्षण और विश्लेषणात्मक प्रक्रियाओं में कटौती कर सकते है और विश्वसनीय नैदानिक जानकारी प्राप्त कर सकते है। बेशक, बढ़ती चिकित्सा संपत्तियों के साथ रिपोर्टिंग और गुणवत्ता देखभाल बनाए रखने की अतिरिक्त आवश्यकताएं भी आती है। लेकिन हम चुनौती के लिए तैयार है।''

प्रेस कॉन्फ्रेंस में स्वास्थ्य मंत्री सुब्रमण्यन ने क्लब से ''अच्छा काम करते रहें और समुदाय को विकसित करने में हमारी मदद करने का अनुरोध किया। उन्नत चिकित्सा उपकरणों के इस उपहार से अनगिनत जरूरतमंद रोगियों को लाभ होगा।

यह हाई-टेक मशीनें 23 लाख की लागत से आई है, जो वैश्विक अनुदान (GG) द्वारा समर्थित है, जिसके लिए रोटरी क्लब कराची, रोटरी क्लब हिल्स केलीविल, रोटरी क्लब निपोगोन, रोटरी क्लब मेडिसिन हैट, रोटरी क्लब कैटाराक्वी किंग्टन साझेदार है, और इसमें क्लब के सदस्य PDG अभिरामी रामनाथन का 18,741 डॉलर का प्रत्यक्ष उपहार, 3,000 डॉलर का DDF शामिल है," क्लब के पूर्व अध्यक्ष डॉ पी श्रीनिवासन कहते है। उन्होंने क्लब के सदस्यों एस आर बालकृष्णन, विनोद सरोघी और ए जी बालाजी के साथ इस वैश्विक अनुदान पर काम करना तब शुरू किया जब, PDG अभिरामी रामनाथन ने इस साल की शुरुआत में कुछ अन्य चिकित्सा उपकरणों के उद्घाटन के लिए अस्पताल का दौरा किया और अस्पताल के डीन ने उनसे इस विशेष उपकरण हेतु अनुरोध किया। हमने DG जे श्रीधर से संपर्क किया और उन्होंने DDF प्रदान करके हमारा समर्थन किया।''

PDG अभिरामी रामनाथन ने अस्पताल की डीन डॉ आर जयंती से कहा, ''हमने आपको वो दिया जो आपने मांगा था और यहाँ पर हमारा काम खत्म हो गया, अब आपको यह सुनिश्चित करना है कि इन मशीनों का उपयोग केवल वंचितों के लिए किया जाए। किसी भी गरीब व्यक्ति को पैसे की कमी के कारण गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा प्राप्त करने से नहीं रोका जाना चाहिए।

डॉ जयंती ने आगे कहा कि ''हमारे अधिकांश रोगी दैनिक वेतन भोगी, घरों में काम करने वाले कर्मचारी और अत्यंत गरीब पृष्ठभूमि के लोग है, जो गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा का खर्च नहीं उठा सकते। इस उदार उपहार को प्रदान करने के लिए हम RCMC के बहुत आभारी है।

उन्होंने आगे एक रेडियोफ्रीक्वेंसी एब्लेशन मशीन का भी अनुरोध किया; ''इस उपकरण के जुड़ने से हमारी उपशामक देखभाल इकाई पूर्ण एवं व्यापक हो जाएगी।'' जिसके लिए रामनाथन ने कहा, ''हम आपके लिए इसे लाएंगे। जल्द ही एक और उद्घाटन समारोह आयोजित करने के लिए तैयार हो जाइए।''

चित्र: किरण ज़ेहरा

बेंगलुरु में RCC यों की अद्भुत सेवा

जयश्री

यहाँ एक RCC है जिसकी सामुदायिक सेवा उतनी ही सार्थक है जितनी रोटरी क्लब की। रोटरी क्लब बैंगलोर विद्यारण्यपुरा, रो ई मंडल 3190, द्वारा प्रायोजित RCC बैंगलोर विद्यारण्यपुरा (RCCV) को कोविड 19 की दूसरी लहर के शुरुआती दिनों के दौरान गठित किया गया था जब 15 सेवा-भावी लोगों की एक टीम ऑक्सीजन की आपूर्ति और स्थापना परियोजना के लिए एक साथ आई थी ताकि ऑक्सीजन की बढ़ती मांग की आपूर्ति की जा सकें। उन्होंने 80 रोगियों को ऑक्सीजन की आपूर्ति प्रदान करने के लिए दो महीनों तक लगातार काम किया और आशा कार्यकर्ताओं को N-95 मास्क एवं ऑक्सीमीटर के साथ समर्थन दिया। ''हमने ऑक्सीजन सिलेंडर को ठीक करने और मास्क प्रदान करने के लिए कोविड रोगियों के घरों का दौरा किया। हम में से अधिकांश लोग पाज़िटिव हुए मगर शुक्र है कि अंत में हम सभी ठीक हो गए,'' RCCV के अध्यक्ष मोहम्मद सिकंदर कहते है। एक प्रशंसा पत्र के साथ कोविड राहत कार्य के लिए WHO द्वारा टीम की सराहना की गई और उन्हें विश्व स्वास्थ्य दिवस (7 अप्रैल, 2022) के लिए स्विट्ज़रलैंड के जिनेवा WHO मुख्यालय में आमंत्रित किया गया। महामारी के कारण यात्रा प्रतिबंध न होता तो उनमें से आठ जाने के लिए पूरी तरह से तैयार थे, वह कहते है।

मई 2021 को 8 महिलाओं सहित 15 सदस्यों के साथ इस RCC का गठन किया गया जिसका श्रेय फिलिप्स जॉन, मूल क्लब के IPP, और एक रोटेरियन, बी श्रीनिवास बाबू, को जाता है जो दिल्ली की WHO संचालन समिति के प्रमुख है। यह RCC

RCC बेंगलुरू विद्यारण्यपुरा के सदस्य और अध्यक्ष मोहम्मद सिकंदर पौधारोपण करते हुए।

सामुदायिक सेवा को लेकर इतना उत्साहित है कि यह रोटरी क्लबों का एक प्रतियोगी बन गया है, मंडल RCC अध्यक्ष पॉल मुंडकल कहते है।

परियोजनाएं

यह RCC वर्तमान में कर्नाटक के पश्चिमी तट पर कैगा परमाणु ऊर्जा संयंत्र के पास स्थित एक गांव की हलक्की जनजाति के लिए कल्याणकारी कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। ''300,000 की मजबूत आबादी वाली यह जनजाति अपनी अनूठी भाषा, परंपराओं और जीवन शैली का पालन कर रही है। लेकिन इन आदिवासियों को प्रशासनिक और स्वास्थ्य संबंधी सहायता की आवश्यकता है। यहाँ पर WHO हमारी परियोजनाओं को वित्तपोषित करेगा,'' सिकंदर कहते है।

यह टीम विद्यारण्यपुरा और उसके आसपास के इलाकों में नियमित रूप से स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित करती रहती है। मासिक धर्म स्वच्छता और संबंधित अपशिष्ट निपटान पर जागरूकता अभियान और वंचित महिलाओं एवं किशोरियों के बीच पुन: प्रयोज्य सैनिटरी नैपकिन का वितरण स्वास्थ्य शिविरों का हिस्सा है। ''इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि हम जेनेरिक दवाओं के बारे में लोगों को जागरूक कर रहे है जो ब्रांडेड दवाओं की लागत से पाँच गुना सस्ती और उतनी ही प्रभावी होती है। रक्तचाप, मधुमेह आदि के लिए नियमित दवाएं लेने वाले लोग अब काफी बचत करने में सक्षम है,'' वह कहते है।

डॉ राजकुमार नेत्र बैंक, नारायण नेत्रालय, रमैया मेडिकल कॉलेज और ESI मेडिकल कॉलेज के सहयोग से एवं 'पुनर्भाव' अभियान के माध्यम से यह टीम चिकित्सा अनुसंधान के लिए नेत्र और देह दान को बढ़ावा देती है। ''हमारे अभियानों से नारायण नेत्रालय को 300 नेत्र दाता मिले है।''

'अपथबंधव' कार्यक्रम में एक रोटरी हेल्पलाइन और एक डीफिब्रिलैटर युक्त एम्बुलेंस शामिल है। इन सदस्यों ने स्वास्थ्य आपात स्थितियों से निपटने के लिए पराचिकित्सा प्रशिक्षण प्राप्त किया है और जरूरत के समय स्थानीय डॉक्टर भी मदद करते है। इस RCC का 'मारपू' कार्यक्रम ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए प्रेरक कार्यशालाएं आयोजित करता है।

सिकंदर 2008 में बेंगलुरु स्थानांतरित होने तक आठ साल के लिए RCC हैदराबाद ईस्ट (रो ई मंडल 3150) के सदस्य रहे। ये RCC सदस्य उत्तर-पश्चिम बेंगलुरु की एक आवासीय-वाणिज्यिक कॉलोनी विद्यारण्यपुरा में पड़ोसी है। ''जब मैं यहाँ आया तो उनमें से ज्यादातर को रोटरी के बारे में अधिक जानकारी नहीं थी। मैंने उनके साथ हमारे व्हाट्सएप ग्रुप पर रोटरी परियोजनाओं, उपनियमों आदि को साझा किया और उन्होंने भी रोटरी में रुचि दिखाई। फिर हमने अध्ययन शुरू किया कि नाइजीरिया और जापान जैसे देशों में RCC मॉडल कैसे सफल रहे है। और फिलिप्स जॉन ने RCC के गठन हेतु अंतिम कदम उठाया,'' वह कहते है।

> हम जेनेरिक दवाओं के बारे में लोगों को जागरूक कर रहे है जो ब्रांडेड दवाओं की लागत से पाँच गुना सस्ती और उतनी ही प्रभावी होती है।
>
> **मोहम्मद सिकंदर**
> RCCV के अध्यक्ष

चेन्नई के पास मछली पकड़ने के गांव में बच्चों के साथ ठउउत सदस्य क्लिफोर्ड।

वित्तपोषण

समर्थन के मामले में मूल क्लब ने अच्छा सहयोग किया है लेकिन RCC परियोजनाओं के लिए अपनी कंपनी के CSR के माध्यम से बाबू का बहुत बड़ा योगदान रहा है। ''वह एक कपास निर्माता/निर्यातक है, बहुत ही विचारशील एवं अद्भुत व्यक्ति है। जब हमारे अहम् की बात आ जाती है, तो वह सुनिश्चित करते है कि कोई भी परेशान न हो। हमारे एक RCC सदस्य ने महामारी के दौरान अपनी नौकरी खो दी थी। बाबू ने विद्यारण्यपुरा में उनके लिए किराने की दुकानों की एक श्रृंखला स्थापित की, उन्हें वेतन के साथ मुनाफे में 10 प्रतिशत हिस्सा भी दिया,'' सिकंदर मुस्कराते है।

सदस्यों की औसत आयु लगभग 50 है और उनमें से अधिकांश लोग उद्यमी है। ये परिवार कल्याणकारी गतिविधियों में भी शामिल होते है। ''हमारे सदस्यों के जीवनसाथी मासिक धर्म स्वच्छता कार्यक्रमों में भी भाग लेते है और महिलाओं एवं

लड़कियों से बात करते है। बच्चे भी इस परियोजना में हाथ बंटाते है। वे चिकित्सा शिविरों में स्वेच्छा से काम करते है और स्कूलों में किताबें और लेखन सामग्री वितरित करते है।'' सदस्य हर शनिवार को आधिकारिक तौर पर मिलते है और कार्यक्रमों पर चर्चा करने या कुछ बदलाव करने के लिए ऑनलाइन आते है। बच्चों और जीवनसाथियों को मिलकर ''हम 30-35 लोग है,'' वह कहते है।

यह क्लब अपनी परियोजनाओं को केवल अपने इलाके या किसी विशेष क्षेत्र तक सीमित नहीं रखता है। जब एक सदस्य चेन्नई के पास स्थित कलपक्कम की यात्रा पर थे तो वह मछुआरों के कुपोषित बच्चों के एक समूह से मिले जो फर्श पर रेखाएं खींचकर और सिक्कों की जगह कंकड़ का उपयोग करके लूडो खेल रहे थे। ''जब उन्होंने हमें यह बताया तो हमने तुरंत उन्हें बोर्ड गेम, खेल सामग्री, किताबें और एक अलमारी प्रदान की।'' हाल ही में, क्लब ने अपने मूल क्लब के साथ मिलकर ग्रामीण बेंगलुरु के एक सरकारी हाई स्कूल को बुनियादी वस्तुएं प्रदान की।

RCCV सदस्य एग्नेस विजया एक गांव में किशोरियों को मासिक धर्म स्वच्छता के बारे में शिक्षित करती हैं।

स्मार्ट कक्षाएं

मुंडकल कहते है कि मंडल के 60 RCCयों में से छह बहुत सक्रिय है। उनमें से एक - RCC बेगलीहोसाहल्ली - ने अपने मूल रोटरी क्लब बैंगलोर साउथ की मदद से एक वैश्विक अनुदान परियोजना भी निष्पादित की।

इस RCC ने कक्षा 1 से 12 तक को प्री-लोडेड सिलेबस के साथ आठ स्मार्ट कक्षाएं और शहर के बाहरी इलाके के एक पिछड़े गांव बेगलीहोसहल्ली के ग्रीन वैली स्कूल को बिजली प्रदान करने हेतु सौर पैनल प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। RCC के अध्यक्ष और स्कूल के न्यासी मुनीस्वामी कहते है कि इसका गठन 2019 में हुआ था, जब मूल रोटरी क्लब के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ जयप्रकाश स्कूल के अपने दौरे के दौरान छात्रों के समग्र प्रदर्शन से प्रभावित हुए थे। कुल परियोजना लागत ₹27 लाख थी जिसमें से ₹20 लाख वैश्विक अनुदान के माध्यम से जुटाए गए थे और ₹7 लाख मूल क्लब द्वारा दान किए गए थे। 2006 में मुनीस्वामी और उनके तीन दोस्तों द्वारा स्थापित यह स्कूल आसपास के 72 गांवों के 1,200 बच्चों को शिक्षित कर रहा है। बच्चों को स्कूल लाने ले जाने के लिए बसें लगी हुई है।

वह आगे कहते है, ''हम लगातार 10वीं की बोर्ड परीक्षा में शत-प्रतिशत परिणाम दे रहे है। RCC उच्च कक्षाओं के बच्चों के लिए RYLA और करियर परामर्श सत्र आयोजित करता है।'' ■

***बाएं से दाएं:** रोटेरियनस वी बाबू, सुरेश, रोटरी क्लब बैंगलोर साउथ के पूर्व अध्यक्ष बी एस जय प्रकाश, एच आर सतीश, रोटेरियन बाबू नागेंद्र, RCBS अध्यक्ष राजेश्वरी सुनील, रोटेरियन उषा डोंगरे, एच वी वीरेश, क्लब सचिव एम आर शिवराम, कर्नाटक विज्ञान परिषद जिला समन्वयक मंजुला भीमा राव और RCC बेगलीहोसाहल्ली के चेयरमैन बी मुनीस्वामी ग्रीन वैली स्कूल, कोलार में।*

पोलियो मुक्त होने का अंतिम पड़ाव

राजेन्द्र साबू

आधुनिक पीढ़ी को पोलियो को लेकर भारत द्वारा किए गए लंबे संघर्ष और उस पर हासिल जीत के बारे में पता नहीं होगा। 13 जनवरी, 2011 की बात है, जब हावड़ा की दो साल की रुखसार पोलियो की आखिरी शिकार बनी थी। दक्षिण एशिया के सभी देश भारत से 10 साल पहले ही पोलियो मुक्त हो चुके थे।

1977 में रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के नवनिर्वाचित अध्यक्ष सर क्लेम रेनॉफ ने *रीडर्स डाइजेस्ट* में चेचक के उन्मूलन के बारे में एक लेख देखा और सोचा कि क्या दुनिया भर से एक और बीमारी का उन्मूलन किया जा सकता है। उन्होंने पोलियो को बच्चों के लिए सबसे बड़ा खतरा माना। 1979 में, रोटरी ने डॉ अल्बर्ट सबिन द्वारा विकसित OPV (ओरल पोलियो वैक्सीन) की मदद से 6 मिलियन फिलिपिनो बच्चों का पोलियो टीकाकरण शुरू किया। 1985 में बड़े रूप में कार्य तब शुरू हुआ जब WHO CDC (अमेरिका का रोग नियंत्रण केंद्र) इसमें शामिल हुआ और बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन एक महत्वपूर्ण साझेदार बना।

यद्यपि विश्व स्वास्थ्य सभा ने 1988 में पोलियो उन्मूलन को अपना लिया था, फिर भी 1993-94 तक भारत में कुछ भी नहीं हुआ था। इसके बाद, दिल्ली के तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री डॉ हर्षवर्धन द्वारा इसपर कार्यवाही तेज कर दी गई और उन्होंने पांच या उससे कम उम्र के सभी बच्चों को एक दिन में टीका लगाने की योजना बनाई। यह प्रभावी रहा और इसे NID (राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस) के रूप में जाना जाने लगा और यह अभियान पूरे भारत में चलाया गया। इसका श्रेय केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री सुषमा स्वराज, अंबुमणि रामदोस और गुलाम नबी आजाद को जाता है। फिर भी, अल्पसंख्यक समुदायों ने भारी विरोध किया। उन्हें रोटरी के पहुँच कार्यक्रम द्वारा मनाया गया जिसमें उनके बच्चों के लिए नि:शुल्क पोलियो सुधारात्मक सर्जरी और शुरूआत में टीकों के लिए सरकार द्वारा आर्थिक रूप से समर्थन दिया जाना भी शामिल था। भारत में WHO और यूनिसेफ के पोलियो कार्य को रोटरी वित्तपोषित करती रही है।

26 मार्च 2014 को, WHO ने भारत को पोलियो मुक्त प्रमाणित किया और दक्षिण एशिया को इस बीमारी से मुक्त घोषित किया। अगस्त 2020 में नाइजीरिया पोलियो मुक्त हुआ। 2021 में इस खतरनाक पोलियो वायरस के संचरण को इतिहास में अब तक के सबसे निचले स्तर पर दर्ज किया गया, जिसमें एक मामला पाकिस्तान में और चार अफगानिस्तान में सामने आए थे।

हालांकि भारत 2011 से पोलियो वायरस से मुक्त है, लेकिन उसे अपने पड़ोसी देशों पाकिस्तान और अफगानिस्तान की चिंता है। पाकिस्तान के पास बीमारी का पता लगाने की पूर्ण व्यवस्था है। अफगानिस्तान के लिए, अच्छी खबर यह है कि नई सरकार पोलियो टीकाकरण के पक्ष में है, और 21 अक्टूबर 2021 को तालिबान सरकार ने डोर-टू-डोर वैक्सीन कार्यक्रम को फिर से शुरू किया।

उम्मीद है कि 2026 तक दुनिया को पोलियो मुक्त प्रमाणित किया जाएगा। तब तक, धन जुटाने की आवश्यकता है, कार्यक्रम की थकान को नज़रअंदाज करना होगा और रोटरी इसके पक्षधर की भूमिका निभाते हुए हर साल 1 मिलियन डॉलर एकत्रित करती है और इसकी प्रगति पर नज़र रखती है। पोलिओ पर हासिल अंतिम जीत से दुनिया को पर्याप्त वित्तीय और मानवीय लाभांश मिलेगा जिसमें कोई और टीका एवं पुनर्वास लागत शामिल नहीं होगी। यह एक स्वर्णिम क्षण होगा जब रोटरी का पोलियो मुक्त विश्व को लेकर 1978 में देखा गया सपना साकार होगा। एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा था, 'अगर चार चीजों का पालन किया जाए - एक महान लक्ष्य, ज्ञान की प्राप्ति, कड़ी मेहनत और लगन - तो सब कुछ हासिल किया जा सकता है।'

लेखक पूर्व रो ई अध्यक्ष है

© *The Tribune*

एक मज़ेदार आभासी युवा विनिमय कार्यक्रम

सचिन जम्मा

मैक्सिकन प्रतिभागियों के साथ ऑनलाइन दिवाली मनाने से लेकर उनके साथ योग करने और भारतीय एवं मैक्सिकन दोनों तरह के व्यंजन तैयार करने तक, यह आभासी युवा विनिमय कार्यक्रम अप्रत्याशित रूप से बहुत मजेदार था।

प्रिय रोटेरियनों, मैं आपके साथ रो ई मंडल 3132 के आभासी रोटरी युवा विनिमय (RYE) अध्यक्ष के रूप में मेरा पहला अनुभव साझा करने को लेकर रोमांचित हूँ। मुझे यह पद एक साल से पहले दिया गया था। पहले तो मैं हताश था क्योंकि कोविड महामारी के कारण हम एक भी युवा विनिमय लक्ष्य हासिल नहीं कर पाए। रोटरी अंतर्राष्ट्रीय द्वारा भौतिक आदान-प्रदान करने की अनुमति नहीं थी और व्यावहारिक रूप से दुनिया भर के RYE अध्यक्षों में से कोई भी आभासी RYE कार्यक्रमों को लेकर उत्साहित नहीं था।

लेकिन मैं कोशिश करता रहा; मैंने कई ईमेल लिखें और अंत में मुझे मंडल 4170 की RYE अध्यक्ष, एरिका से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली। आखिरकार कोई तो हमारे साथ जुड़ने के लिए सहमत हुआ। मैं उत्साहित था। अन्य सभी RYE सहयोगियों की तरह, हम दोनों के लिए आभासी RYE एकदम नया था। कार्यक्रम के संचालन के लिए कोई स्पष्ट दिशा-निर्देश नहीं थे। लेकिन हम दृढ़ थे। दोनों तरफ किए गए एक महीने के परीक्षण कार्यक्रम के बाद, हमनें साथ आगे बढ़ने का निर्णय लिया। चूंकि यह कार्यक्रम नया था, इसलिए आवेदन प्राप्त करना आसान नहीं था। किसी तरह, मैं तीन आवेदन प्राप्त करने में कामयाब रहा - कस्तूरी, करण और आर्यन एवं एरिका ने उन्हें तीन मैक्सिकन लड़कियों फ्रिडा, कैमी और गिसेल के साथ मिलाया।

हमने भौतिक कार्यक्रम की नकल करने के लिए अपने मंडल 3132 में एक अंतर्गामि कार्यक्रम की योजना बनाई और मैक्सिकन छात्रों को एक समान अनुभव देने के बारे में सोचा। लेकिन तीन बहुत ही छोटी संख्या थी; इसलिए, मैंने अपने मंडल के छात्रों से सभी आभासी कार्यक्रमों में शामिल होने का अनुरोध किया। दिलचस्प बात यह है कि इस युवा विनिमय कार्यक्रम में भाग लेने वाले कुछ रोटेरियन भी सभी आभासी बैठकों

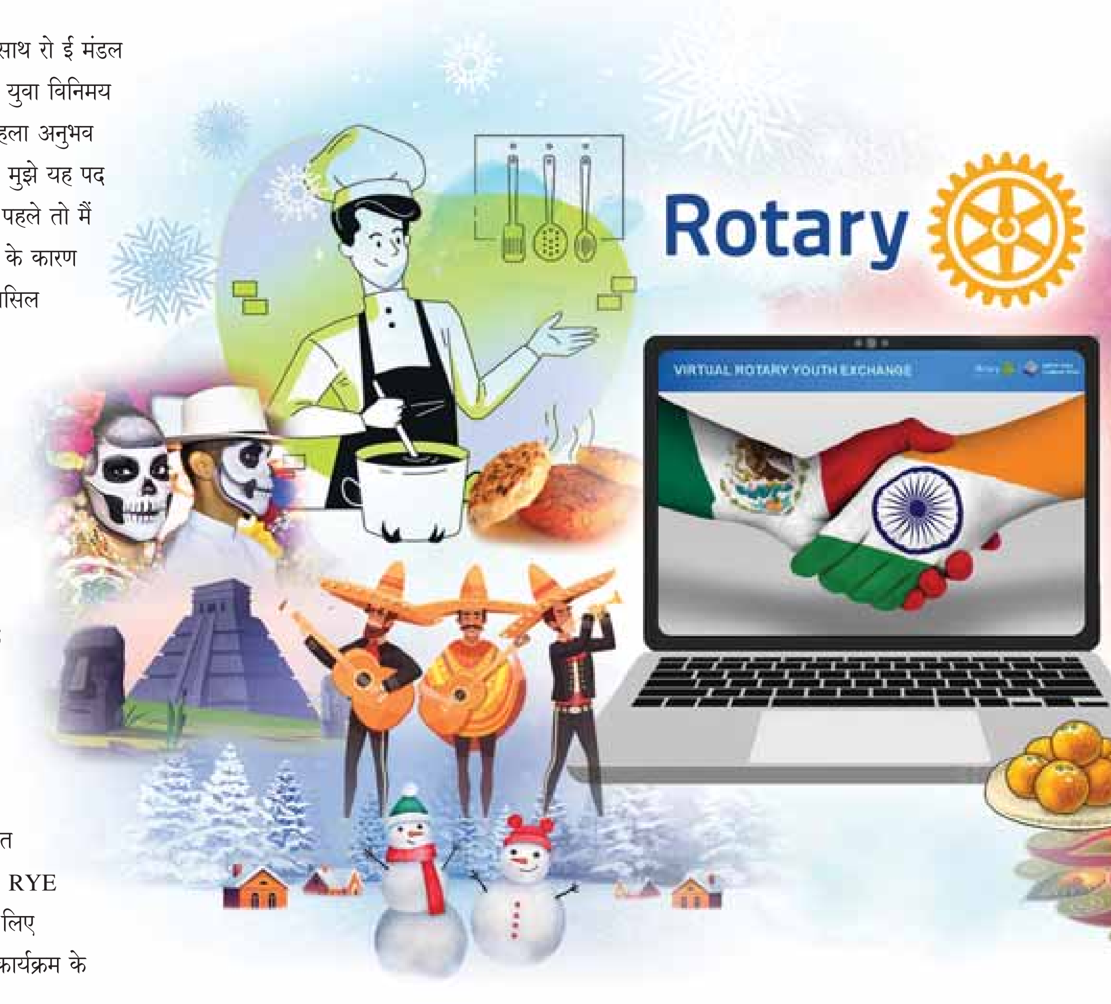

में शामिल होने के लिए सहमत हुए। वह मज़ेदार था! यह RYE और रोटरी फ्रेंडशिप एक्सचेंज का मिश्रण बन गया। स्वागत बैठक में, मैक्सिकन छात्रों ने मेक्सिको और उनके रोटरी मंडल 4170 के बारे में एक पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन दिया।

मैंने दीपावली उत्सव के दौरान जान-बूझकर इस अंतर्गामि कार्यक्रम की योजना बनाई थी। मैक्सिकन छात्रों ने अपने भारतीय मेजबान परिवारों के साथ दिवाली के सभी रंगों और चमक का आनंद लिया। वे विभिन्न अनुष्ठानों में शामिल हुए, रंगोली बनाने में भाग लिया, दीये जलाए और विभिन्न मीठे व्यंजनों का आनंद लिया सब कुछ आभासी रूप से। छात्रों के साथ मेक्सिको के रोटेरियनों ने हमारे दीपावली के त्यौहार और भारतीय संस्कृति पर आयोजित किए गए सूचनात्मक सत्रों का आनंद लिया। भारतीय रोटेरियनों ने छात्रों के साथ-साथ कुछ मैक्सिकन रोटेरियनों को भारतीय मिठाई, शाही टुकड़ा और एक मसालेदार व्यंजन, मूंग चीला, बनाना सिखाया।

मैक्सिकन छात्रों ने अपने भारतीय मेजबान परिवारों के साथ दिवाली के सभी रंगों और चमक का आनंद लिया। वे विभिन्न अनुष्ठानों में शामिल हुए, रंगोली बनाने में भाग लिया, दीये जलाए और विभिन्न मीठे व्यंजनों का आनंद लिया सब कुछ आभासी रूप से।

अद्भुत Zoom प्लेटफॉर्म की वजह से दोनों तरफ के छात्रों एवं रोटेरियनों ने मिलकर दोनों व्यंजनों को पूर्णता के साथ तैयार किया। तीन विशेष आभासी बैठकों के अंत में, भाग लेने वाले सभी छात्र और रोटेरियन एक भारतीय योग शिक्षक के कुशल मार्गदर्शन में बुनियादी योग और प्राणायाम कर सकें। उन्होंने एक प्रतिष्ठित नृत्य शिक्षक से भारतीय नृत्य की मूल बातें भी जानी। मैक्सिकन छात्रों ने वास्को डी गामा के रोटरेक्ट क्लब की मदद से गोवा के आभासी दौरे का आनंद लिया। मैक्सिकन छात्रों द्वारा अपनी अंतर्गामि यात्राओं के बारे में अनुभव साझा करने के साथ यह अंतर्गामि कार्यक्रम समाप्त हुआ। सभी छह छात्रों को मंडल 3132 के भागीदारी प्रमाण पत्र के साथ सम्मानित किया गया। चुनिंदा बैठकों में दोनों ओर के मंडल नेतृत्वकर्ता शामिल हुए।

मंडल 3132 के छात्रों का निर्गामी दौरा भी उतना ही दिलचस्प था। मैक्सिकन RYE अध्यक्ष एरिका ने सभी छह छात्रों के लिए एक अद्भुत कार्यक्रम की योजना बनाई थी। उत्साही स्थानीय रोटेरियनों की वजह से सभी ने Zoom पर आसानी से मैक्सिकन कोकाडा और एनचिलादास बनाना सीखा। मैक्सिकन इतिहास, 'मृतकों के दिन' की परंपरा के बारे में जानना काफी दिलचस्प था।

आभासी RYE बढ़िया है। इसके विभिन्न कारण है। कोई यात्रा नहीं, कोई जोखिम नहीं, व्यावहारिक रूप से कोई परेशानी नहीं। यह उतना ही मजेदार है जितना कि एक व्यक्तिगत विनिमय।

पिनाटा तैयार करके क्रिसमस मनाना हम सभी के लिए बहुत मजेदार था।

आभासी RYE के समापन के समय, छात्र आंसू बहा रहे थे और रोटेरियन भी द्रवित थे। लेकिन जुलाई 2022 में भौतिक आदान-प्रदान के आश्वासन ने बैठक का मिजाज़ बदल दिया। उपस्थित रोटेरियनों द्वारा इन दोनों मंडलों के बीच न केवल एक RYE बल्कि एक रोटरी फ्रेंडशिप एक्सचेंज की भी योजना बनाई गई। रोटरी क्लब सोलापुर नॉर्थ, मंडल 3132, और रोटरी क्लब लास लोमास, मंडल 4170, के बीच हुआ एक दोहरा क्लब समझौता इस आभासी RYE के लिए सोने पर सोहागा था। कुल मिलाकर, यह न केवल RYE छात्रों के लिए बल्कि दोनों तरफ के मंडलों के रोटेरियनों एवं परिवारों के लिए जीवन भर का एक अद्भुत, अद्वितीय और यादगार अनुभव था।

अब मैं एक अलग व्यक्ति बन चुका हूँ! मुझे लगता है कि आभासी RYE बढ़िया है। इसके विभिन्न कारण है। कोई यात्रा नहीं, कोई जोखिम नहीं, व्यावहारिक रूप से कोई परेशानी नहीं। यह उतना ही मजेदार है जितना कि एक व्यक्तिगत विनिमय। निम्न सामाजिक-आर्थिक तबके के छात्र भी इसमें भाग लेकर इसका आनंद ले सकते है क्योंकि इसमें ना के बराबर खर्च होता है। इसलिए रोटरी अंतर्राष्ट्रीय से मेरा अनुरोध है कि जुलाई 2022 से व्यक्तिगत विनिमय शुरू करने के बाद भी आभासी विनिमय को जारी रखा जाएं।

लेखक रोटरी क्लब सोलापुर नॉर्थ RID 3132 के सदस्य हैं।

चित्रण: संजय डी

RCB ने दृष्टिहीनों के लिए शतरंज प्रतियोगिता की मेजबानी की

किरण ज़ेहरा

क्या आप शतरंज खेलते है? इसे आंखों पर पट्टी बांधकर खेलने की कोशिश करें,'' इस लेख पर जानकारी साझा करते हुए शशिधर के एम कहते है। हर बार शतरंज टूर्नामेंट के लिए निकलते समय वह इसी अभ्यास का पालन करने की कोशिश करते है कि पूरे बोर्ड में घोड़े को एक वर्ग से दूसरे वर्ग तक जल्दी से कैसे पहुंचाया जाए। ''उदाहरण के लिए, मेरे घोड़े के लिए B1 से G8 तक जाने का सबसे अच्छा तरीका कौन सा है? यह मुझे अपने खेल की तैयारी में मदद करता है, नेत्रहीन शतरंज खिलाड़ी कहता है,'' जिन्होंने हाल ही में क्लब के ऑडिटोरियम रोटरी हाउस ऑफ फ्रेंडशिप में रोटरी क्लब बैंगलोर (RCB), RID 3190, द्वारा आयोजित एक शतरंज टूर्नामेंट जीता है।

नेत्रहीन खिलाड़ी के लिए खेल मानसिक चित्रण, ''कल्पना, गणना और स्पर्श के बारे में होता है। मोहरों पर लगी पिन के स्पर्श से खिलाड़ी सफेद मोहरों से काली को अलग कर पाता है और यह भी जान पाता है कि मोहरा प्यादा है, हाथी है, ऊंट है, घोड़ा है, वज़ीर है या राजा है।'' एक विशेष शतरंज बोर्ड का उपयोग किया जाता है जिसमें ब्रेल बोर्ड के वर्ग उठे हुए होते है और उन पर विभिन्न वर्गों की पहचान के लिए डॉट्स होते है। इस प्रकार खिलाड़ी के दिमाग में बोर्ड की स्थिति की एक स्पष्ट तस्वीर बन पाती है। और एक विशेष घड़ी प्रत्येक खिलाड़ी द्वारा हर एक चाल के लिए लिए गए समय को नोट करती है।

नेत्रहीनों के लिए कर्नाटक राज्य शतरंज संघ के सहयोग से एक दिवसीय स्पीड शतरंज टूर्नामेंट

नेत्रहीनों के लिए विशेष रूप से बनाई गई शतरंज की बिसात।

हमनें रोटरी क्लब बैंगलोर अबिलिटीस (RBA) की स्थापना की जो शायद दुनिया के उन चुनिंदा रोटरी क्लबों में से एक है जिसके सदस्य विकलांग है और वे विकलांगों के लिए काम कर रहे है!

का आयोजन किया गया था, और बेंगलुरु, रायचूर, मांड्या, बागलकोट, मैसूरु और अन्य शहरों से आए 34 खिलाड़ियों ने स्विस लीग प्रारूप में एक-दूसरे के खिलाफ अपने कौशलों का प्रदर्शन किया। यहां कोई भी खिलाड़ी हटाया नहीं जाता और विजेता को दिए गए समय में सर्वाधिक चाल चलने के आधार पर चुना जाता है। सभी प्रतिभागियों को ब्रेल में एक प्रमाण पत्र दिया गया, जबकि 10 विजेताओं को कुल ₹25,000 के नकद पुरस्कार दिए गए।

संदीप ओहरी, RCB के व्यावसायिक सेवा प्रमुख कहते है, ''शतरंज एकमात्र ऐसा खेल है जिसे दृष्टिहीन सामान्य लोगों के साथ खेल सकते है। न केवल इसे देखना दिलचस्प होता है, बल्कि जिस सटीकता के साथ वे खेलते है वह दिमाग चकरा देता है।'' रोटरी की DEI नीति का पालन करते हुए, उनका क्लब सक्रिय रूप से नेत्रहीनों के लिए समावेशीता को बढ़ावा दे रहा है। ''हमनें रोटरी क्लब बैंगलोर अबिलिटीस (RBA) की स्थापना की जो

बाएं: RCB के पूर्व अध्यक्ष रंगा राव ने (बाएं से) हरि प्रिया गिरीश, कल्याणी तालुकदार, वोकेशनल सर्विस चेयर संदीप ओहरी, क्लब सचिव गौरी ओझा, गिरीश रामनाथन, आरिया ओहरी और डॉ दयाप्रसाद कुलकर्णी की उपस्थिति में टूर्नामेंट के विजेता शशिधर के एम को ब्रेल प्रमाणपत्र सौंपते हुए।

शायद दुनिया के उन चुनिंदा रोटरी क्लबों में से एक है जिसके सदस्य विकलांग है और वे विकलांगों के लिए काम कर रहे है!

क्लब ने RBA के सदस्यों के लिए लाइफस्टाइल ब्रेल मैगाज़िन का एक वार्षिक सब्सक्रिप्शन भी खरीदा है। ''पाठ्यक्रम और किसी विषय की पुस्तकें मौजूद है, लेकिन नेत्रहीनों की जीवन शैली पत्रिकाओं या मनोरंजक पुस्तकों तक पहुंच नहीं है।'' जब क्लब की नज़र *व्हाइट प्रिंट* पर पड़ी, जो मनोरंजन, नेतृत्व, कल्पना, समाचार, खेल और वर्तमान मामलों पर विभिन्न प्रकार के लेखों के साथ एक 64-पन्नों की एक अंग्रेजी मासिक पत्रिका है, ''जो वास्तव में नेत्रहीनों को एक सुखद अनुभव प्रदान करती है, तब हमनें RBA सदस्यों के लिए इसका सब्क्रिप्शन खरीदा। उन्होंने पूरे कर्नाटक में 25 संस्थानों की पहचान की जिन्हें 1,30,000 की लागत से एक साल तक *व्हाइट प्रिंट* की कई प्रतियां दी जाएंगी जिससे लगभग 1,000 नेत्रहीन लोगों को लाभ होगा।

शतरंज टूर्नामेंट के समाप्त होने के बाद, पत्रिका की प्रतियां RBA अध्यक्ष अरविंद को सौंप दी गईं, जो कहते है, ''यह मनोरंजक है, जिन लोगों से हम मिलते है उनसे चर्चा करने के लिए हमारे पास अधिक विषय होंगे और हमारे समुदाय के लिए विशेष रूप से बनाई गई किसी चीज़ के होने की खुशी अवर्णनीय है।'' ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

कटक में सुविधा से वंचितों के लिए एक डायलिसिस सेंटर

टीम रोटरी न्यूज़

IPDG सौम्या रंजन मिश्रा, क्लब के सदस्यों के साथ, नवनिर्मित डायलिसिस सेंटर में।

तीव्र गुर्दे की बीमारी वाले रोगियों की बढ़ती संख्या का इलाज करने के लिए रोटरी क्लब कटक, रो ई मंडल 3262 द्वारा 'जेपीएम रोटरी आई हॉस्पिटल' में दो मशीनों वाला एक डायलिसिस सेंटर स्थापित किया गया। क्लब के प्लेटिनम जुबली समारोह के हिस्से के रूप में पिछले साल ₹34 लाख की लागत से केंद्र के लिए काम शुरू किया गया था। इसे डीडीएफ से ₹10 लाख मिले और शेष राशि सदस्यों द्वारा इकठ्ठा की गई। PRID भरत पांड्या ने अपने आभासी संबोधन में क्लब को एक साल के भीतर परियोजना को पूरा करने के लिए बधाई दी। आईपीडीजी सौम्य रंजन मिश्रा, पीडीजी एबी मोहापात्रा और आईपीपी बिंदु कुमार दास ने अस्पताल को यह सुविधा समर्पित की। अस्पताल इस सुविधा के लिए मरीजों से मामूली शुल्क लेगा और एकत्र की गई राशि का उपयोग इसके रख-रखाव के लिए किया जाएगा।

क्लब ने अपने चार्टर के 70 वर्षों में किये हुए कुछ प्रोजेक्ट इस प्रकार हैं- एक रोटरी आई हॉस्पिटल एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट, एक वृद्धाश्रम, एक प्ले-स्कूल और एक जेरियाट्रिक-हेल्थकेयर सेंटर। ■

रोटरी क्लब मद्रास मिडटाउन ने बड़ी सफलतों के साथ पूरे किए 50 साल

वी मुत्तुकुमारन

किसी के सपने, विचार, धारणा, दृष्टिकोण या किसी कार्यक्रम की शक्ति को कभी कम न समझें क्योंकि इसका समुदाय या अखिल भारतीय स्तर पर गहरा प्रभाव पड़ सकता है,'' रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने रोटरी क्लब मद्रास मिडटाउन, रो ई मंडल 3232, के स्वर्ण जयंती समारोह में कहा। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए, उन्होंने 15 साल पहले गुजरात के एक छोटे से शहर वापी में PRIP कल्याण बेनर्जी के बेटे की शादी की अपनी यात्रा को याद किया जिसने उनकी मानसिकता को पूर्ण रूप से बदल दिया था।

चूंकि वह एक रोटरी स्कूल में शादी के आयोजन को लेकर चकित थे, ''मैंने इस स्कूल में सबसे बेहतरीन मखमली घास के मैदानों से एक को देखा जो रोटरी क्लब वापी की एक परियोजना थी जिसमें उस समय 54 सदस्य थे। 200,000 लोगों की जनसंख्या वाले उस शहर में कोई स्कूल नहीं था, इसलिए उन्होंने एक प्राथमिक विद्यालय शुरू किया जिसे माध्यमिक विद्यालय में उन्नत किया गया जिसमें अब 2,000 से अधिक विद्यार्थी है। उच्च शिक्षा के लिए उस समय एक कॉलेज शुरू किया गया था। अब इस छोटे से शहर में सात कॉलेज है जिसमें 200 बिस्तरों वाला एक अत्याधुनिक मेडिकल कॉलेज भी शामिल है, ये सभी रोटरी क्लब वापी द्वारा संचालित किए जा रहे है।''

वापी की मेरी यात्रा को मैं एक तीर्थयात्रा मानता हूँ, मेहता ने कहा। उनके गृह क्लब, रोटरी क्लब कलकत्ता महानगर, द्वारा पहली बार बाल हृदय सर्जरियाँ की गई। हालांकि तत्कालीन अध्यक्ष एक हृदय शल्य चिकित्सक ही थे, चूंकि वे पहली बार इसे आज़मा रहे थे इसलिए थोड़ा हिचकिचा रहे थे। ''हमने 66 सर्जरी के लक्ष्य के मुकाबले 100 नि:शुल्क हृदय सर्जरियों के साथ अपना साल पूरा किया। फिर यह परियोजना हमारे मंडल की प्रमुख परियोजना बन गई और मैं व्यक्तिगत रूप से 2,500 सर्जरियों में शामिल था और अब अखिल भारतीय स्तर पर क्लबों ने पिछले 10 वर्षों में गरीब बच्चों की 20,000 से अधिक सर्जरियाँ की है।''

असफलताएं ही सफलता का कारण बनती है

उन्होंने कहा कि होंडा मोटर्स के संस्थापक-अध्यक्ष सोइचिरो होंडा, बॉलीवुड अभिनेता अमिताभ बच्चन, अमेरिकी आविष्कारक थॉमस अल्वा एडिसन और अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन अपने जीवन में असफलताओं की एक श्रृंखला का अनुभव करने के बाद ही सफलता के शिखर पर पहुँचे है। ''एक जहाज़ बंदरगाह में सुरक्षित होता है लेकिन इसे अपने वजूद के मकसद को पूरा करने के लिए गहरे समुद्र की ऊंची लहरों के बीच उतरना ही पड़ता है।'' उन्होंने क्लब से बड़े पैमाने पर एक एकल कार्यक्रम को भव्य दृष्टिकोण के साथ शुरू करने का आग्रह किया ताकि बाद में इसे राष्ट्रीय स्तर तक ले जाया जा सके। आपदा पीड़ितों को राहत प्रदान करने के लिए उनके द्वारा प्रोजेक्ट *शेल्टर*

कॉफी टेबल बुक का विमोचन करते रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता और रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश। साथ में (बाएं से) अनुराधा जिंदल, क्लब के फाउंडेशन अध्यक्ष जयशंकर ऊनिथन, सेवा निदेशक उषा कुमार, अध्यक्ष विक्रम जिंदल, स्वर्ण जयंती समारोह के अध्यक्ष अशोक कुमार शेट्टी और सचिव वी कृष्णकुमार।

बाएं से: रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश, रो ई अध्यक्ष मेहता और क्लब अध्यक्ष विक्रम जिंदल।

किट्स शुरू किया गया क्योंकि इसमें 52 आवश्यक वस्तुएं जैसे तिरपाल, चादर, खाना पकाने और खाने के बर्तन एवं एक परिवार के लिए उनके जीवन को दोबारा शुरू करने हेतु अन्य उपयोगी वस्तुएं है। उन्होंने कहा कि यह एक तरह की *घर वापसी* किट है। अब भारत में जहाँ भी आपदाएं आती है, वहाँ शेल्टर किट्स वितरित की जा रही है। उन्होंने कहा, ''50 साल पूरे करना वास्तव में एक क्लब के लिए उत्सव का समय होता है लेकिन यह आत्मनिरीक्षण करने और सेवा के लिए खुद को फिर से समर्पित करने का भी अवसर है, उन्होंने कहा। किसी के जीवन को छूना और बदलना एक बहुत बड़ा उपहार है। मानवता की समृद्धि के लिए रोटरी को अपना कार्य करते रहना होगा। हमारे पास जीवन बदलने हेतु सेवा करने की शक्ति और जादू है।''

रो ई निदेशक ए एस वेंटेकेश ने कहा कि क्लब की प्राथमिकताओं का पुनर्मूल्यांकन करने और आने वाले दशकों की कार्य योजना की रूपरेखा प्रस्तुत करने के लिए वरिष्ठ रोटेरियनों की एक समिति को एक साथ रखें। ''आपको अगले 10 वर्षों के लिए एक रणनीति तैयार करनी होगी और आत्मसंतुष्टता की भावना से बचना होगा,'' उन्होंने कहा। क्लब ने अपनी क्षमता का 10 प्रतिशत भी नहीं किया है ''इसलिए एक नया अस्पताल, स्कूल निर्माण या 1,000 लड़कियों को प्रशिक्षित कर सकने वाले एक व्यावसायिक केंद्र स्थापित करने जैसे बड़े लक्ष्यों के बारे में सोचें,'' उन्होंने सलाह दी।

कुछ प्रमुख परियोजनाओं के बारे में बात करते हुए क्लब अध्यक्ष विक्रम जिंदल ने कहा कि कॉर्पोरेशन गर्ल्स स्कूल, चूलाईमेदु, में छात्राओं को 1,400 सैनिटरी पैड दिए गए; पांच स्कूलों में MHM सत्र आयोजित किए जा रहे है और 600 लड़कियों को सैनिटरी पैड दिए जाएंगे जिसके लिए स्कूलों को एक स्वच्छता अलमारी उपहार स्वरूप दी जाएगी; कांचीपुरम जिले के तीन गांवों में सुनामी प्रभावित मछुआरों को मोटर और जाल के साथ 100 नावें दी गईं; एक इंटरेक्ट क्लब वाले नंगमबक्कम स्थित कॉरपोरेशन बॉयज़ स्कूल में दो शौचालय खंडों का नवीनीकरण किया गया; और श्रीलंकाई बच्चों की शिक्षा के लिए उन्हें टीवी सेट उपलब्ध कराने हेतु धन दिया गया।

क्लब रोटरी क्लब कोडईकनाल के साथ साझेदारी में कोडई हिल्स में 'नो प्लास्टिक' अभियान चला रहा है और वहाँ के वैन एलन अस्पताल में नर्सिंग विद्यार्थियों को वित्तीय सहायता भी प्रदान कर रहा है।

जिंदल ने कहा कि महिलाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर उन्हें सशक्त बनाना उनकी प्रमुख पहलों में से एक है। उन्होंने कहा, ''हर महीने हम 100 महिलाओं को चॉकलेट, कपड़े और पेपर की थैलियाँ, खाद और अचार बनाने जैसे घरेलू उत्पादों का प्रशिक्षण देकर उन्हें सशक्त बनाना चाहते है।'' TRF को देने के लिए क्लब ने 100,000 डॉलर का लक्ष्य निर्धारित किया है – 50,000 डॉलर स्वर्ण जयंती अक्षय निधि के रूप में, और बाकि बचा तिरुवल्लूर जिले के अरकामेडु गांव में अय्यप्पन सेवा समाजम में पांच मशीनों वाली एक डायलिसिस इकाई स्थापित करने की वैश्विक अनुदान परियोजना के रूप में। यह क्लब एक चलित मैमोग्राफी क्लिनिक खरीदने हेतु एक वैश्विक अनुदान का साझेदार है जिसके लिए यह ₹3 लाख का योगदान देगा और कैंसर की देखभाल प्रदान करेगा।

गो ग्रीन परियोजना

इंडियन मैरीटाइम यूनिवर्सिटी के साथ साझेदारी में क्लब चेन्नई और उसके आसपास के इलाकों में 50,000 पौधे लगाने के लक्ष्य के साथ एक विशाल हरित मिशन पर है। जिंदल ने कहा, ''हम IMU परिसर में हमें आवंटित की गई 40 एकड़ भूमि में एक मियावाकी जंगल तैयार कर रहे है जहाँ हम अगले तीन वर्षों में 2 लाख से अधिक पेड़ लगाएंगे।'' क्लब तिरुत्तानी और कर्णोदई (रेड हिल्स) में दो ऑरेंज विजन सेंटर चलाता है और इस साल सेंथोम, पोन्नेरी और मिंजुर में तीन और केंद्र स्थापित किए जाएंगे।

मंडल रोटरी संस्थान के अध्यक्ष एम अंबालावनन और एन गीता को मेहता द्वारा AKS सदस्य बनने पर सम्मानित किया गया। 2016-17 में क्लब अध्यक्ष के रूप में अपने कार्यकाल को याद करते हुए अंबालावनन ने कहा कि ''तीन वैश्विक अनुदान परियोजनाओं को पूरा करने से क्लब ने नाम और शोहरत हासिल की। तब से हम अपनी परियोजनाओं के लिए वैश्विक दानकर्ता और TRF निधि प्राप्त कर पा रहे है। इसने मेरे दृढ़ विश्वास और संस्थान को और अधिक देने के मेरे संकल्प को मजबूत किया। रोटरी समाज में परिवर्तनकारी बदलाव और अपने आप में उत्तम परिवर्तन लाती है। हम इस जादू को महसूस कर सकते है,'' उन्होंने कहा।

रोटरी क्लब मद्रास के अध्यक्ष मोहन रमन ने कहा कि उनका क्लब रोटरी क्लब मद्रास मिडटाउन के साथ संयुक्त रूप से एक सिलाई केंद्र स्थापित करेगा। सेलाइयूर और रोटरी नगर, ट्रिप्लिकेन, में ''हमारे केंद्रों के कर्मचारी हाल ही में स्थापित इस व्यावसायिक केंद्र में प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करेंगे। हम इस परियोजना के लिए ₹2.5 लाख की सिलाई मशीनें दान करेंगे।'' पूर्व अध्यक्ष उषा कुमार द्वारा रचित एक लघु पुस्तिका *टचिंग लाइफ़्स, ए मद्रास मिडटाउन जर्नी* मेहता द्वारा जारी की गई थी। कार्यक्रम अध्यक्ष जयशंकर उन्नीथन ने भी इस अवसर पर बात की।

चित्र: वी मुत्तुकुमारन

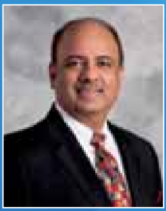

Rtn Shekhar Mehta
RI President

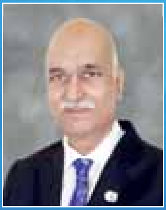

Rtn Ramesh Meher
District Governor

GLIMPSES OF

A virtual International marathon

The Rotary Club of Nasik Road and RI District 3030 hosted the second edition of a virtual International marathon, cyclothon and walkathon on November 14, 2021, to raise funds to provide digital classrooms for children studying in rural schools. The event saw 800 participants from almost all states of India and many other countries as well. It was planned in such a way that all the participants could walk, cycle or run their chosen distance at any time on the scheduled day wherever they were in the world, either individually or in small groups maintaining the regulations in force for the pandemic situation. This event was the brainchild of PP Rtn Mahesh Salve, himself an avid runner and president Dr Snehal Gangurde. A committee of Rotarians took care of the planning and implementation. Many runners and cyclists' associations throughout RI District 3030 supported the event and helped to achieve the frequently raised targets for participation. Social media was abuzz with the event details and information for almost a month with all Rotary and non-Rotary groups being flooded with appeals for registration, videos of participating local icons and brand ambassadors, district dignitaries including PDGs, DGEs, DGNs, AGs, etc. The club's Facebook page was also updated several times a day with the latest news of the event and was liked by a large number. Nearly 50 lakh persons were made aware of the event making it a huge PR exercise for the club. IPP Dr Amit Gangurde, past presidents Hemant Shidhaye, Vibha Patil and Firdaus Kapadia contributed their efforts and time to make this event a success. They were ably guided and assisted by DG Ramesh Meher and President Enclave Chair PP Sanjay Kalantri.

A pathology lab inaugurated by RC Malegaon Fort

Rotary Club of Malegaon Fort recently set up a pathological laboratory at Shiv Lab. The lab, inaugurated by the municipal corporation health officer Dr Sapana Thakre, will extend 40 per cent concession for its services for underprivileged people. In her speech Dr Sapana stated that the Rotary club has been significant with its welfare activities in Malegaon Fort. Deputy Commissioner of Malegaon Municipal Corporation Sachin Mahale presided over the event. He too lauded the admirable work of Rotary Malegaon Fort on its health and education activities and promised the support of the corporation for the club's welfare activities. Club president Arun Pathade felicitated health officer Dr Sapana and commissioner Mahale, pathologists Sagar Pawar and Satyam Nikam with copies of the Bhagwad Gita. This programme was anchored by Dr Narendra Thoke. Project manager Kavita Kasliwal detailed the gathering about the project and club secretary Nilesh Patil delivered the vote of thanks. Club members Shashir Hire, Sarjerao Pawar, Vijayalaxmi Ahire, Shippa Deshmukh, Sagar Lonari, Amit Khare and RAC Malegaon Fort president Nilesh Pathade and other Rotaractors were present at the event.

DISTRICT 3030

जीवन RID 3030 RY 2021- 22
LIVE LIFE.... GIVE LIFE

SERVE TO CHANGE LIVES

ADVT.

RC Nagpur Metro installs a multispecialty OPD

Rotary club of Nagpur Metro and the Central Neurological Medical Institute (CNMI) have jointly started the 'one of its kind' project of free medical consultancy for senior citizens above age 65. This project was inaugurated on Dec 29, 2021 by orthopaedic surgeon Dr Sudhir Babhulkar. CNMI founder and director Dr Shyam Babhulkar's mother Pramilatai Babhulkar (age 96 years) graced the occasion with her presence and blessed the project. Under this project, neurology, orthopaedic, cardiology, ophthalmology, dental, skin, ENT and homeopathy consultancies will be provided free to senior citizens above 65 yrs on every Wednesday between 3 to 6 pm. Specialised doctors will offer their services.

Club president Satish Dande welcomed Dr. Sudhir Babhulkar with a floral bouquet. Mrs Seema Deshpande greeted Pramilatai Babhulkar; Rtn Aashish Rewatkar welcomed Dr Shyam Babhulkar with a floral bouquet. Dande briefed the audience about the project. Rtn Ramesh Borkute, introduced the chief guest Dr Sudhir Babhulkar. Rtn Sandhya Dande compered the programme.

Dr Sudhir Babhulkar appreciated the project and suggested the organisers to extend it for more days in a week as per the response of senior citizens. He also appealed to the doctors of the city to join this venture and congratulated the organisers. Dr Shyam Babhulkar also congratulated the club for the venture. Dilip Patne presented the vote of thanks.

AG Virendra Patrikar, Rotary Enclave Chair Kishor Rathi, Dr Shirpurkar, Dr Akulwar, Dr Manohar Muddeshwar, Dr Adil Chimthanwala, Dr Rashmi Babhulkar, Dr Sayali Bhave, Dr Kiran Saoji, PP Mahesh Singh, Nishant Mishra (Secretary, Metro club), Ramesh Borkute, Sukhadev Yeole, Gaidhane, Mahesh Mahale, Sanjay Thakre, Girish Dhond, Devendra Verma, Brij Chandak and other club members were present.

RC Jalgaon Midtown forms an RCC at ZP School, Domgaon

Rotary Club of Jalgaon Midtown formed a Rotary Community Corps with students of Domgaon ZP School, Pachora Jalgaon. The club donated a water filter, two ceiling fans, drawing books, crayons and pencils to the needy students of the school. Mr Tayade, Kendra Pramukh and village sarpanch graced the programme. Dr Aparna Makasare spoke on women's empowerment and Rotary's role in leadership development. Vishwas Thakur, head master of the school, explained the challenges faced by the rural students and presented the vote of thanks. Club member Kishor Patil donated the water filter to the school so that the studens and staff will have access to clean drinking water. Club president Dr Vivek Vadjikar, honorary secretary Tariq Shaikh, Kishor Patil and Dr Aparna Makasare took efforts for the successful completion of project.

संगीत और माधुर्य

स्वर कोकिला शांत हो गई...

एस आर मधु

जिस दिन तक मैं ज़िंदा हूँ और जब तक लता है वो हमेशा मेरी पहली पसंद रहेंगी,'' संगीतकार मदन मोहन ने बिना किसी लाग लपेट के स्पष्ट रूप से कह दिया जब आशा भोंसले ने उनसे शिकायत की थी, ''आप मुझे साधारण धुनें देते हैं, लेकिन दीदी को अपनी श्रेष्ठ धुनें देते हैं।''

वही एस डी बर्मन ने यही बात कुछ इस तरह से कही, ''मेरा पहला चुनाव हमेशा लता रही है और आशा दूसरी। जब से पहली ने फिर से काम करना शुरू कर दिया, मुझे दूसरी की तरफ़ देखने की ज़रुरत नहीं पड़ी थी।''

यहां तक कि एसडी बर्मन के बेटे आरडी बर्मन (पंचम) - जिन्होंने आशा से विवाह किया और कई चार्टबस्टर्स के साथ उनके करियर को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया था - लता के लिए उनमें पूर्ण श्रद्धा और सम्मान था। उन्होंने टिप्पणी की थी ''यदि आशा भोसले संगीत की गैरी सोबर्स हैं, तो लता मंगेशकर डॉन ब्रैडमैन हैं।'' इस की प्रतिक्रिया में आशा बोली, ''शायद पंचम ये कहना चाहते थे कि दीदी उतनी ही संयत और नियंत्रित हैं जितने ब्रैडमैन पिच पर रहते हैं, जबकि सोबर्स की तरह, मैंने ज्यादा जोखिम उठाये हैं!''

संगीतकारों के लिए, ये दो शब्द सर्वोत्कृष्ट के प्रतीक हैं। फिल्म इतिहासकारों के लिए, यह नाम अपने आप में सात दशकों का बॉलीवुड संगीत समेटे हुए है। लेकिन जनता के लिए, इसका मतलब था जन्नत - लता के गीतों के माध्यम से उन्होंने हर रोज़ इसका थोड़ा बहुत अहसास, रेडियो, टीवी, यूट्यूब, अमेज़ॅन या ऐप्पल संगीत पर किया है। और आज भी करते हैं।

लता जी का सम्मान माँ सरस्वती के रूप में किया जाता था ठीक ताजमहल, गंगा और हिमालय की भांति। 6 फरवरी, 2022 को उनकी आवाज़ हमेशा के लिए शांत हो गई, लेकिन आज भी उनकी आत्मा उनके गाये कई हज़ार गीतों में बसती है।

जैसी कि इंडिया टुडे ने टिप्पणी की है, ''ये वो सुरीली

जिस दिन तक मैं ज़िंदा हूँ और जब तक लता है वो हमेशा मेरी पहली पसंद रहेंगी।

संगीतकार **मदन मोहन**

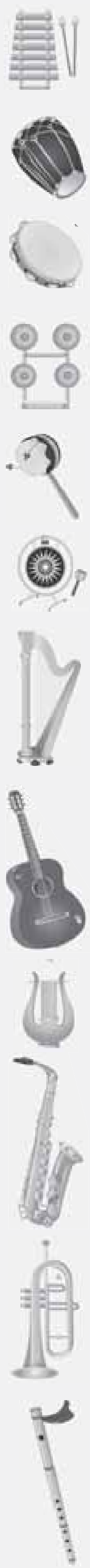

1963 में दिल्ली के रामलीला मैदान में तत्कालीन प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू की उपस्थिति में लता मंगेशकर ने ऐ मेरे वतन के लोगों *गीत गाया।*

आवाज़ है जिसे सुनते हुए दिल्ली में सड़क किनारे बैठा विक्रेता अपना व्यापार करता है, राजमार्ग पर ट्रक चालक लंबी दूरी तय करता है, लद्दाख में सेना का जवान अपने बंकर में बैठ सीमा की चौकसी करता है, या बॉम्बे का अभिजात वर्ग महंगे होटल में लज़ीज़ व्यंजनों का लुत्फ़ उठाता है।''

संगीतकार सज्जाद हुसैन ने एक बार कहा था, ''लता गाती हैं, बाकी सब रोती हैं।'' एक संगीतकार ने तो यहां तक सुझाव दे दिया कि ''भारतीय संगीत के सात स्वरों (सा, रे, गा, मा, पा, धा, नी) में दो स्वर - ल और ता - और जुड़ने चाहियें।''

अपने चरम पर, लता के समकक्ष कोई नहीं था। जब भी वो चेन्नई यात्रा पर जातीं, वहां उन्हें होटल में रहना और होटल का खाना पसंद नहीं था, तो शिवाजी गणेशन ने उनके लिए चेन्नई के अपने घर में एक कॉटेज की व्यवस्था करवाई थी।

लता फिल्म जगत की सर्वाधिक अलंकृत कलाकार हैं - भारत रत्न, दादा साहब फाल्के पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ गायिका के चार फिल्मफेयर पुरस्कार और फिल्मफेयर लाइफटाइम अचीवमेन्ट - विशेष पुरस्कार, तीन राष्ट्रीय पुरस्कार और भी कई पुरस्कार मिले हैं । मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र सरकारों ने उनके नाम से पुरस्कारों की स्थापना की है।

विदेशों में आयोजित संगीत समारोहों में उन्हें अभूतपूर्व सफलता मिली। 1975 और 1998 के बीच, उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, कैरिबियन और फिजी द्वीप समूह में कई शो आयोजित किए थे। उनके शो हमेशा सर्वाधिक प्रतिष्ठित सभागारों में ही आयोजित किए जाते थे। कार्यक्रम के स्थानीय अमेरिकी सहयोगी भारी भीड़ की भविष्यवाणी और टिकट की महँगी कीमतों को ले कर चिंतित रहते थे, लेकिन सारे टिकट बिक जाने पर और शो में उमड़ी भीड़ देख कर वो चकित रह जाते थे, जो फ्रैंक सिनात्रा जैसे शीर्ष अमेरिकी सितारे भी एकत्रित नहीं कर सके थे।

लता का बचपन

लता का जन्म 28 सितंबर 1929 को इंदौर में हुआ था। पांच बच्चों में सबसे बड़ी, उनके भाई-बहन आशा, उषा, मीना और हृदयनाथ थे। उनके पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर शास्त्रीय संगीत के कुशल रंगमंचीय गायक थे,

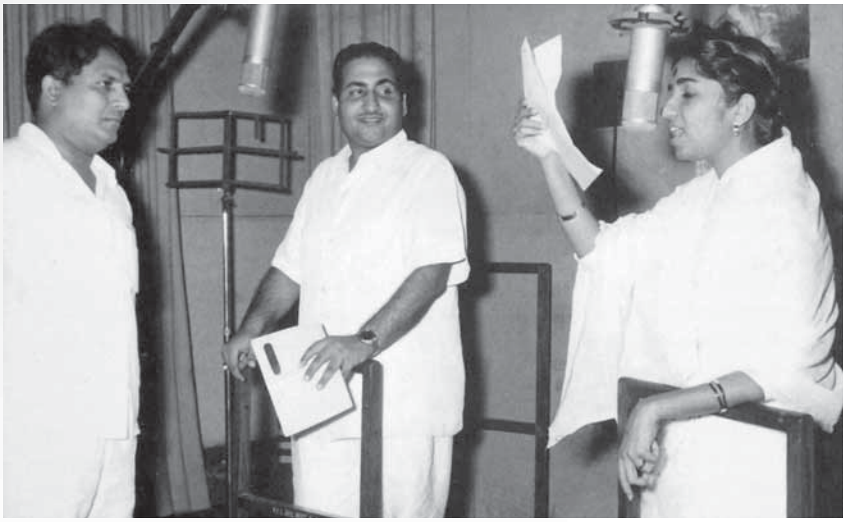

एक गीत रिकॉर्डिंग सत्र में मोहम्मद रफ़ी और संगीतकार शंकर के साथ।

कर्नाटक संगीत दिग्गज एम एस सुब्बुलक्ष्मी के साथ।

जो एक यात्रा नाटक मंडली चलाते थे। इस मण्डली ने महाराष्ट्र के छोटे शहरों में पौराणिक कथाओं का मंचन किया था। बच्चे खानाबदोश सा जीवन जीते थे और स्कूल जाना भी संभव नहीं था। लेकिन ''हमारे घर में दिन रात संगीत बजता रहता था, लता याद करती हैं।'' फिल्म संगीत ज़रूर प्रतिबंध लगा दिया गया था, हाँ, के एल सहगल एकमात्र अपवाद थे; दीनानाथ उनके प्रशंसक थे और लता भी। वह अक्सर गुनगुनाती रहती थीं *एक बांग्ला बने न्यारा।*

बचपन में लता लड़कों की तरह रहती थी, विशेष कर सांगली में जहां उनका परिवार एक बड़े घर में रहता था। उन्होंने अपनी जीवनी लेखक नसरीन मुन्नी कबीर को बताया था कि वह पेड़ों पर चढ़ कर आम और अमरूद तोड़ती थी; एक छड़ी ले कर घूमना और सभी को हड़काना; एक कार के टायर के अंदर बैठ जाती और अन्य बच्चे इसे सड़क पर लुढ़काते थे; ताश और गिल्लीडंडा खेलती थी।

1934-35 में भारतीय सिनेमा में बोलती फिल्मों की शुरुआत अर्देशिर ईरानी की फिल्म *आलम आरा* के साथ हुई और इसी के साथ दीनानाथ की नाटक मंडली को गहरा झटका लगा। सवाक फिल्मों ने दर्शकों की भीड़ को पारंपरिक नाटक कंपनियों से दूर कर दिया। उनमें से कई, दीनानाथ सहित, तनावग्रस्त हो तकलीफ में पड़ गए थे और कभी उबर नहीं पाए। उन्होंने स्वयं फिल्में बनाईं, अपनी थिएटर कंपनी को पुनर्जीवित किया, सांगली में अपना घर बेच दिया, लेकिन वो भारी कर्ज के नीचे दब गए। उन्हें शराब से भी कोई मदद नहीं मिली और 24 अप्रैल 1942 को वो दुनिया से चल बसे।

लता के सर पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा, उस समय वे केवल 13 वर्ष की थीं, और घर के लिए कमाने की ज़िम्मेदारी उन पर आ गई थी। उनके पिता के एक दोस्त, मास्टर विनायक (अभिनेत्री नंदा के पिता) ने उन्हें मराठी फिल्म में एक भूमिका दी थी। उन्हीं के कहने पर, लता ने उस्ताद अमन अली खान भिंडीबाजारवाले और बाद में अमानत खान देवासवाले से शास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण लिया। लता में स्मृति विलक्षण और कुछ भी नया आत्मसात करने की क्षमता स्पंज जैसी थी। उनका प्रशिक्षण उच्च स्तरीय था।

लता ने चार मराठी फिल्मों (जिनमें से एक में अपना पहला हिंदी गीत भी गाया था)

लता का जादू कायम रहेगा

लता के सर्वश्रेष्ठ गीतों को विभिन्न श्रेणियों में बांटा जा सकता है - संगीतकार; मनोदशा; और उन अभिनेत्रियों के आधार पर जिनके लिए उन्होंने गीत गाये। यहां पर मैं अंतिम श्रेणी को चुनूंगा, जया बच्चन की बात को साबित करने के लिए - कि लता ने सिर्फ गीत गाने के बजाय गीत को भावनात्मक रूप से अभिनय के साथ प्रस्तुत किया। बॉलीवुड की कुछ शीर्ष अभिनेत्रियों के लिए गाये लता के कुछ बेहतरीन रत्न यहां दिए गए हैं।

मधुबाला

- आएगा आएगा आने वाला - महल (1949) संगीत : नौशाद
- *सीने में सुलगते हैं अरमान* - लता और तलत मेहमूद - *तराना* (1951) संगीत: अनिल बिस्वास
- *तेरे सदके बालम* - *अमर* (1954) संगीत: नौशाद
- *मेरे सपने में ना आना रे* - *राजघाट* (1954) संगीत: शंकर जयकिशन
- *प्यार किया तो डरना क्या* - *मुगले आज़म* (1960) संगीत: नौशाद

नरगिस

- *मेरी आँखों में बस गया कोई रे* - *बरसात* (1949) शंकर-जयकिशन
- *घर आया मेरा परदेसी* - *आवारा* (1951) शंकर-जयकिशन
- *ये शाम की तन्हाईं* - *आह* (1953) शंकर-जयकिशन
- *रसिक बलमा* - *चोरी चोरी* (1955) शंकर-जयकिशन
- *प्यार हुआ इकरार हुआ* - *श्री 420* (1955) लता और मन्ना डे। शंकर-जयकिशन
- *जागो मोहन प्यारे* - *जागते रहो* (1957) सलिल चौधरी

मीना कुमारी

- *राधा न बोले न बोले न बोले रे* - *आज़ाद* (1955) सी रामचंद्र
- *ओ रात के मुसाफिर* - *मिस मेरी* (1957) लता और रफी. सी रामचंद्र
- *अजीब दास्तान है ये* - *दिल अपना और प्रीत पराई* (1960) शंकर-जयकिशन
- *ज्योति कलश चके* - *भाभी की चूड़ियाँ* (1961) सुधीर फडके
- *इन्हीं लोगों ने* - *पाकीज़ा* (1972) गुलाम मोहम्मद-नौशाद

नूतन

- *मनमोहना बड़े झूठे* - *सीमा* (1955) शंकर-जयकिशन
- *चांद फिर निकला* - *पेइंग गेस्ट* (1957) एस डी बर्मन

- *मैं तो भूल चली बाबुल का देस* - *सरस्वतीचंद्र* (1959) कल्याणजी-आनंदजी
- *मोरा गोरा अंग ले ले* - *बंदिनी* (1963) एस डी बर्मन
- *तेरा जाना* - *अनाड़ी* (1969) शंकर-जयकिशन

वहीदा रहमान

- *कहीं दीप जले कहीं दिल* - *बीस साल बाद* (1962) हेमंत कुमार।
- *आज फिर जीने की तमन्ना है* - *गाइड* (1965) एस डी बर्मन
- *तेरे मेरे सपने* - *गाइड* (1965) एस डी बर्मन लता और रफी.
- *रंगीला रे* - *प्रेम पुजारी* (1970) एस डी बर्मन

लता के इन सभी गानों ने फिल्मों औरअभिनेत्रियों को अप्रत्याशित सफलता दिलाई।

और चार हिंदी फिल्मों में अभिनय किया। उन्हें अभिनय ज़रा भी पसंद नहीं था, लेकिन उसके अलावा कोई विकल्प नहीं था। उन्होंने परिवार को सहारा देने के लिए बहुत मशक्कत की - वह पैदल ही लंबी दूरी तय करती थी, यहाँ तक कि खुद कई बार खाना भी छोड़ देती थी।

उनके जीवन का पहला महत्वपूर्ण पड़ाव था संगीतकार गुलाम हैदर से मुलाकात। वे लता को निर्माता शशधर मुखर्जी से मिलाने ले गए, जो उस समय शहीद (दिलीप कुमार और कामिनी कौशल अभिनीत) फिल्म बना रहे थे, लेकिन उन्होंने लता को यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि उनकी आवाज़ बहुत पतली थी।

गुलाम हैदर भड़क गए, इससे नाराज़ हो कर उन्होंने शशधर को गलत साबित करने का संकल्प लिया।लता ने हैदर की ही फिल्म में *दिल मेरा तोड़ा* गीत गाया और इस गाने ने कई संगीतकारों का ध्यान खींचा । इसके बाद लता को खेमचंद प्रकाश, फिर अनिल बिस्वास और खुद नौशाद ने अनुबंधित किया था और उनका करियर निखरने लगा।

वर्ष 1949 में, जब लता 20 वर्ष की थी, उन्हें पहली सफलता मिली। *महल* के *आएगा आने वाला* (खेमचंद प्रकाश द्वारा निर्देशित) मधुर आनंद से भरपूर इस सुपर हिट गीत ने सनसनी फैला दी। गायिका का नाम जानने के लिए ऑल-इंडिया रेडियो पर श्रोताओं ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी (रिकॉर्ड से उनका नाम हटा दिया गया था जैसा कि उन दिनों प्रचलन था) अंततः निर्माताओं को इसका खुलासा करना पड़ा। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। अपनी पहचान के लिए संघर्ष करने वाली छोटे शहर की अनजान लड़की लता अब किसी परिचय की मोहताज नहीं थी।

वह वर्ष1949 ही था जब लता ने *अंदाज़* (नरगिस, दिलीप कुमार और राज कपूर अभिनीत एक बड़ी फिल्म) में नौशाद के लिए बेहतरीन ग़मगीन गीत *उठाये जा उनके सितम* गाया था। और उसी वर्ष, राज कपूर की

दक्षिणावर्त:
● संगीतकार आर डी बर्मन के साथ ● संगीतकार एस डी बर्मन के साथ ● लता अपनी बहनों मीना और उषा के साथ ● एक युवा लता ● नौशाद, मोहम्मद रफ़ी और मजरूह सुल्तानपुरी के साथ ● राज कपूर, लता और गीता दत्त।

बरसात ने भी शंकर-जयकिशन के संगीत के साथ स्क्रीन पर धूम मचा दी थी। इस फिल्म में लता ने आठ गाने गाये थे, और हर गीत एक बेजोड़ नगीना था। संगीतकार शंकर ने कहा था, ''उस फिल्म के बाद लता के करियर में बरसात कभी नहीं थमी।''

1950 के दशक में आयी लता की सुनामी बॉलीवुड से टकराई और इसने फ़िल्मी जगत में हलचल मचा दी थी, जिसने सभी संगीत-प्रेमियों को प्रभावित किया और अन्य प्रतिद्वंद्वियों को दूर छिटक दिया। उस समय उन्होंने इतनी लोकप्रियता हासिल कर ली जितनी भारतीय सिनेमा में किसी को नहीं मिली थी। उन्होंने अपनी जीवनी लेखक नसरीन मुन्नी कबीर को बताया, ''उन दिनों मैं सुबह दो गाने, दोपहर में दो, शाम को दो और रात में दो गाने रिकॉर्ड किया करती थी। वह सुबह 3 बजे घर पहुँचती और तब भोजन करती थी। सुनने में भले ही अविश्वसनीय लगे, लता कहती हैं, पर उन्हें नहीं मालूम था'' कि कुछ स्टूडियो में कैंटीन भी होती थी, जहां सभी भोजन करते थे। ''कुछ घंटों की नींद के बाद, मैं छह बजे उठती, तैयार हो कर एक रिकॉर्डिंग स्टूडियो से दूसरे रिकॉर्डिंग स्टूडियो तक ट्रेन से सफर करती थी।''

1950 के दशक के दौरान, कई अमर धुनों में लता की दिव्य आवाज का माधुर्य गूंजा था। यह वो दशक था जब कुछ शीर्ष

संगीतकार ए आर रहमान के साथ।

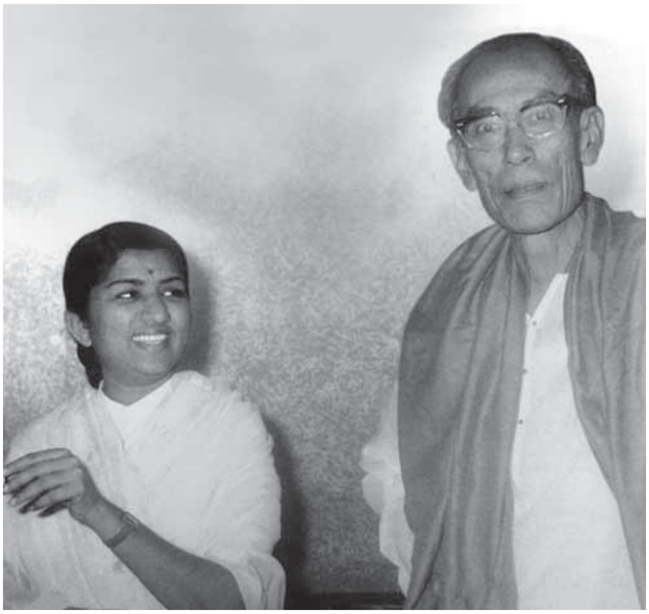

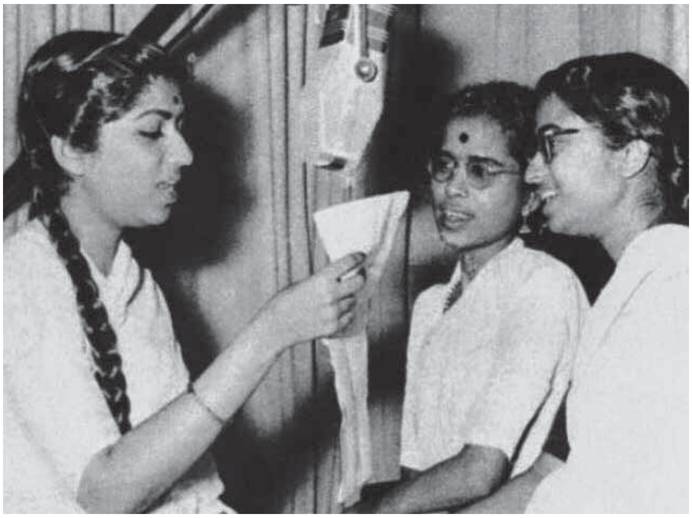

तलत महमूद, मुकेश, रफ़ी और मन्ना डे के साथ लता।

सायरा बानो और दिलीप कुमार के साथ लता।

संगीतकार- शंकर-जयकिशन, नौशाद, सी रामचंद्र, एसडी बर्मन, हेमंत कुमार जैसे नामी संगीतकार अपने उत्कर्ष पर थे और लाजवाब मधुर धुनों का निर्माण कर रहे थे, लता उनकी पहली पसंद थी। उन्होंने *आवारा, आह, बैजू बावरा, श्री 420, अनारकली* और अन्य फिल्मों में एक के बाद एक रत्न गाए थे।

राजीव विजयकर कहते हैं - बॉलीवुड संगीत का सबसे बेहतरीन दौर 1960 का दशक था - ''उत्तेजक, झूमता, जगमगाता और शानदार।'' लता ने बड़े पैमाने की एक अत्यंत भव्य फिल्म *(मुगल-ए-आज़म)* के साथ साल की शुरुआत की, जिसमें नौशाद, लता और मधुबाला की तिकड़ी ने कर्णप्रिय संगीत और खूबसूरत दृश्यों के मिश्रण से मदहोश कर देने वाली एक स्वर्णिम कॉकटेल पेश की थी। एक और संगीतमय सफलता थी देव आनंद की *गाइड*, जिसे देव आनंद, एसडी बर्मन, लता और वहीदा रहमान ने मिल कर रचा था। वहीदा पर फिल्माए गए लता के गाने - *आज फिर जीने की तमन्ना*

है, पिया तोसे नैना लागे रे - और लता-किशोर का वो मशहूर युगल *गाता रहे मेरा दिल,* ने संगीत का जादू बिखेरा था। अपनी सुरीली आवाज़ का जादू बरकरार रखते हुए उन्होंने *जंगली, असली नकली, गंगा जमना, मेरे महबूब, अनपढ़, ममता, मेरा साया* जैसी कई फिल्मों में निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

70 के दशक में आईं उनकी मुख्य फिल्में रहीं *बॉबी, अभिमान, अमर प्रेम* और *आंधी। मेरा नाम जोकर* की भारी विफलता के बाद, जिसने राज कपूर को लगभग दिवालिया कर दिया था, *बॉबी* से आरके शिविर में लौटी खुशियों की वापसी और सफलता में उनका महत्वपूर्ण योगदान था। 45 साल की लता ने 15 वर्षीय डिंपल के लिए गाने गाये थे और उनकी आवाज़ बिलकुल 15 साल की लड़की जैसी लगी थी। बॉबी ज़बरदस्त हिट हुई।

अभिमान, संगीतकार युगल पर बनी एक फिल्म में लता ने कुछ बेहद खूबसूरत नगमे गाये थे और *अमर प्रेम* में भी। उन्होंने आरडी बर्मन के लिए पारलौकिक सुंदरता से ओतप्रोत कुछ शास्त्रीय प्रस्तुतियां दी हैं - जैसे *रैना बीती जाए (अमर प्रेम), बीति ना बिताई रैना (परिचय), तेरे बिना ज़िन्दगी (आंधी),* और *बाँहों में चले आ (अनामिका)।*

लता के सम्बन्ध संगीतकारों के साथ

लता ने लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल के लिए 696, शंकर-जयकिशन के लिए 453, आर डी बर्मन के लिए 331, कल्याणजी-आनंदजी के लिए 302, सी रामचंद्र के लिए 288, मदन मोहन के लिए 210 गाने गाए हैं।

वह शंकर-जयकिशन की ज़बरदस्त प्रशंसक थीं, जिन्होंने हिंदी फिल्म संगीत की व्याकरण को नए आयाम दिए और नौशाद की उनकी उत्कृष्टता के लिए। दोनों ने लता को शिखर पर पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेकिन मदन मोहन के साथ उनके व्यक्तिगत सम्बन्ध थे, वो हर साल उनसे राखी बंधवाते थे।

उनके लिए रचित मदन मोहन की धुनों में एक अलौकिक माधुर्य था, खय्याम कहते हैं जिसे ले कर उनको मदन मोहन से ईर्ष्या थी। इनमें *मेरी वीणा तुम बिन रोए (देख कबीरा रोया), हम प्यार में जलनेवाले को (जेलर), यूं हसरतों के दाग (अदालत), आप की नजरों ने समझा (अनपढ़), नैना बरसे (वो कौन थी)* और *नैनों में बदरा छाये* शामिल हैं।

मदन मोहन के बेटे संजीव कोहली ने यश चोपड़ा और लता मंगेशकर को ले कर भारत-पाक प्रेम कहानी पर आधारित फिल्म *वीर ज़ारा* (2004) बनाई थी। इसका संगीत मदन मोहन की अप्रयुक्त धुनों पर आधारित था जिसे कोहली ने खोज निकाला था। फिल्म के गाने रिकॉर्ड करने के लिए लता जब भी माइक पकड़ती उनकी आंखों में आंसू आ जाते थे। उस साल वीर ज़ारा का एल्बम सर्वाधिक बिकने वाला एल्बम था।

लता ने किसी भी अन्य संगीतकार की तुलना में लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल के लिए ज़्यादा गाने गाये हैं। उन्होंने कहा था, वास्तव में, LP का मतलब था ''लॉन्ग प्लेइंग'' उन दोनों के करियर की लंबी पारी की वजह से (उन्होंने लगभग 500 फिल्मों के लिए संगीत दिया)। LP के लिए उनकी फिल्म *पारसमणि* के लिए उन्होंने पहली बार गाया था। इस फ़िल्म के गीत *हँसता हुआ नूरानी चेहरा* के लिए LP ने 36 वायलिन का प्रयोग किया था और इसे शानदार सफलता मिली थी। ''हमारी पहली पसंद हमेशा लता

लता और उनकी बहन आशा भोंसले।

किशोर कुमार के साथ।

थी,'' प्यारेलाल ने कहा, ''भले ही गाना किसी बच्चे, बहन, मां या दादी पर फिल्माया गया हो।''

विवाद

लता ने एक प्रतिष्ठित गायिका के रूप में बुलंदियां हासिल की हैं, लेकिन लोग कहते हैं कि उन्होंने युवा प्रतिद्वंद्वियों - जैसे वाणी जयराम, रूना लैला, सुलक्षणा पंडित, प्रीति सागर, अनुराधा पौडवाल, हेमलता, यहां तक कि उनकी अपनी बहन आशा को भी आगे बढ़ने से रोकने के लिए कई हथकंडे अपनाये जिसके लिए उन्हें मतलबी, स्वार्थी और षडयंत्रकारी के रूप में प्रचारित किया गया है। ऐसा कहा जाता है कि इन युवाओं को मौका देने वाले संगीतकारों को लता ब्लैकलिस्ट कर देती थीं या परेशान करती थीं ताकि वो समझ जाएं! इसका जवाब लता ने यूँ दिया कि वास्तविक प्रतिभा कभी छुपी नहीं रह सकती, और एक गायक के रूप में बने रहने के लिए साहस और सहनशक्ति की आवश्यकता होती है।

तमिल फिल्म अभिनेता शिवाजी गणेशन द्वारा लता का अभिनंदन।

लता अपने भाई-बहनों हृदयनाथ, मीना, आशा और उषा के साथ।

उन्होंने कहा कि आशा और उनमें हमेशा प्रगाढ़ सबंध रहे हैं। उस समय ज़रूर उन दोनों के बीच मनमुटाव हो गया था जब आशा ने अपने से बड़ी उम्र के व्यक्ति के साथ भाग कर शादी कर ली थी। उस व्यक्ति ने ज़बरदस्ती आशा को उसके परिवार से दूर रखा। लेकिन आशा ने प्रताड़ित होने के बाद सम्बन्ध विच्छेद कर लिया और वापिस अपने परिवार में लौट गई।

गायकों को मिलने वाली रॉयल्टी को ले कर ज़रूर लता का मोहम्मद रफी से झगड़ा हो गया था। उन्होंने रॉयल्टी पर जोर दिया था - जिससे सभी पार्श्व गायकों को फायदा हुआ, लेकिन रफी सहमत नहीं हुए थे। इस विषय पर विवाद इतना बढ़ गया कि दोनों ने छह साल तक साथ नहीं गाया।

रॉयल्टी के विषय पर लता और राज कपूर में भी वैमनस्य हुआ और वो अलग हो गए। लेकिन जब वह *बॉबी* बना रहे थे तो उन दिग्गज ने लता की मांग स्वीकार कर ली।

ओ पी नय्यर ही अकेले ऐसे संगीतकार हैं जिन्होंने अपने गीतों के लिए लता की आवाज़ का इस्तेमाल कभी नहीं किया। ओपी कहते हैं कि लता की आवाज पतली है और उनके गीतों के अनुकूल नहीं है। उनकी सी रामचंद्र और एसडी बर्मन के साथ भी कुछ गलतफहमीयां हुई थीं।

1983 विश्व कप की विजेता भारतीय टीम के लिए आयोजित उनके चैरिटी कॉन्सर्ट की ओर से टीम के प्रत्येक सदस्य को ₹1 लाख का पुरस्कार दिया गया था।

उनका जुनून

आश्चर्यजनक रूप से लता क्रिकेट की बहुत बड़ी प्रशंसक थीं। 1983 विश्व कप की विजेता भारतीय टीम के लिए आयोजित उनके चैरिटी कॉन्सर्ट की ओर से टीम के प्रत्येक सदस्य को ₹1 लाख का पुरस्कार दिया गया था।

वह कारों की बेहद शौक़ीन थी, एक बेहतरीन पोर्टफोलियो के साथ फोटोग्राफी की शौकीन लता के पास पेशेवर कैमरों का आश्चर्यजनक संग्रह था, वो हीरे की शौकीन थी और हमेशा सफेद साड़ी पहनती थी, बढ़िया खाना पसंद करती थी (आइसक्रीम और अचार भी जो अमूमन गायकों के लिए वर्जित होते हैं)। सुखपूर्वक जीवन बिताते हुए वो आजीवन अविवाहित रही, कहती थीं कि वह बच्चों से बहुत प्यार करती हैं और अपने भाई-बहनों के बच्चों के साथ जीवन का खूब आनंद उठाया।

लता का जादू

बड़े गुलाम अली ख़ान ने एक बार कहा था, ''जिसे करने में हम शास्त्रीय संगीतकार को तीन घंटे लगते हैं, लता मंगेशकर उसे केवल तीन मिनट में कर लेती है।''

उनकी जीवनी लेखक कबीर ने कहा था, ''वह एक ही समय में व्यापक और सुरंग-दृष्टि रखती हैं। आपको दोनों की जरूरत है - बड़ी तस्वीर और विस्तार।'' दिलीप कुमार ने कहा था, ''लता हम सभी में रहती है।'' उनकी आवाज शांत हो गई है, लेकिन संगीत की आत्मा जीवित रहेगी।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार और रोटरी क्लब मद्रास साउथ के सदस्य हैं।

चित्र: नियोगी बुक्स, पॉपुलर प्रकाशन, NDTV फोटोज़

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

रोटेरियन ने किया करतारपुर साहिब गुरुद्वारा का दौरा

टीम रोटरी न्यूज़

पीडीजी प्रेम अग्रवाल के नेतृत्व में रोटरी क्लब मनसा रॉयल, रो ई मंडल 3090 के एक धार्मिक प्रतिनिधिमंडल और क्लब के अध्यक्ष कमान गोयल ने पाकिस्तान में करतारपुर साहिब गुरुद्वारे का दौरा किया। यह सिखों के सबसे पवित्र स्थानों में से एक है, क्योंकि गुरु नानक देवजी ने अपने अंतिम 18 वर्ष यहां बिताए थे और सिख धर्म के तीन स्तंभों का संदेश दिया था - *किरत करनी* (ईमानदार जीवन), वंद चकना (दूसरों के साथ साझा करना) और *नाम जपना* (भगवान पर ध्यान देना)।

नवंबर 2021 में करतारपुर कॉरिडोर को फिर से खोल दिया गया था और रोटरी प्रतिनिधिमंडल को स्थानीय गुरुद्वारा प्रबंधन समिति द्वारा रो ई मंडल 3090 के डीजी परवीन जिंदल और नलिनी जिंदल तथा रोटरी क्लब मोगा स्टार्स के सदस्यों द्वारा स्वादिष्ट नाश्ते की व्यवस्था करने और उन्हें मोगा से अलविदा कहने के बाद हरी झंडी दिखाई गई थी।

रोटेरियन, एन्स और 'इनर व्हील क्लब मनसा रॉयल' और 'इंडियन मेडिकल एसोसिएशन' के सदस्यों सहित 20 सदस्यों के प्रतिनिधिमंडल ने सबसे पहले 'अटारी-वाघा अंतरराष्ट्रीय सीमा' पर संयुक्त चेक पोस्ट और श्री हरमंदर साहिब अमृतसर का दौरा किया।

1 दिसंबर, को यह समूह भारत और पाकिस्तान दोनों चेक पोस्टों पर सभी सीमा शुल्क, अप्रवासन और सुरक्षा औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद

ऊपर: RID 3272 DG सैफुल्ला एजाज़, RID 3090 PDG प्रेम अग्रवाल और RID 3272 DGE सबूर रोहेला करतारपुर साहिब गुरुद्वारा में पाकिस्तान और भारत के रोटेरियन के साथ।

पीडीजी अग्रवाल और डीजी एजाज़ एक दूसरे को गले लगाते हुए।

श्री करतारपुर साहिब के लिए रवाना होकर पाकिस्तान में गुरुद्वारा पहुंचा और प्रार्थना की।

लंगर घर में भोजन करने के बाद, उन्होंने उस कुएं का दौरा किया, जिसका उपयोग गुरु नानक देव ने अपने खेतों की सिंचाई के लिए किया था।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार, जिला गवर्नर सैफुल्ला एजा के नेतृत्व में लाहौर, इस्लामाबाद, पेशावर, नरोवाल और रावलपिंडी से रो ई मंडल 3272 के 32 रोटरी क्लबों से महिलाओं सहित 82 सदस्यों के एक प्रतिनिधिमंडल ने, रो ई मंडल 3090 के भारतीय प्रतिनिधिमंडल का स्वागत करने के लिए करतारपुर साहिब गुरुद्वारा का दौरा किया।.

डीजी की पत्नी सिदरा सैफ के अलावा, डीजीई सोबूर रोहैला, पीडीजी फैजा कमर और पाकिस्तान के अन्य वरिष्ठ रोटेरियन ने भारतीय आगंतुकों का स्वागत किया और उपहारों के साथ उनका सत्कार किया। पीडीजी प्रेम अग्रवाल ने कहा, ''यह रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाने, पोलियो उन्मूलन में हमारे प्रयासों के बारे में जागरूकता पैदा करने और दोनों देशों के लोगों और रोटेरियन के बीच शांति और भाईचारे का संदेश देने के लिए एक महान मिलन रहा। हमारे महानिदेशक, परवीन जिंदल की ओर से, मैंने

भारत और पाकिस्तान के रोटेरियन के साथ पीडीजी अग्रवाल, डीजी एजाज़ और डीजीई रोहेला।

उन्हें भारत आने के लिए आमंत्रित किया और उन्होंने निमंत्रण स्वीकार कर लिया तथा हमें आश्वासन दिया कि वे एक रोटरी कार्यक्रम के दौरान यात्रा करेंगे।''

डीजी सैफुल्ला ने कहा कि पाकिस्तान में पिछले साल पोलियो के एकाधिक मामलों के मुकाबले जनवरी 2021 से लेकर अब तक कोई भी मामला सामने नहीं आया हैं और पाकिस्तान पोलियो उन्मूलन के बहुत करीब है। भारत और पाकिस्तान के पोलियो कैप का आदान-प्रदान किया गया। ■

रोटरी क्लबों को पॉल हैरिस की प्रतिमाएं उपहार में देना

टीम रोटरी न्यूज़

पीडीजी बाग सिंह पन्नू, रो ई जिला 3090, रोटरी के संस्थापक पॉल हैरिस की अर्ध-प्रतिमाओं को पूरे भारत के उन रोटरी क्लबों को उपहार में देने के मिशन पर हैं, जिनके पास प्रतिमाओं को प्रदर्शित करने के लिए अपने स्वयं के भवन, स्कूल या अस्पताल हैं। जनवरी के अंत तक वह पहले ही पंजाब, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, पश्चिम बंगाल, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, राजस्थान, आंध्र प्रदेश, चंडीगढ़, ओडिशा, महाराष्ट्र, गोवा, असम, नागालैंड और कर्नाटक में कई जिलों के क्लबों को 151 अर्ध-प्रतिमायें उपहार में दे चुके हैं।

''पॉल हैरिस की अर्ध-प्रतिमायें जिन्हें मैं उपहार में देता हूँ, वह '3 फीटु 2 फीट' परिमाण की है और काली धातु से बनी है। परियोजना पूरी तरह से मेरे द्वारा वित्त पोषित है और रोटरी क्लब कलकत्ता और रोटरी क्लब चंडीगढ़ में इन प्रतिमाओं को स्थापित करना मेरे लिए खुशी की बात है, ये ऐसे दो ऐतिहासिक क्लब हैं, जिन्होंने भारत से दो रो ई अध्यक्षों को दिया है - दिवंगत एनसी लहरी और राजेंद्र साबू,'' उन्होंने कहा।

हाल ही में पन्नू ने रो ई मंडल 3170 (गोवा, कर्नाटक और महाराष्ट्र सहित) में 22 पॉल हैरिस की अर्ध-प्रतिमाएं स्थापित की हैं; इस परियोजना के समन्वयक, रोटरी क्लब हुबली (कर्नाटक) के नरिंदर बरवाल हैं। वह कुल 800 पॉल हैरिस की प्रतिमा स्थापित करने की उम्मीद करते हैं। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

धुले में रोटरी-सेवा परियोजनाओं का उद्घाटन

टीम रोटरी न्यूज़

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने रो ई निदेशक महेश कोटबागी और डीजी संतोष प्रधान (बाएं) की उपस्थिति में सिविल अस्पताल, धुले में परियोजना सुविधा का उद्घाटन किया।

गुजरात की सीमा से लगे पश्चिमोत्तर महाराष्ट्र में धुले की दो दिवसीय यात्रा के दौरान, रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने रोटरी क्लबों द्वारा रो ई मंडल 3060 में कार्यान्वित की जा रही कई सेवा परियोजनाओं का उद्घाटन किया। सेंट्रल जेल धुले में कैदियों के लिए एक दंत चिकित्सा क्लिनिक का उद्घाटन मेहता ने रो ई निदेशक महेश कोटबागी, डीजी संतोष प्रधान और विधायक कुणाल पाटिल की उपस्थिति में किया। परियोजना जवाहर मेडिकल फाउंडेशन के साथ साझेदारी में रोटरी क्लब धुले फेमिना द्वारा की गई थी।

परियोजना *सुविधा,* सिविल अस्पताल धुले में एक और भव्य परियोजना (₹35 लाख) है, जिसने एक पेयजल स्टेशन, बोरवेल, निर्मित शौचालय ब्लॉक, कूड़ेदान स्थापित करने और अस्पताल पार्क को नया रूप देने के अलावा बेंच प्रदान करने में और सफाई करने में मदद की है। परियोजना का उद्घाटन मेहता ने डीजी प्रधान, रो ई निदेशक कोटबागी, जिला मजिस्ट्रेट जलज शर्मा और डॉ भडांगे, सिविल सर्जन की उपस्थिति में किया। धुले चैरिटेबल सोसाइटी में एक मैमोग्राफी वैन, रोटरी क्लब चिखली और 17 अन्य क्लबों की एक GG परियोजना को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

रोटरी क्लब धुले क्रॉस रोड की परियोजना *संजीवनी* ने एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से एक पैथोलॉजी लैब, फिजियोथेरेपी सेंटर और एक एम्बुलेंस की स्थापना की है। रो ई अध्यक्ष मेहता ने 25 सिलाई मशीनों का वितरण किया और वस्तुतः एक महिला सशक्तिकरण केंद्र और एक 'हैप्पी स्कूल' का उद्घाटन किया। धुले के मेयर प्रदीप खरपे ने मेहता और कोटबागी को सम्मानित किया। रोटेरियन्स द्वारा मेहता और कोटबागी को दिए गए डिनर रिसेप्शन में 100,000 डॉलर मूल्य के तीन एंडोमेंट फंड के लिए प्रतिबद्धता दी गई थी। 'रोटरी इंडिया साक्षरता मिशन' के तहत जिले ने इस रोटरी वर्ष में 1,000 आशा किरण छात्रों को प्रायोजित करने का भी वादा किया।

मेहता ने दिवंगत रोटेरियन अतुल अजमेरा मेमोरियल रोटरी क्रॉस रोड वोकेशनल सेंटर के शिलान्यास समारोह की अध्यक्षता की। रो ई अध्यक्ष का दौरा डीआरएफसी पीडीजी आशीष अजमेरा, पूर्व अध्यक्ष, रोटरी क्लब धुले क्रॉस रोड के प्रयासों से संभव हुआ और इस प्रयास में क्लब के अन्य सदस्यों ने उनका समर्थन किया। ■

देने के लिए तैयार

वी मुत्तुकुमारन और किरण ज़ेहरा

महबस संस्थान में रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता और टीआरएफ ट्रस्टी अज़ीज़ मेमन ने रोटेरियन एस वी वीरमणि और पत्नी राधा को सम्मानित किया।

अपनी कंपनी का प्रबंधन करने और फार्मास्युटिकल क्षेत्र में एक सलाहकार की भूमिका निभाने में ही उनका अधिकांश समय चला जाता है, लेकिन यह बात भी रोटेरियन एस वी वीरामणि को समाज को वह वापस लौटाने से नहीं रोकती जो उन्हें समाज से मिला है। ''वह IPDG एस मुत्तुपलनियप्पन (2020-21) थे जिन्होंने मुझे रोटरी संस्थान में देने हेतु प्रेरित किया। लेकिन जब मैं PDG राजा सीनिवासन (2012-13) के कार्यकाल के दौरान DRFC था, तो मेरी टीम ने वास्तव में दो AKS सदस्यों को लाने और दो अन्य रोटेरियनों से जल्द ही इस प्रतिष्ठित क्लब में शामिल होने की प्रतिबद्धता प्राप्त करने में कड़ी मेहनत की, वह याद करते है। ''उस समय PDG सीनिवासन, जवारीलाल जैन, रो ई मंडल 3231 और रोटरी क्लब मराईमलाईनगर के रोटेरियन गणेशन AKS क्लब से जुड़े थे। उस समय मैंने TRF को 120,000 डॉलर दिए थे और तब से हर साल 10,000-20,000 डॉलर देता रहा हूँ। पिछले साल (20-21) में, TRF को मेरे द्वारा दिया गया कुल संचयी दान 250,000 डॉलर को पार कर गया जो मुझे AKS स्तर पर ले गया।'' वर्तमान में उनका कुल योगदान 290,000 डॉलर है।

अपनी 25 साल की रोटरी यात्रा की ओर देखते हुए, रोटरी क्लब अडयार, रो ई मंडल 3232, के एक सदस्य वीरमणि कहते है, ''यह पूरी तरह से सुखद रहा है, रोटरी के साथ मेरा जुड़ाव आजीवन रहेगा।'' फोरट्र्स इंडिया लैब के संस्थापक-अध्यक्ष, ड्रग फॉर्मूलेशन के निर्यातक और एक प्रमुख फार्मा उद्यमी कहते है कि उनकी पत्नी, राधा, जो कि JMD है, ''हमेशा से बहुत सहायक रही है, मुझे प्रेरित करती है और मेरे जीवन में मेरे द्वारा लिए गए सभी निर्णयों के पीछे वो ही है।''

रोटरी के प्रति जो चीज उन्हें आकर्षित करती है वो है ''साथी रोटेरियनों के साथ तालमेल बैठाकर समुदाय का समर्थन करना क्योंकि हम सभी दुनिया में अच्छा करने के नेक काम के लिए एक साथ आते है।'' इस दंपति की दो बेटियां है, डॉ गायत्री और डॉ नितिया।

वीरामणि इंडियन ड्रग मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष थे और ''मैं फार्मा कंपनियों और स्टार्टअप्स को मार्गदर्शन भी प्रदान करता हूँ।''

वह अगले साल फार्मास्युटिकल्स एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल ऑफ इंडिया (फार्मेक्सिल) के अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभालेंगे। ''फार्मेक्सिल के उपाध्यक्ष के रूप में, मेरी दिनचर्या अतिव्यस्त रहेगी। लेकिन एक रोटेरियन होना एक अच्छा अनुभव है क्योंकि TRF, मंडल गवर्नर और क्लब अध्यक्ष मिलकर स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण, महिला एवं बाल कल्याण को लेकर कुछ बड़ी परियोजनाएं करते है,'' वह मुस्कुराते है।

देने का जुनून

एक रोटेरियन को TRF में योगदान क्यों देना चाहिए? एक पूर्व रोटरेक्टर और रोटरी क्लब कोयंबटूर, रो ई मंडल 3201, के वर्तमान रोटेरियन नतनसबापति सुंदरावदिवेलु (सुंदर) को सुनकर आप आश्वस्त हो जाएंगे कि संस्थान अनुदान दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने में एक बड़ी भूमिका निभाते है। अब तक वह TRF को 260,000 डॉलर (₹2 करोड़ से ज्यादा) दे चुके है। तीन साल पहले, मैंने एक AKS सदस्य बनने का फैसला किया और मेरी इच्छा पिछले साल (2020-21) पूरी हुई। इस प्रतिष्ठित क्लब में शामिल होने की प्रेरणा भीतर से आई,'' सुंदर कहते है, जो एक वकील जो 22 साल पहले रोटरी से जुड़े थे। संस्थान के बारे में और अधिक बोलते हुए वह कहते है, ''TRF रोटरी की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है। इसने हमारे समुदायों के जरूरतमंद लोगों के जीवन में खुशियाँ भर दी है; और सभी रोटेरियन एवं अन्य जिन्होंने TRF में योगदान दिया है, उन्होंने अपने दिलों में स्वयं दिए जलाए है।''

वह याद करते है कि एक GSE टीम का सदस्य (1986-87) रहते हुए ''जीवन के प्रति मेरा पूरा दृष्टिकोण बदल गया। तब तक, वह 1976 से एक DRR और एक सक्रिय रोटरेक्टर थे। उनकी पत्नी एस वी मुरुगंबाल, जो एक वकील भी है, ने भी TRF में योगदान दिया। ''आप कह सकते है कि हमारे पूरे परिवार ने TRF को दान दिया है क्योंकि हम सभी कमाने वाले सदस्य है।''

उनके बेटे प्रवीण रथिनम, एक वकील और बेटी प्रीती जो एक फार्मा व्यवसाय चलाती है, ने भी अपना योगदान दिया है। एक DGND, सुंदर 2024-25 में DG के रूप में अपने सेवाकाल की प्रतीक्षा कर रहे है। मेरा परिवार TRF को दान देना

जारी रखेगा क्योंकि यह मानवता के कल्याण के लिए महान परियोजनाएं कर रहा है,'' वह कहते है।

उनकी पत्नी मुरुगंबाल, टीआरएफ ट्रस्टी गुलाम वाहनवती, रो ई अध्यक्ष मेहता और ट्रस्टी मेमन की उपस्थिति में DGND नातनसबापति सुंदरावडीवेलु अपनी स्वीकृति भाषण देते हुए।

रोटरी की ख्याति जादुई है

अंबालावनन एम के लिए दान करना एक लत की तरह है। ''लेकिन TRF की पारदर्शिता, विवेक और उच्च नेतृत्व ने मुझे एक AKS सदस्य बनने हेतु प्रेरित किया। जब आप रोटरी को 105 डॉलर का दान करते है तो आप जानते है कि 100 डॉलर वास्तविक परियोजना पर खर्च किया जाएगा और 5 डॉलर का उपयोग प्रसंस्करण शुल्क के रूप में किया जाएगा, यह अन्य संगठनों के विपरीत है जो दान की गई राशि का 20-25 प्रतिशत व्यवस्थापक खर्चों के लिए उपयोग करते है। एक DRFC के रूप में मुझे पता है कि TRF मेरे पैसों का उपयोग कैसे करता है।'' रोटरी क्लब मद्रास मिडटाउन, रो ई मंडल 3232 के एक सदस्य, उनका मानना है कि ''रोटरी धर्म से बेहतर है। चार मार्ग परीक्षण आपके जीवन में जो अनुशासन लाता है वह अद्भुत है।''

एक ब्रांड के रूप में रोटरी की ख्याति ''जादुई है,'' वह कहते है। ''यह कुछ भी कर सकती है!'' रोटरी में उनका सबसे यादगार पल 2013 के दौरान था, जब क्लब अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने ''कश्मीर से कन्याकुमारी तक साइकिल रैली का आयोजन एवं निष्पादन किया था, जहाँ 22 प्रतिभागियों ने स्वच्छ भारत और थळपड को बढ़ावा देने के लिए भारत के बदलते परिदृश्य से गुजरते हुए 4,800 किमी की यात्रा की।''

अंबालावनन ने स्वयं प्रतिभागियों के साथ 700 किमी की यात्रा की और ''यह एक साहसिक कार्य था जिसने हमें 2014 और 2015 में एक साइकिलिंग कार्यक्रम टूर डी रोटरी का आयोजन करने हेतु प्रेरित किया। तमिलनाडु के DGP सिलेंद्र बाबू (तत्कालीन ADGP), जिन्होंने टूर डी रोटरी में भाग लिया था, इस खेल गतिविधि से इतने प्रेरित हुए कि उन्होंने हमारे वर्तमान मुख्यमंत्री एमके स्टालिन से चेन्नई में एक साइकिल लेन बनाने की बात की। हमारे पास अब एक लेन है,'' वह मुस्कराते है। वह रोटरी के ग्लोबल योगा एंड मेडिटेशन फेलोशिप के सदस्य भी है और उन्होंने रोटरी वर्ल्ड पीस मिनट्स प्रोग्राम तैयार किया जो, शांति के लिए ध्यान और प्रार्थना को बढ़ावा देने वाली 10 मिनट की पहल है।

उन्होंने 175,000 डॉलर का दान दिया है और वह इस साल TRF को और 25,000 डॉलर एवं अगले साल 50,000 डॉलर का दान करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके अलावा, उन्होंने TRF के पर्यावरण कोष में 100 डॉलर का दान दिया है। 2015 से वह पॉल हैरिस सोसाइटी (PHS) के सदस्य है। ''मैं मंडल 3232 से PHS में शामिल होने वाला पहला रोटेरियन था। संस्थान के कार्यक्रमों और विभिन्न कोषों के बारे में जानकारी का अभाव है। मैं इस विषय पर रोटेरियनों को प्रशिक्षित और उनका मार्गदर्शन करना चाहता हूं।''

TRF को देने के लिए लोगों को प्रेरित करने का उनका तरीका ''पारंपरिक नहीं है। मैं लोगों से एक डॉलर भी नहीं मांगता। मैं संस्थान द्वारा संभव की गई कुछ महान परियोजनाओं के बारे में रोटेरियनों से बात करता हूँ और उन्हें दिखाता हूँ कि उनका निवेश TRF द्वारा किए गए अच्छे काम को कैसे बढ़ा सकता है।'' उनकी पत्नी, गीतारानी, ''एक अधिक आध्यात्मिक इंसान है और उन्होंने मुझे सेवा के मूल्य को बेहतर ढंग से समझने में मदद की। वह संस्थान को देने के मेरे फैसले का समर्थन करती है,'' अंबालावनन कहते है। ■

DRFC अम्बलावानान एम और उनकी पत्नी गीतारानी।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मुजफ्फरनगर के रोटेरियनों ने साक्षरता पर जोर दिया

जयश्री

ऊपर: क्लब द्वारा स्थापित अपने स्कूल की कंप्यूटर लैब में कंप्यूटर पर काम कर रहे छात्र।

नीचे: क्लब के सदस्य एक स्कूल को छत के पंखे दान करते हुए।

रोटरी क्लब मुजफ्फरनगर मिडटाउन, रो ई मंडल 3100 के लगभग 100 सदस्य, छात्रों की खातिर सीखने को एक मजेदार अनुभव बनाने के लिए, यूपी के मुजफ्फरनगर में सरकारी स्कूलों में परिवर्तन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। 1998 में अपने चार्टर के बाद से, क्लब ने हमेशा साक्षरता को प्राथमिकता दी है, सहायक गवर्नर समीर अग्रवाल कहते हैं।

क्लब ने इन 24 वर्षों में साक्षरता से संबंधित परियोजनाओं के साथ 70 सरकारी स्कूलों और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों को कवर किया है। हमने 30 स्कूलों में शौचालयों का निर्माण या नवीनीकरण किया है, 25 स्कूलों में, प्रत्येक में 5-7 कंप्यूटरों के साथ कंप्यूटर लैब स्थापित किए हैं, और 50 स्कूलों में ई-लर्निंग सुविधाएं, हैंडवाश स्टेशन और वाटर कूलर लगाये हैं, 2005 से क्लब के पूर्व अध्यक्ष सुनील अग्रवाल कहते हैं। क्लब ने 30 स्कूलों को क्लासरूम फर्नीचर और सीलिंग फैन उपलब्ध कराए हैं और हम छात्रों के लिए स्टेशनरी, स्कूल यूनिफॉर्म और फुटवियर वितरित करने के लिए नियमित रूप से इन स्कूलों का दौरा करते हैं, वे कहते हैं।

किशोरियों के लिए नियमित रूप से 'एमएचएम कार्यशालाएं' आयोजित की जाती हैं और उन्हें सैनिटरी पैड वितरित किए जाते हैं। इनमें से कुछ स्कूलों में सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीनें लगाई गई हैं। क्लब के सदस्य उन छात्रों की स्कूल फीस का भुगतान करने के लिए धन जमा करते हैं, जिनके माता-पिता में ऐसा करने की क्षमता नहीं है। दूर-दराज के स्थानों से स्कूल आने वाले बच्चों को साइकिल उपहार में दी जाती हैं। ''हमने इनमें से कुछ परियोजनाओं के लिए वैश्विक अनुदान सहायता प्राप्त की थी। अगले पांच वर्षों में हम इन सभी 70 स्कूलों को 'हैप्पी स्कूल' बनाना चाहते हैं,'' अग्रवाल

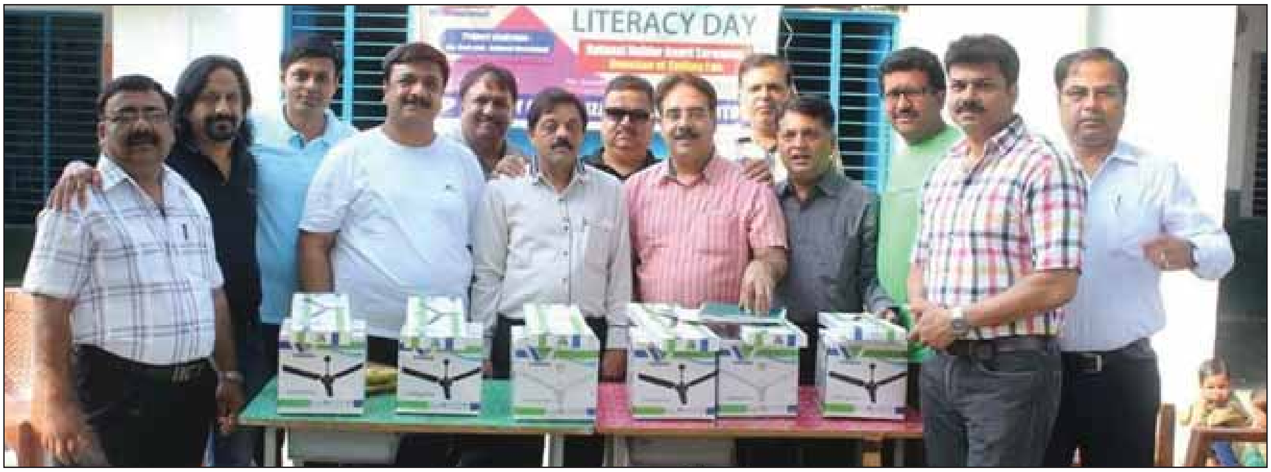

मुस्कुराते हैं, जो अगले दो वर्षों में टीआरएफ को 10,000 डॉलर का योगदान देकर एक प्रमुख दाता बनने की योजना बना रहे हैं।

क्लब के पास इस वर्ष के लिए दो वैश्विक अनुदान स्वीकृत हुए हैं। एक अनुदान का उपयोग बरौत जिले के सुरूरपुर कलां गांव में टेलीमेडिसिन सेंटर स्थापित करने के लिए किया जा रहा है। उनका कहना है कि इस सुविधा से क्षेत्र के ईंट-भट्ठा मजदूरों के बड़े समुदाय को फायदा होगा। दूसरे अनुदान का उपयोग कस्बे के सरकारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में डायलिसिस सुविधा स्थापित करने के लिए किया जा रहा है। इस वर्ष एक सरकारी स्कूल के लिए एक ई-लर्निंग सेंटर की योजना है।

क्लब के सदस्य एक बच्चे को साइकिल भेंट करते हुए।

सहायक गवर्नर कहते हैं, ''क्लब अपनी साक्षरता'' प्रचार गतिविधियों के लिए समुदाय में लोकप्रिय है और शहर के आसपास के विभिन्न ग्रामीण इलाकों में आयोजित 15 कोविड टीकाकरण शिविरों के कारण छवि और मजबूत हुयी थी, और आगे कहा की, नियमित अंतराल पर, सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम पर अतिरिक्त जोर देते हुए क्लब स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन करता है।

क्लब में 27 पॉल हैरिस फेलो हैं, जिन्होंने फाउंडेशन को 1,000 डॉलर का दान दिया है और उनमें से चार ने एमपीएचएफ बनने के लिए कई योगदान दिए हैं। ■

कोलकाता में स्कूली बच्चों के लिए एक कोचिंग सेंटर

टीम रोटरी न्यूज़

कोचिंग सेंटर में रोटेरियनों से चर्चा करते डीजी प्रबीर चटर्जी।

डीजी प्रबीर चटर्जी ने कोलकाता के शांतिनिकेतन के द्वारौंडा में रोटरी क्लब कलकत्ता जादवपुर, रो ई मंडल 3291 द्वारा, हाल ही में स्थापित एक कोचिंग सेंटर पंथनिवास ई-पाठशाला का उद्घाटन किया। केंद्र आसपास के चार गांवों के कक्षा 1 से 10 तक के छात्रों के लिए सभी विषयों में कोचिंग प्रदान करेगा। क्लब ने पांच स्नातक छात्रों को शामिल किया है जो सप्ताह में पांच दिन बच्चों के लिए कक्षाएं लेंगे और द्वारौंदा हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक सप्ताह में दो बार केंद्र का दौरा करेंगे ताकि व्यवस्था पर नजर रखी जा सके। केंद्र की कक्षाओं में भाग लेने वाले बच्चों को प्रतिदिन हल्का नाश्ता उपलब्ध कराया जाएगा।

एक वयस्क साक्षरता कार्यक्रम, पंथनिवास परिसर के घरेलू सहायकों को केंद्र में बुनियादी साक्षरता प्रदान करेगा। केंद्र के उद्घाटन के अवसर पर छात्रों को संदर्भ पुस्तकें, नोटबुक और स्टेशनरी वितरित की गई। ■

रोटरी क्लब पुणे साउथ ग्रामीण महिलाओं के लिए सोया दूध की कार्यशालाएं आयोजित करता है

टीम रोटरी न्यूज़

भारत के कुपोषित और अल्पपोषित बच्चों के लिए, सस्ता लेकिन प्रोटीन युक्त यह सोया दूध एक बहुत बड़ा वरदान है क्योंकि इसे गाय और भैंस के दूध की एक तिहाई कीमत पर घर पर बनाया जा सकता है।

चेट्रन प्रोडक्ट्स के संस्थापक साझेदार रंजीत पाल ने रो ई मंडल 3131 के PDG अरुण कुदाले के साथ यह विचार साझा किया था। उन्होंने इस विचार पर अपने क्लब, रोटरी क्लब पुणे साउथ, के सदस्यों से चर्चा की और सुझाव दिया कि वे ग्रामीण क्षेत्रों में एक पायलट परियोजना शुरू करें।

पहली कार्यशाला फरवरी 2021 में ज्ञान प्रबोधिनी की सुवर्णा ताई के अथक प्रयासों से नसरपुर के पास अंबावने गाँव में आयोजित की गई थी। इस प्रशिक्षण से लगभग 25 महिला आंगनबाड़ी कार्यकर्ता लाभान्वित हुई। ये महिलाएं वर्तमान में आसपास की आंगनबाड़ियों के बच्चों के लिए सोया दूध की आपूर्ति कर रही है। महाराष्ट्र के एक सेवानिवृत्त नौकरशाह रंजीत पाल द्वारा इस क्लब को दान किए गए धन के माध्यम से इन महिलाओं को उनके काम के लिए पैसे दिए जाते है। उन्होंने इन महिलाओं को ₹10,000 के उपकरण और इस परियोजना के लिए क्लब को अतिरिक्त ₹1 लाख भी उपहार में दिए।

''अब तक, हमारे क्लब ने कई तालुकों के 11 गाँवों में इस तरह की कार्यशालाएँ आयोजित की है। कुदाले कहते है, उन्होंने इस परियोजना की पहुंच का विस्तार करने के लिए हमारे क्लब को ₹20 लाख देने का वादा किया है ताकि अधिक कुपोषित बच्चे लाभान्वित हो सके।

10-25 वर्ष की महिलाओं के लिए आयोजित की जाने वाली ये कार्यशालाएं स्थानीय ग्राम पंचायत के पदाधिकारियों या क्षेत्र में धर्मार्थ संगठनों के न्यासियों के सहयोग से आयोजित की जाती है। क्लब अध्यक्ष अतुल आत्रे और उनकी टीम विभिन्न गांवों में ऐसी 20 कार्यशालाएं आयोजित करेगी।

कुदाले कहते है, ''सेवा में रहते हुए, उन्होंने जापान में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का अध्ययन किया और उनके परिवार के खाने की आदतों पर गौर करते हुए उन्होंने जाना कि भोजन में सोयाबीन का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। कुछ बच्चे या वयस्क भी गाय के दूध में मौजूद लैक्टोज को पचा नहीं पाते। सोया दूध और अन्य उत्पाद पशु से प्राप्त दूध की तुलना में कम कीमत पर मानव शरीर की

पीडीजी अरुण कुदाले और पूर्व अध्यक्ष सुदर्शन नाटू की मौजूदगी में कार्यशाला के बाद महिला समूह को मिक्सी देते हुए चेतन प्रोडक्ट्स के संस्थापक रंजीत पाल।

प्रोटीन आवश्यकता को पूरा कर सकते है। इसलिए, जापान में इनका उपयोग बड़े पैमाने पर किया जाता है, पाल ने ध्यान दिया।''

पाल ने लगातार पत्र भेजकर सरकार को सोयाबीन उत्पादों को बढ़ावा देने हेतु मनाने की बहुत कोशिश की लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। अंत में, 1990 में एक घरेलू मिक्सी में उन्होंने अपनी जापान यात्रा के दौरान प्राप्त की गई जानकारी के आधार पर सोया दूध और टोफू बनाया। उन्होंने इसे पुणे शिविर के दौरान दोराबजी मॉल में दिखाया। दोराबजी ने टिप्पणी की कि यह उत्पाद बढ़िया चलेगा और उन्हें पहला ऑर्डर दिया।

पाल के अनुसार, सोया दूध घर पर बनाना बहुत आसान है। बनाने का तरीका यहाँ है।

1 किलो सोयाबीन के बीज को 2 लीटर पानी में 6 से 8 घंटे के लिए भिगो दें। फिर इसे धीरे-धीरे पानी डालते हुए बारीक पीस लें जब तक कि आपको 7 लीटर का घोल न मिल जाएं। इस तरल पदार्थ को एक पतले, महीन जालीदार कपड़े से छान लें।

इस प्रकार तैयार किया गया दूध सामान्य दूध की तरह ही आगामी प्रक्रियाओं के लिए तैयार होता है। गर्म होने पर यह दूध कुछ घंटों तक चल सकता है। छानने वाले कपड़े में बचे अवशेषों का उपयोग खाना पकाने में या पशुओं के चारे के रूप में किया जा सकता है, जिससे कोई बर्बादी नहीं होती है ।

गरम दूध में दही या सोया दही मिलाने से सोया दही बनता है। इस दही से छाछ, चक्का या श्रीखंड को मनपसंद फ्लेवर मिलाकर तैयार किया जा सकता है। गर्म सोया दूध में 1 या 2 नींबू रस निचोड़ कर ठोस पदार्थ से पानी अलग करके टोफू या सोया पनीर बनाया जा सकता है। लगभग 90 मिनट के बाद ठोस पदार्थ अलग हो जाता है। एक प्रेस के माध्यम से पानी को निचोड़कर एक ठोस स्लैब बनाया जाता है। सूखा ठोस पदार्थ टोफू है। यह नियमित पशु दूध से निर्मित पनीर का एक बढ़िया विकल्प है। जब सब्जियों में इसका इस्तेमाल किया जाता है तो बहुत से लोग नियमित पनीर और टोफू के स्वाद में अंतर नहीं कर पाते।

ग्रामीण महिलाओं के लिए सोया दूध उत्पादन कार्यशालाएं सरल स्थानीय भाषा में आयोजित की जाती है और उन्हें नोट्स दिए जाते है। ■

TRF की मदद से अच्छे कार्य

तमिल नाडु के सूखा ग्रस्त गाँव में बोरवेल पानी प्रदान करते है

टीम रोटरी न्यूज़

क्लब के सदस्यों ने उन चार स्थलों में से एक पर जहां क्लब ने बोरवेल खोदे और पंप और पानी के भंडारण टैंक स्थापित किए।

तमिलनाडु के विरुधुनगर के पास रोसलपट्टी गांव के लगभग 750 निवासियों को रोटरी क्लब विरुधुनगर एलीट, रो ई मंडल 3212, द्वारा 60,900 डॉलर की वैश्विक अनुदान परियोजना के माध्यम से खोदे गए चार बोरवेलों से लाभ होगा। क्लब ने इस संस्थान परियोजना के लिए अपने वैश्विक भागीदार के रूप में रोटरी क्लब फार्गो मूरहेड AM, रो ई मंडल 5580, नॉर्थ डकोटा, णड को शामिल किया है।

निवासियों को दैनिक आधार पर पानी उपलब्ध कराने के लिए मोटर पम्प और नलों से सुसज्जित भंडारण टैंक स्थापित किए गए है। बोरवेल, पंप और भंडारण टैंक विरुधुनगर के आठ स्कूलों में 10,000 छात्रों को स्वच्छ पेयजल और हाथों की धुलाई की सुविधा भी प्रदान करेंगे, क्लब के प्राथमिक संपर्क सी मारिमुथु ने कहा। क्लबों के अलावा, एस एस पोन्नुसामी-सरस्वती अम्माल ट्रस्ट ने इस परियोजना के लिए ₹25 लाख का एक निर्देशित उपहार दिया है जो स्कूली बच्चों के साथ-साथ ग्रामीणों को भी लाभान्वित करता है।

उद्घाटन समारोह के दौरान, DGE वी आर मुत्तु ने एक बोरवेल सार्वजनिक उपयोग के लिए समर्पित किया। IPDG PNB मुरुगादोस, क्लब अध्यक्ष एन मुत्तुकुमार और मारिमुत्तु परियोजना स्थल पर मौजूद थे। ■

आपके गवर्नर्स

जे श्रीधर

ऑटो पार्ट्स विनिर्माण

रोटरी क्लब मद्रास इन्डस्ट्रीअल सिटी, रो ई मंडल 3232

चेन्नई में नई ऊंचाई पर सार्वजनिक छवि निर्माण

जे श्रीधर कहते है कि सार्वजनिक छवि निर्माण क्लब की गतिविधियों और परियोजनाओं में सबसे आगे रहा है क्योंकि ''12 सितंबर को पूरे शहर में हमारे विशाल कोविड टीकाकरण शिविरों और विश्व पोलियो रोड शो ने लोगों के बीच अच्छा प्रभाव डाला है।'' सभी क्लब वैक्सीन शिविर आयोजित करने में ग्रेटर चेन्नई कॉर्पोरेशन के प्रयासों का समर्थन कर रहे हैं और ''हमें अपनी साझेदारी के लिए नगर निकाय से प्रशंसा का प्रमाण पत्र मिला है।''

वह कहते है, रोड शो, रैलियों, मॉल में फ्लैश मॉब और ऑटोरिक्शा के माध्यम से पोस्टर और जागरूकता अभियान जैसे कार्यक्रमों की एक श्रृंखला ने क्लब की सार्वजनिक छवि को बढ़ाया है। ''164 क्लबों और 8,025 रोटेरियन के साथ, मुझे अगले कुछ वर्षों में रो ई मंडल 3232 में 10 प्रतिशत की वृद्धि का भरोसा है।'' इस साल, वह 1,200 की शुद्ध सदस्यता वृद्धि का लक्ष्य निर्धारित कर रहे है और ''हम पहले ही 19 नए क्लबों का गठन कर चुके है और तीन और जल्द ही अधिकृत किए जाएंगे।'' श्रीधर का लक्ष्य 2,000 नए रोटेरेक्टरों को शामिल करना है, जिससे संख्या 32,000 हो जाएगी और 20 नए क्लबों को जोड़ना है, जिससे सक्रिय रोटेरेक्ट क्लबों की संख्या 140 हो जाएगी।

''हम पूरे शहर में अनेक टिकाऊ परियोजनाओं को करने के लिए चेन्नई कोर्पोरेशन के साथ साझेदारी कर रहे है,'' वह कहते है। सरकारी और परोपकारी न्यास के अस्पतालों में ₹7.5 करोड़ के वैश्विक अनुदान के माध्यम से लगभग 12-14 डायलिसिस केंद्र (100 मशीनें) स्थापित किए जाएंगे। TRF में देने का उनका लक्ष्य 1.5 मिलियन डॉलर का है। ''हम नए रोटेरियनों को आकर्षित करने और मौजूदा सदस्यों को संबंध बनाने एवं मेल-जोल के लिए अवसर प्रदान करने के लिए फैलोशिप बना रहे है।'' वर्ष 2000 में रोटरी में शामिल होने के बाद, श्रीधर को उम्मीद है कि चेन्नई में क्लब निरंतर प्रगति करेंगे।

गौरीश धोंड

आतिथ्य, रोटरी कलब पणजी, रो ई मंडल 3170

पानी के संरक्षण के लिए विशाल पुनर्चक्रण संयंत्र

जल संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए, सरकारी अस्पतालों और रक्षा छावनियों में 10 पुनर्चक्रण सुविधाएं (STP इकाइयां) स्थापित की जाएंगी। ''जल शक्ति मंत्रालय ने परियोजना को मंजूरी दे दी है जिसे वैश्विक अनुदान और CSR फंडिंग के मिश्रण से पूरे किया जाएगा जिसमें 100,000 डॉलर प्रति इकाई का 60 प्रतिशत खर्च CSR उठाएगा,'' गौरीश धोंड कहते है।

मंडल आठ नए क्लबों को जोड़ेगा, जिनमें से चार पहले से ही गठित किए जा चुके है, जिससे संख्या को 143 तक पहुंचाया जा सकेगा। ''हम 1,000 की शुद्ध सदस्यता वृद्धि का लक्ष्य रखते है ताकि हमारी संख्या को 6,700 के पार ले जाया जा सके।'' एक मां के दूध का बैंक (वैश्विक अनुदान: 100,000 डॉलर) रोटरी क्लब सेवन हिल्स धारवाड़ द्वारा उन माताओं के लिए स्थापित किया जाएगा जो अपने बच्चों का पोषण नहीं कर सकती है।

उज्ज्वल दृष्टि अभियान के तहत, धारवाड़ के क्लबों ने 33,000 से अधिक बच्चों की आंखों के विकारों के लिए जांच की और भारत सरकार के विजन इंडिया कार्यक्रम के तहत मुफ्त चश्मे दिए गए। ''हमने बाढ़ पीड़ितों के लिए 32 घरों (प्रत्येक की लागत ₹5 लाख) बनाने के लिए गोवा सरकार के साथ समझौता किया है। जहां ₹2 लाख सरकारी सब्सिडी के रूप में आते है, बाकि क्लब फंडिंग के माध्यम से जुटाए जाते है।'' गोवा मेडिकल कॉलेज अस्पताल में बाल चिकित्सा विभाग को उन्नत बनाया जा रहा है (वैश्विक अनुदान: 60,000 डॉलर)। TRF के लिए, उनका लक्ष्य 1 मिलियन डॉलर है। धोंड राउन्ड टेबल इंडिया के सदस्य के रूप में सामाजिक कार्यों में सम्मिलित रहे है। ''चूंकि कोई भी 40 की उम्र के बाद राउंड टेबलर नहीं हो सकता है, मैं वर्ष 2000 में रोटरी में शामिल हो गया। वह इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी के गोवा चैप्टर के अध्यक्ष है।''

से मिलिए

वी मुत्तुकुमारन

के श्रीनिवासन

पैकेजिंग, रोटरी क्लब क्विलोन वेस्ट, रो ई मंडल 3211

के शणमुगसुंदरम

वाहन विक्रेता, रोटरी क्लब गोबी, रो ई मंडल 3203

'एंटे ग्रामम' रोटरी की सार्वजनिक छवि में वृद्धि करता है

150 क्लबों में से प्रत्येक ने मंडल की प्रमुख एंटे ग्रामम पहल के तहत कम से कम एक गांव गोद लेने का कार्यक्रम शुरू किया है। ''हमारी गांव की परियोजनाओं में घरों का निर्माण, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों एवं अस्पतालों को उपकरण प्रदान करना, शौचालय खंड जैसी सुविधाओं के साथ स्कूलों का पुनर्निर्माण करना शामिल है। सदस्यों के योगदान के माध्यम से धन जुटाया जाता है,'' के श्रीनिवासन कहते है। फरवरी में, स्थानीय विधायक और एक ज़मींदार द्वारा दान की गई 50 सेंट भूमि पर 10 घर (₹60 लाख) बनाने के लिए कोट्टयम के कुट्टीकल गांव में एक परियोजना शुरू की गई थी। उन्होंने कहा, ''हाल ही में आई बाढ़ में बेघर हुए लोगों को घर सौंपे गए है। हम इस साल 50 घरों का निर्माण करेंगे।''

TRF में देने का उनका लक्ष्य 1 मिलियन डॉलर का है। उन्हें 1,000 नए सदस्यों को जोड़कर कुल संख्या को 5,500 से अधिक ले जाने का पूरा विश्वास है। पंद्रह नए क्लब कुल संख्या को 157 तक ले जाएंगे। 1991 में रोटरी में शामिल होने के बाद, अपने पिता के दोस्त रोटेरियन पी ए सुब्रमण्यन से प्रभावित होकर 1991 में रोटरी से शामिल होने वाले DG कहते है, ''*एंटे ग्रामम* रोटरी के लिए विकास के अवसर पैदा करेगा क्योंकि गांव के बुनियादी ढांचे के निर्माण के हमारे प्रयासों ने हमारी सार्वजनिक छवि को बढ़ावा दिया है।''

₹60 करोड़ का एक कैंसर अस्पताल कतारबद्ध है

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने इरोड के पेरुनदुरई स्थित सरकारी अस्पताल में 400 बिस्तरों वाले कोविड अस्पताल को स्थापित करने के उनके प्रयास की प्रशंसा की, जो महामारी के चरम समय में ₹20 करोड़ की लागत से 45 दिनों के रिकॉर्ड समय में तैयार किया गया था।

नव-निर्मित मंडल के पहले ऊऋ के रूप में, षणमुगसुंदरम का लक्ष्य 20 नए क्लबों का गठन करना है ताकि कुल संख्या को 103 तक ले जाया जा सके। ''हमारा लक्ष्य 1,000 की शुद्ध सदस्यता वृद्धि का है, जिससे साल के अंत तक सदस्यता को 5,000 के पार ले जाया जा सकें। उदुमलपेट सामान्य अस्पताल में दो डायलिसिस केंद्र और तिरुपुर में एक निजी अस्पताल (वैश्विक अनुदान: ₹1.1 करोड़) में स्थापित किए जाएंगे; रोटरी क्लब तिरुपुर गांधीनगर द्वारा एक चलित हृदय-जांच क्लिनिक (वैश्विक अनुदान ₹1.5 करोड़) को हरी झंडी दिखाई जाएगी और यह पूरी तरह से सुसज्जित बस मुफ्त में एंजियोग्राम और एंजियोप्लास्टी करेगी।'' समलापुर गांव में 90 एकड़ के एक परित्यक्त तालाब का रोटरी क्लब तिरुपुर वेस्ट द्वारा कायाकल्प (₹2 करोड़) किया गया था।

TRF में देने का उनका लक्ष्य 1 मिलियन डॉलर का है। रोटरी क्लब मेट्टुपलायम ने रोटेरेक्टरों की मदद से एक डिजिटल एप 'आई रोट्री' विकसित की है। यह एप डिजिटल डेटा को तैयार करने के लिए दुनिया भर में रोटेरियनों द्वारा लगाए गए वृक्षों की संख्या को दर्ज करेगा। ''तिरुपुर के सामान्य अस्पताल में 60 करोड़ के कैंसर अस्पताल पर काम जल्द ही PDG डॉ मुरुगनादन के मार्गदर्शन में शुरू होगा।'' वह 1985 में चार्टर सदस्य पी करुप्पनन से प्रभावित होकर रोटरी में शामिल हुए। वह अपने कार्यकाल में सभी 14 वैश्विक अनुदान परियोजनाओं (निर्देशित उपहार: 473,000 डॉलर) को पूरा करने की उम्मीद करते है।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब ने स्पोर्ट्स इवेंट स्पॉन्सर किया

RID महेश कोटबागी, PDG दीपक शिकारपुर (दाईं ओर) और पूना यंग क्रिकेटर्स जिमखाना के चेयरमैन कुमार तम्हाने ने (बाएं से) क्लब अध्यक्ष किरण राव, रोटेरियन जयश्री हल्बे और PDG विलास जगताप की मौजूदगी में रोटरी स्टॉल का उद्घाटन किया।

रोटरी क्लब पुणे स्पोर्ट्स सिटी, रो ई मंडल 3131 ने, पुसालकर प्रीमियर लीग, पुणे क्रिकेट क्लबों के लिए एक टूर्नामेंट को सह-प्रायोजित किया। क्लब ने कार्यक्रम-स्थान पर रोटरी स्टॉल और रक्तदान शिविर लगाया। रो ई निदेशक महेश कोटबागी ने स्टाल का उद्घाटन किया।

सूरत में एक एलएन4 फिटमेंट कैंप

एलएन-4 शिविर में एक लाभार्थी।

रोटरी क्लब सूरत तापी, रो ई मंडल 3054, रोटरी क्लब जामनगर, रो ई मंडल 3060 के सहयोग से, सूरत में एक LN4 हैंड फिटमेंट कैंप का आयोजन किया। विभिन्न राज्यों के लगभग 77 लोग इससे लाभान्वित हुए।

ग्रामीण महिलाओं के लिए एक व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम

रोटरी आश्रिता प्रशिक्षण केंद्र में छात्रों का एक बैच।

रोटरी क्लब बैंगलोर लेकसाइड, रो ई मंडल 3190 ने, बेंगलुरु के पास कोइरा के आसपास के ग्रामीण गांवों की 100 स्वयं-सहायता समूह की महिलाओं को सिलाई और कढ़ाई कौशल प्रदान करने के लिए रोटरी-अश्रिता प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना की है।

रोटरी का 5-साल का वित्तीय पूर्वानुमान

***बाएं से:** PDGs मुरुगानंदम (D 3000), बी एम शिवराज (D 3142), TRF ट्रस्टी अज़ीज़ मेमन, PRID पी टी प्रभाकर, PDG ई के सगादेवन (D 3203) रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश।*

टीआरएफ ट्रस्टी अजीज़ मेमन ने 'महाब्स रोटरी इंस्टीट्यूट' में रोटरी का पांच साल का वित्तीय पूर्वानुमान प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता पीआरआईडी पी टी प्रभाकर ने की।

Rotary PEOPLE OF ACTION

पुरानी साड़ियों से कपड़े के थैले बनाना

जयश्री

रोटरी क्लब नागपुर ब्लैक गोल्ड, रो ई मंडल 3030 के रोटेरियन ने पुरानी साड़ियों को रंग-बिरंगे कपड़े के थैलों में तब्दील कर उन्हें नया जीवन दिया है। ''हमारी क्लब की एक बैठक में जब हमने गांवों की महिलाओं को नियमित आय अर्जित करने में मदद करने के तरीकों पर चर्चा की ताकि वे अपने परिवार की सहायता कर सकें, तब क्लब सचिव शीला ताई इस विचार के साथ आगे आयीं और हम इसके साथ आगे बढ़ गए,'' अनिल महाले, क्लब के चुने हुए अध्यक्ष ने कहा।

नागपुर से 35 किलोमीटर दूर एक गांव नागझरी को पायलट प्रोजेक्ट के लिए चुना गया था और ग्राम पंचायत ने 12 उद्यमी महिलाओं की पहचान कराने में मदद की जो काम करने के लिए तैयार थीं। सबसे पहले, क्लब का प्रत्येक सदस्य पाँच साड़ियाँ लाता था, जिन्हें अच्छी तरह से धोया और इस्त्री किया जाता था। तीन सदस्यों ने अपनी सिलाई मशीनें ग्रामीणों को दान कीं और शीला ने महिलाओं को साड़ियों से बैग सिलना सिखाया। ''100 से अधिक बैग कुछ ही समय में तैयार हो गए। फिर हम उन्हें नागपुर में स्थानीय विक्रेताओं के पास ले गए और प्रत्येक बैग को ₹10 में बेच दिया,'' महल ने कहा। विक्रेता प्लास्टिक की थैलियों की जगह, इन कपड़े के थैलों को बदलकर खुश थे और उन्हें अपने ग्राहकों के लिए सब्जियां, फल और अन्य किराने का सामान पैक करने के लिए इस्तेमाल करते थे। ''हमने अब बैग के लिए और खरीदारों की पहचान की है। इस मूल्यवान सेवा के दो पहलू हैं - यह महिलाओं को जीविकोपार्जन का साधन प्रदान करती है, पर्यावरण के अनुकूल पहल को बढ़ावा देती है और पॉलीथिन बैग के उपयोग को हतोत्साहित करने में मदद करती है। अधिक क्लब इस सरल लेकिन प्रभावी परियोजना को अपने समुदायों में दोहरा सकते हैं,'' उन्होंने कहा।

क्लब की सचिव शीला ताई महिलाओं को बैग बनाना सिखाती हुई।

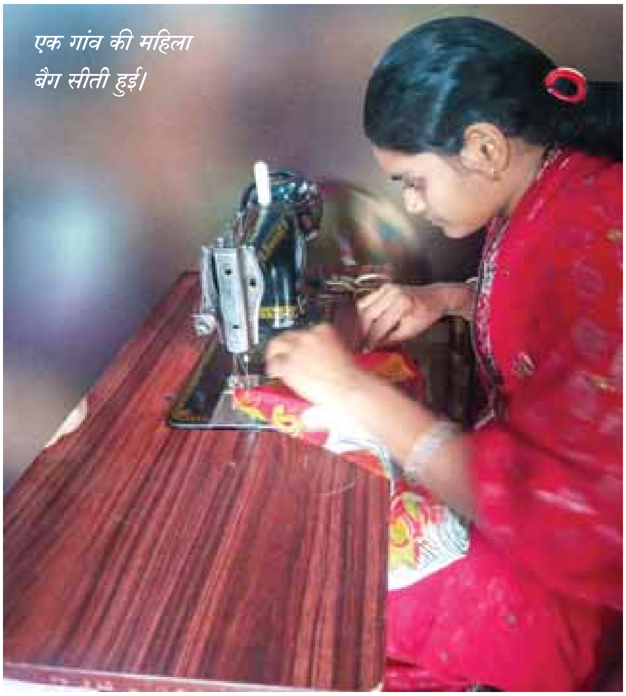
एक गांव की महिला बैग सीती हुई।

क्लब ने इस आर्थिक सशक्तिकरण परियोजना को और अधिक गांवों में विस्तारित करने की योजना बनाई है तथा अधिक सिलाई मशीनों की तलाश में है। वंचित महिलाओं को सिलाई का प्रशिक्षण देने के लिए हाल ही में सिलाई मशीन निर्माता सिंगर के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए हैं। ''हमने एक हॉल किराए पर लिया है और ₹1.27 लाख की लागत वाली 14 सिलाई मशीनें लगाई हैं। 'सिंगर' कंपनी महिलाओं को प्रशिक्षित करने के लिए स्टाफ मुहैया कराएंगे और डिप्लोमा सर्टिफिकेट जारी करेंगे, जिससे उन्हें टेक्सटाइल फर्मों में रोजगार पाने में मदद मिलेगी।''

छह साल पुराना क्लब, 22 सदस्यों वाला एक युगल क्लब है और महाले का लक्ष्य अपने वर्ष के दौरान 10 और युगल-जोड़ों को जोड़ना है। प्राथमिक ध्यान महिला सशक्तिकरण और लड़कियों के स्कूलों में बुनियादी ढांचे के विकास की उन्नति पर है। उन्होंने कहा, ''हम स्कूलों में शौचालयों का नवीनीकरण, हैंडवाश स्टेशन और सैनिटरी पैड वेंडिंग मशीन स्थापित कर रहे हैं। क्लब आस-पास के स्कूलों में नियमित दंत चिकित्सा जांच शिविर भी आयोजित करता है।'' ■

दादी माँ के नुस्के अपनायें

प्रीति मेहरा

यह बड़ी चीजें नहीं, बल्कि छोटी चीजें हैं, जो अलमारी को हरित कर देती हैं।

आपकी अलमारी को पर्यावरण के अनुकूल बनाने में कोई रॉकेट साइंस शामिल नहीं है, बस समय-समय पर अलमारी में झांकते रहना और आपके दादा-दादी की किताब से कुछ पत्ते पर्याप्त हैं। वे ऐसे समय में रहते थे जब ब्रांड कम थे, तेज फैशन नहीं था और कपड़ों को एक अलग लेंस से देखा जाता था।

पिछले अंक में, हम पहले ही देख चुके हैं कि कपड़ा और फैशन उद्योग कितना प्रदूषणकारी है और इसका जलवायु परिवर्तन पर क्या प्रभाव पड़ता है। लेकिन अगर हम इसके साथ कम जुड़ते हैं और इसके बदले अपनी रचनात्मकता और संवेदनशीलता का अधिक उपयोग करते हैं, तो हम पानी के उपयोग को नियंत्रित कर सकते हैं और समुद्र में अपना रास्ता ढूंढने वाले रसायनों और माइक्रोप्लास्टिक को कम करने में मदद कर सकते हैं।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम सिलाई कर सकते हैं। बस एक सूई में धागा डालकर बटन को टांकने के लिए के लिए जो बाहर गिर गया है, वह जेब जोड़ने के लिए जो अपना रास्ता भूल गया है या जो गोटा बाहर आ गया है, उसे फिर से जोड़ने के लिए। यह एक सरल कार्य एक परिधान के आयु को बढ़ा देगा, आपको इसे त्यागने से रोकेगा और यह आपको एक वस्त्र कम खरीदने में मदद करेगा।

इस लेख को लिखने के उद्देश्य से, मैंने तीन युवाओं, तीन मध्यम-आयु वर्ग के वयस्कों और एक वरिष्ठ महिला नागरिक से पूछा कि अगर उनका पसंदीदा परिधान कहीं से जरा फट जाए, उसके बटन गिर जाएं या उसका गोटा बिना जुड़े बाहर आ जाए, तो वे क्या करती हैं। चार ने मुझे एक ही जवाब दिया - कि वे इसे अपनी अलमारी के एक कोने में रख देती हैं और इसके बारे में भूल जाती हैं। कोई शक नहीं कि यह एक बेकार की चीज़ में गिनीं जाती हैं। एक ने कहा कि वह इसे किसी को दे देती है, जबकि दूसरी और भी अधिक टिकाऊ तरीके का पालन करती है। वह मरम्मत के लिए निकले सभी कपड़ों को इकठ्ठा कर लेती है और समय-समय पर, अधिकतर सप्ताहांत में, एक फ्रीलांस दर्जी को बुलाती है, जो कि उन सभी को ठीक करता है। वरिष्ठ महिला नागरिक ने न सिर्फ़ अपने, बल्कि परिवार के अन्य सदस्यों के भी कपड़ों की मरम्मत स्वयं की।

हालाँकि सभी पुरुष और महिलाएं सिलाई में माहिर नहीं हो सकते हैं, इसलिए एक दर्जी को बुलाना काफ़ी

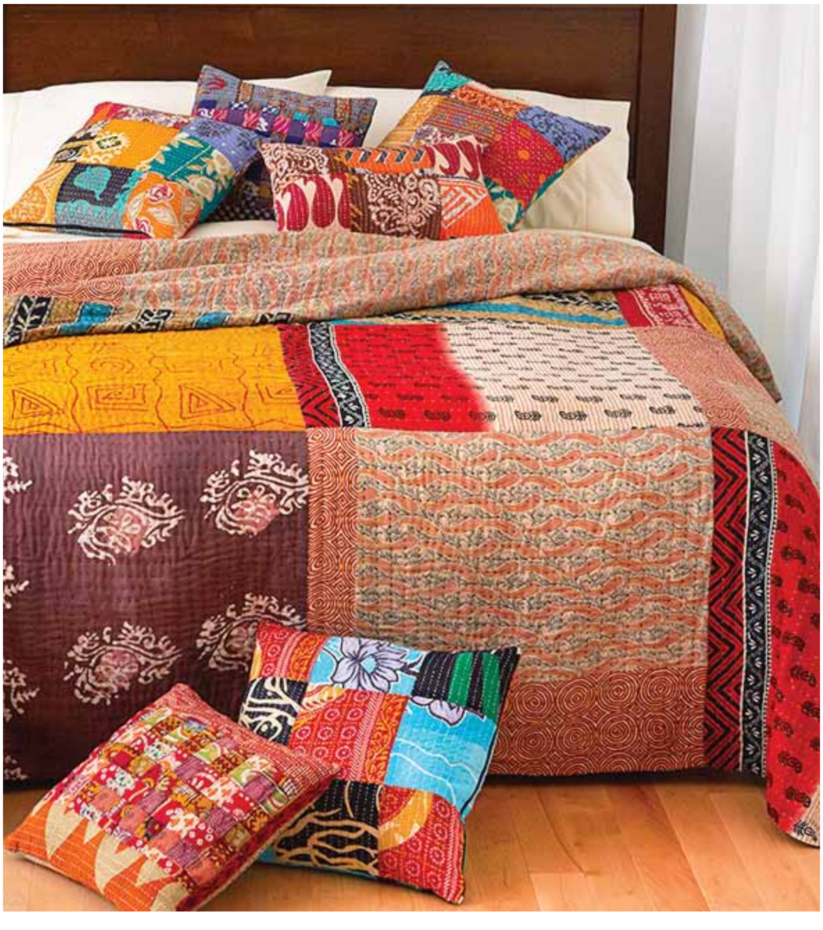

अच्छा विचार हो सकता है, खासकर ऐसे समय में जब अधिकांश दर्जी महामारी के कारण बेरोजगारी से जूझ रहे हैं, और आपकी यह मदद उनको रोजगार प्रदान करने में एक लंबा रास्ता तय कर सकती है। जबकि, यह सुनिश्चित करने का ज़रूर प्रयास करें कि दर्जी प्राकृतिक रेशों से बना धागा उपयोग करे। सिलाई करते समय बहुत सारा धागा बर्बाद हो जाता है और प्राकृतिक धागे का उपयोग सुनिश्चित करता है कि इससे खाद बनाई जा सकती है।

लेकिन निश्चित रूप से, यदि आप वास्तव में एक परिधान को फेंकना चाहते हैं, तो जैसा कि हम अक्सर करते हैं कि बटनों को बाहर निकालने, फीते को पहले जैसा करने, ज़िप को काटने और उन्हें किसी अन्य पोशाक पर दुबारा लगाने के लिए संभालकर रखने में अधिक समय नहीं लगेगा। अब नहीं पहने जानेवाले या आकारहीन वस्त्र जिनका अब कोई उपयोग नहीं है, को जब आकार में छोटे किये जाते है, तो बच्चों के लिए शानदार कपड़े बनते हैं और बच्चों के लिए फ्रॉक, स्मॉक्स, शर्ट और शॉर्ट्स भी। याद रखें- हमेशा नवीनीकरण, पुन: उपयोग और रीसायकल करें।

अपनी अलमारी में एक बार और झांकना इससे भी अधिक रचनात्मक विचार प्रस्तुत कर सकता है। उदाहरण के लिए, पुरुषों के घिसे-पिटे टाई, कपड़ों के लिए बढ़िया पाइपिंग का काम कर सकते हैं, फटी हुई शर्ट को रूमाल में और फटी हुई जींस को 'हार्डी काम करनेवाले शॉर्ट्स' में बदलकर नया रूप दिया जा सकता है। हमें उन वस्त्रों को इस बात की अनुमति नहीं देनी चाहिए, जो हर साल वातावरण में 1.22 और 2.93 बिलियन मैट्रिक टन कार्बन डाइऑक्साइड पंप करते हैं और सभी वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के 6.7 प्रतिशत के लिए जिम्मेदार हैं तथा ये कपड़े बेकार हो जाते हैं और लैंडफिल में ढेर हो जाते हैं।

उन लोगों के लिए जिनके पास कपड़ा सिलने या नए सिरे से तैयार करने का समय नहीं है, उनके लिए एक तीसरा विकल्प है - अपने देने लायक कपड़ो को इकट्ठा करें और उन्हें एक ऐसे संगठन को दें जो एक उद्देश्य के लिए पुनर्चक्रण कर रहा है। उदाहरण के लिए, 'एनजीओ गूंज' कपड़े इकट्ठा करता है - यहां तक कि लत्ता भी - और उन्हें अपने कारखाने में अद्भुत टेबलमैट, दरवाजे की चटाई और फर्श के आसनों में फैशनेबल तरीके से बदलता है। यह बेघर या प्राकृतिक आपदाओं के शिकार लोगों की मदद के लिए धन जुटाने के उद्देश्य से इन्हें आगे बेचता है।

पुराने कपड़े देने की बात मुझे देश में मौजूद स्टील के बर्तनों के लिए कपड़ों के आदान-प्रदान की परंपरा की याद दिलाती है। मुझे याद है कि तब मैं एक बच्चे के रूप में काफ़ी जिज्ञासु था, जब कुछ महिलाएं हमारे कॉलोनी के आसपास स्टील के प्लेट, मग, टंबलर और टिफिन बॉक्स टोकरियों में रखकर सिर पर लादकर लाती थीं। आपके पुराने कपड़ों के अनुसार इनका आदान-प्रदान किया जाता था। एक वयस्क के रूप में जब मैं एक पत्रकार बना, तो मैंने एक बार इन कपड़ों के बारे में पता लगाने के लिए उन महिलाओं का पीछा किया और पाया कि ये कपड़े एक चिंदी बाजार में आते थे, जो लगभग हर शहर या नगर में मौजूद थे। यहां कपड़ों का नवीनीकरण किया जाता था, कॉलर को अंदर से बाहर कर, जेबों के दोषों को छिपाकर, जरी को फिर से तैयार करके जल्द ही नए जैसे अच्छे कपड़े हो जाते थे जो कि उपभोक्ताओं के एक अलग वर्ग को पूरा करने के लिए एक सेकेंड हैंड मार्केट में बेचे जाते थे। तो, हमारे पास रीसाइक्लिंग की एक लंबी परंपरा है और जो बेकार नहीं थी, लेकिन इस डिजिटल, ऑनलाइन शॉपिंग युग में हम इसे भूल गए हैं।

एक स्थायी जीवन शैली के लिए कपड़े धोने के तरीकों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। पर्यावरण के अनुकूल डिटर्जेंट का उपयोग करने का प्रयास करें, जिसे अब कई लोग तैयार कर रहे हैं और धोते समय एक माइक्रो-मेष बैग का उपयोग करें। बैग धोते समय निकलने वाले माइक्रो प्लास्टिक को कम करेगा। यदि आप सिंथेटिक वस्त्रों की धुलाई कर रहे हैं, तो बैग माइक्रोफाइबर को पकड़ने में मदद करेगा और उन्हें पानी के साथ मिलने से रोकेगा। ऐसा अनुमान है कि लगभग महासागरों में मौजूद 35 प्रतिशत माइक्रोप्लास्टिक की उत्पत्ति होती है, हमारे द्वारा पहने जाने वाले और हमारे द्वारा उपयोग किए जानेवाले कपड़ों से।

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

RF(I) योगदान के लिए अनिवार्य आवश्यकताएँ/दिशानिर्देश

- 1 अप्रैल, 2020 से, RF(I) के लिए ऑनलाइन/ऑफलाइन किए गए सभी योगदानों के लिए पैन प्रदान करना अनिवार्य है, चाहे राशि कितनी भी क्यों ना हो या आयकर अधिनियम, 1961, की धारा 80G के तहत कर छूट प्राप्त करने हेतु दावा करने का दाता का इरादा हो या न हो।
- योगदान की प्राप्ति और संबंधित 80G रसीद केवल प्रेषक के नाम पर ही उत्पन्न की जा सकती है और रो ई के साथ पंजीकृत ईमेल आईडी पर दाता को मेल की जाती है।
- स्व-स्वामित्व/ परिवार द्वारा संचालित कंपनी/ न्यास के खाते से किए गए योगदान के लिए, दानकर्ताओं से अनुरोध किया जाता है कि वे कॉर्पोरेट/न्यास के लेटरहेड पर एक पत्र साझा करें जिसमें इकाई के साथ उनके संबंध का उल्लेख हो और जिसमें किए गए योगदान को उनके व्यक्तिगत योगदान के रूप में माने जाने की बात लिखी हो।

क्लब मान्यताएँ

TRF क्लबों को अपने अनुदान और कार्यक्रमों के समर्थन के लिए मान्यता अर्जित करने के कई अवसर प्रदान करता है। *माय रोटरी* में उपलब्ध *क्लब फाउंडेशन बैनर रिपोर्ट* के माध्यम से क्लब नीचे सूचीबद्ध विभिन्न क्लब बैनरों के लिए वर्तमान रोटरी वर्ष में क्लब की प्रगति को देख सकते है:

- 100% फाउंडेशन गिविंग क्लब;
- 100% एव्री रोटेरियन, एव्री ईयर क्लब;
- वार्षिक दान के मामलें में शीर्ष तीन व्यक्ति;
- 100% पॉल हैरिस सोसायटी क्लब; और
- 100% पॉल हैरिस फेलो क्लब *(एक बार मिलने वाला बैनर)*।

2015-16 से, नए क्लब सदस्यों (जो वर्तमान रोटरी वर्ष के दौरान किसी अन्य क्लब से शामिल हुए या स्थानांतरित हुए) को क्लब बैनरों (100% पॉल हैरिस फेलो बैनर को छोड़कर) की भागीदारी आवश्यकताओं में शामिल नहीं किया जाता है। हालांकि, नए सदस्यों के योगदान का उपयोग प्रति व्यक्ति गणना के लिए किया जाएगा।

क्लब फाउंडेशन बैनर रिपोर्ट में सूचीबद्ध बैनर प्राप्तकर्ता पूरे रोटरी वर्ष के दौरान सदस्यता में परिवर्तन एवं अतिरिक्त या पुनर्वितरित योगदानों के कारण पूरे रोटरी वर्ष में उतार-चढ़ाव कर सकते है। अंतिम बैनर प्रमाणन रोटरी फाउंडेशन द्वारा 30 जून को रोटरी वर्ष की समाप्ति के बाद संसाधित किया जाता है। पिछले वर्ष के लिए अर्जित क्लब बैनर अक्टूबर या नवंबर में वर्तमान DG को भेज दिए जाते है। आप *rotarysupportcenter@rotary.org* पर डिस्ट्रिक्ट फाउंडेशन बैनर रिपोर्ट का अनुरोध कर सकते है। यह क्लब/मंडल नेतृत्वकर्ताओं के लिए उनके *माई रोटरी* लॉगिन के माध्यम से भी उपलब्ध है।■

रो ई निदेशक वेंकटेश, रो ई कोषाध्यक्ष हैं (2022-23)

रो ई के निदेशक ए एस वेंकटेश 2022-23 के लिए रोटरी इंटरनेशनल के कोषाध्यक्ष होंगे, जबकि जेनिफर जोन्स रो ई की अध्यक्ष होंगी।

रो ई निदेशिक निकी स्कॉट (इंग्लैंड) उपाध्यक्षा और रो ई निदेशिक एलिजाबेथ युसोविकज़ (मिसौरी, संयुक्त राज्य अमेरिका), कार्यकारी समिति की अध्यक्षज्ञश होंगी।

STATEMENT ABOUT OWNERSHIP

Statement about ownership and other particulars about *Rotary Samachar* to be published in the first issue of every year after the last day of February

1. Place of Publication	:	Chennai - 600 008
2. Periodicity of its publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	P T Prabhakar
Nationality	:	Indian
Address	:	15, Sivasami Street Mylapore Chennai 600 004
4. Publisher's Name	:	P T Prabhakar
Nationality	:	Indian
Address	:	15, Sivasami Street Mylapore Chennai 600 004
5. Editor's Name	:	Rasheeda Bhagat
Nationality	:	Indian
Address	:	25, Jayalakshmipuram 1st Street Nungambakkam Chennai - 600 034
6. Name and address of individual who owns the newspaper and partner or shareholders holding more than one percent of the total capital	:	Rotary News Trust Dugar Towers, 3rd Floor 34, Marshalls Road Egmore Chennai - 600 008

I, P T Prabhakar, declare that the particulars given are true to the best of my knowledge and belief.

Chennai - 600 008 sd/-
1st March, 2022 P T Prabhakar

Rotary PEOPLE OF ACTION

नि:शक्तजनों के मददगार

वी मुत्तुकुमारन

आइए एक ऐसे रोटेरियन के बारे में जानते है जो विकलांग व्यक्तियों की भलाई केलिए इस हद तक परवाह करता है कि उन्होंने ऐसे जोड़ों की शादी करवाने के लिए अपने क्लब, रोटरी क्लब तूतीकोरिन, रो ई मंडल 3212, को प्रेरित किया है। ''मेरा क्लब नवविवाहितों को उनकी शारीरिक सीमाओं के बावजूद एक अच्छी आय अर्जित करने में पूरी सहायता करता है। हम 100 विकलांग जोड़ों की शादी प्रायोजित करने के लिए तैयार है,'' क्लब के अध्यक्ष जी पी जो प्रकाश कहते है। क्लब की इस सेवा से तमिलनाडु के दक्षिणी भाग में स्थित इस बंदरगाह शहर में रोटरी की ख्याति में वृद्धि हुई है।

महामारी के कारण लगे लॉकडाउन के कारण, 42 सदस्यों वाला यह क्लब जनवरी 2021 से सार्थक परियोजनाएं नहीं कर पा रहा था। ''हम में से अधिकांश 50 से अधिक उम्र के है, और संभलने के लिए हमारे अपने उद्यम है। लेकिन अचानक से एक दिन मुझे इस बात का एहसास हुआ कि इस कोरोना की इस लहर से विकलांग लोग सर्वाधिक प्रभावित हुए है, और हमें, रोटेरियनों के रूप में, उनके कष्टों को कम करने के लिए कुछ करना चाहिए,'' प्रकाश कहते है। 24 जनवरी को, क्लब ने डी रॉबर्ट और पी जेया की शादी कारवाई, जिसके बाद 27 जनवरी को ए विजयराज और एम कनागवल्ली की एक और शादी हुई।

प्रकाश कहते है कि नवविवाहित जोड़ों के पास सीमित संसाधनों तक पहुंच होती है और वे जीवनयापन करने के लिए संघर्ष करते है क्योंकि उनकी विकलांगता उनके लिए जीवन को बहुत कठिन बना देती है। ''जहां रॉबर्ट एक ऑटोमोबाइल पेंटर है, हालांकि उसकी उंगलियां नहीं है और वह कुछ कमा लेता है, विजयराज को हमारे समर्थन की आवश्यकता है। हमने उन्हें सोने का एक मंगल सूत्र दिलाने में मदद की। क्लब जोड़ों को घर की सभी जरूरी चीजें प्रदान करेगा।''

शोपीस हॉल

क्लब विकलांग व्यक्तियों को उनके कार्यक्रमों एवं साप्ताहिक सभाएं आयोजित करने के लिए अपना रोटरी रोच विक्टोरिया हॉल नि:शुल्क देता है। 1946 में एक प्रमुख दानकर्ता जॉन मोथा के योगदान से निर्मित इस हॉल का नाम PDG JLP रोच विक्टोरिया के नाम पर रखा गया है। इसे हाल ही में 12 लाख की लागत से तीसरी बार नवीनीकृत किया गया था। क्लब की बैठकों एवं कार्यक्रमों के अलावा, ''शोपीस हॉल को सामाजिक कार्यक्रमों, शादियों एवं सालगिरह के समारोहों के लिए किराए पर दिया जाता है, जिसके लिए हम सभी खर्चे मिलाकर 24,000 प्रतिदिन लेते है,'' प्रकाश कहते है।

एक सामाजिक कार्यकर्ता दुरई पांडी विकलांग और उपेक्षित परिवारों के लिए कार्यक्रमों की योजना एवं उसकी रूपरेखा बनाने में क्लब की मदद कर रहे है। वह महिला दिवस को चिह्नित करने के लिए एक विशाल एक दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन कर रहे है जिसमें ट्रांसजेंडर, विकलांग महिलाएं और विशेष बच्चों की माताएं विभिन्न प्रकार के मनोरंजन, नृत्य और संगीत कार्यक्रमों के दिन भर चलने वाले पर्व में भाग लेंगी। ''हमें उम्मीद है कि लगभग 250 महिलाएं कार्यक्रमों में शामिल होंगी। पचास विकलांग महिलाओं, ट्रांसजेंडरों और अग्रिम पंक्ति की कोरोना योद्धाओं (महिलाओं) को सम्मानित किया जाएगा,'' पांडी कहते है।

क्लब के सदस्य लिटिल सिस्टर्स ऑफ द पुअर, एक वृद्धाश्रम, और आदिकलापुरम गांव में सेंट जोसेफ अनाथालय में मासिक राशन वितरित करने और उनके खर्चों के लिए नकद दान करने के लिए जाते है। प्रकाश 4-5 व्यापार चलाते है और वह खेल निकायों जैसे ऑल इंडिया चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज, तूतीकोरिन चैप्टर; तूतीकोरिन SIPCOT इंडस्ट्रीज एसोसिएशन; स्थानीय जिमखाना क्लब; और जिला शतरंज संघ के प्रमुख भी है। ''व्यापार संघ के जॉब पोर्टल के माध्यम से, हम विभिन्न उद्योगों जैसे ईंधन खुदरा स्टेशनों और अन्य अनुबंधित नौकरियों के लिए विकलांग लोगों को नियुक्त करते है।''

अपने हीरक जयंती वर्ष पर, प्रकाश, एक प्रमुख दानकर्ता, जून-अंत तक एक उत्सव आयोजित करने के विचार पर काम कर रहे है। 35 से भी अधिक वर्षों से लॉजिस्टिक्स व्यवसाय में होने के बाद, वह कहते है, ''हर दिन मैं अपने रोटेरियनों और व्यावसायिक सहयोगियों के साथ विकलांगों को नौकरी दिलवाने के लिए बात करता हूं, जिनके कौशलों का उद्योग निकायों द्वारा दोहन किया जाना अभी बाकी है।''■

विजयराजा और कनागवल्ली की शादी में अध्यक्ष जो प्रकाश (दाएं), के साथ (बाएं से) कोषाध्यक्ष डेविड राजा और सचिव आनंद गणेश।

तनाव प्रबंधन

शीला नांबियार

आपका दिल तेज़ दौड़ रहा है, आप थोड़ी मिचली-सा और सिर हल्का महसूस कर रहे हैं। आपकी सांस उथली है। आप अपनी प्रस्तुति देने का इंतज़ार कर रहे हैं और सोच रहे हैं, काश आप इसे करने के लिए कभी सहमत नहीं होते। क्या यह घटना आपसे परिचित है? यह और ऐसे कई अन्य क्षण जो चिंता और तनाव के समान लक्षण पैदा कर सकते हैं, हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा हैं।

दबाव एक तनावपूर्ण घटना के दौरान जारी कोर्टिसोल, एड्रेनालिन और नॉरपेनेफ्रिन जैसे हार्मोन के लिए शारीरिक प्रतिक्रियाओं को प्रेरित करता है। समय के साथ, यदि पुरानी और अनसुलझी तनाव बनी रहती है, तो शरीर की शारीरिक प्रतिक्रिया के बाद इन हार्मोनल परिवर्तनों से अल्सर, उच्च रक्तचाप, धमनीकाठिन्य, गठिया, अवसाद, ऑटोइम्यून विकार और एलर्जी प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं।

तनाव की अलग-अलग डिग्री होती है - प्रस्तुति देने से पहले की हल्की चिंता से लेकर कार दुर्घटना के दौरान और बाद का तीव्र तनाव, किसी प्रियजन का देहांत, नौकरी छूटना, तलाक या घर का स्थानांतरण। एक व्यक्ति के लिए जो तनावपूर्ण है, वह दूसरे के लिए भी वैसा ही हो, यह ज़रूरी नहीं। यह अत्यधिक व्यक्तिगत है और अक्सर दबाव के लिए आपकी सहनशीलता और इसे प्रबंधित करने की क्षमता पर निर्भर करता है।

कुछ तनाव जरूरी भी है और आवश्यक भी। वास्तव में, तनाव की सही मात्रा में हमारा विकास करने, चुनौती देने और हमें व्यस्त और केंद्रित रखने में मदद कर सकती है।

कम समय में, तनाव हार्मोन हमारी प्रतिरक्षा, प्रेरणा, अनुभूति, फोकस और ड्राइव में सुधार करते हैं। समस्याएँ तब शुरू होती हैं जब हम निरंतर तनाव का सामना करते हैं, खासकर जब वे पृष्ठभूमि में अनसुलझे होते हैं। बीमारी, स्वास्थ्य, गरीबी, आघात, मृत्यु आदि अक्सर हमारे नियंत्रण से बाहर होते हैं और अत्यधिक तनाव का कारण बनते हैं।

हालाँकि, हमारे आधुनिक जीवन में कई तनाव समाज के निर्माण के तरीके और इसके प्रति हमारी प्रतिक्रिया से निर्मित होते हैं। उदाहरण के लिए, सफलता की हमारी परिभाषा (पैसा, नाम, प्रसिद्धि) और इस सफलता को प्राप्त करने के लिए सामाजिक दबाव, उपभोक्तावाद, भौतिक सामग्री की हमारी अत्यधिक आवश्यकता, लोगों को प्रसन्न करने, दूसरों से निरंतर तुलना और पर्याप्त नहीं होने की हमारी भावना के बारे में सोचें ... ये और ऐसी कई और कथित मांगें जो हम पर रखी गई हैं, वे अनावश्यक तनाव हैं जो स्व-निर्मित हैं।

तनाव को प्रबंधित करने के लिए सबसे पहली बात यह है कि इसे पहचानें और उस तनाव के बीच अंतर करें जो आपके लिए अच्छा है और वह, जो कि अनावश्यक है और जो आपके नियंत्रण से बाहर है। एक समय सीमा से पहले आप जो तनाव महसूस करते हैं, एक महत्वपूर्ण बैठक या प्रस्तुत बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरक शक्ति साबित हो सकती है। यहां तक कि एक दर्दनाक घटना के तनाव को भी परिवर्तन और विकास के लिए एक प्रोत्साहन के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

अगली बात यह है कि आप जिस भावना को महसूस कर रहे हैं, उसे स्पष्ट रूप से वर्णित करें। जब आप कहते हैं कि 'मैं काम पर तनावग्रस्त हूं', यदि आप इसके बारे में अधिक गहराई से सोचेंगे तो आप इसे फिर से अलग तरह से कहना चाहेंगे, जैसे 'मैं निराश हूं और काम से संतुष्ट नहीं हूं'। आपकी भावनाओं की

यह सावधानीपूर्वक अभिव्यक्ति लंबी अवधि में वास्तविक समस्या से बेहतर तरीके से निपटने में आपकी सहायता कर सकती है।

तत्काल दबाव प्रतिक्रिया (तेज़ी से धडकता दिल, चिंता आदि) का प्रबंधन करने के लिए, सांस एक कुंजी है। ये लक्षण आपके सहानुभूति तंत्रिका तंत्र के उत्तेजित होने का परिणाम हैं जो उत्तेजना पैदा करते हैं। उचित साँस लेने की तकनीक सीखना इन अप्रिय लक्षणों को लगभग तुरंत कम करने में मदद कर सकता है। आपकी सांस आपके तंत्रिका तंत्र को नियंत्रित करती है। सही तरीके से सांस लेने से पैरा-सहानुभूति तंत्रिका तंत्र को उत्तेजित करने में मदद मिलेगी जो आपको शांत करता है।

प्रतिक्रिया को आपके शरीर के रसायनों को जारी करने के लिए प्रोत्साहित करने की आपकी व्यक्तिगत क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है, जो आपके मस्तिष्क को आपकी मांसपेशियों को आराम करने, दिल को धीमा करने और मस्तिष्क में रक्त के प्रवाह को बढ़ाने का संकेत देता है। 1960 और 1970 के दशक के अध्ययनों से पता चला है कि ध्यान बेहतर स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है, खासकर उच्च रक्तचाप वाले व्यक्तियों में। जो लोग नियमित रूप से ध्यान करते हैं, वे कम तनाव का स्तर, विकास में बढ़ोत्तरी और कम आराम करने वाली हृदय गति का अनुभव करते हैं। विश्राम प्रतिक्रिया अनिवार्य रूप से 'लड़ाई या भगायी' तनाव प्रतिक्रिया के विपरीत प्रतिक्रिया है।

विश्राम प्राप्त करने के कई तरीके हैं। श्वसन-व्यायाम तनाव के प्रति शारीरिक प्रतिक्रिया को नियंत्रित करने का सबसे तेज़ तरीका है। नीचे चार सरल साँस लेने की तकनीकें दी गयी हैं, जिन्हें आप चुन सकते हैं:

- **गहरी सांस लेना और छोड़ना** -नाक से गहरी सांस लें और रूखे होठों से सांस छोड़ें। कई बार दोहराएं।
- **वैकल्पिक नथुने से सांस लेना** - योग में अभ्यास करवाया जाता है और *नाड़ी सोधन* बुलाया जाता है। इस विधि में अपनी अनामिका और अंगूठे का उपयोग करके वैकल्पिक नथुने को बंद करना शामिल है। जैसा कि आप बाएं नथुने से सांस लेते हैं, उस नथुने को बंद करते हैं और दाएं नथुने से सांस छोड़ते हैं। इसके बाद बारी-बारी से दाएं नथुने से सांस लें और बाएं से बाहर छोड़ें।
- **डबल इनहेल** - अन्यथा इसे शारीरिक 'आह' कहा जाता है। एक दो त्वरित श्वास (बीच में एक साँस छोड़े बिना) एक लंबी साँस छोड़ने के बाद है।
- **लंबी सांस छोड़ें या 4-7-8 श्वास लें** डॉ एंड्रयू वेइल द्वारा लोकप्रिय - 4 की गिनती तक सांस लेना, 7 की गिनती तक सांस रोकना और 8 की गिनती तक बाहर निकालना।

लंबी अवधि में, तनाव को प्रबंधित करने और जीवन को समभाव के साथ चलाने के लिए कई चीजों की आवश्यकता होती है।

— **नियमित श्वास अभ्यास** (यहां तक कि दिन में सिर्फ़ दो बार, 5 मिनट के लिए भी मदद करता है)

— **ध्यान** - यदि आप 'ध्यान' में आरंभ करना चाहते हैं, तो शुरुआत करने के लिए उरश्रा या चळपवीरिलिश जैसे ऐप का उपयोग करें। ध्यान के लाभों को प्राप्त करने के लिए नियमित (यहां तक कि संक्षिप्त भी) अभ्यास महत्वपूर्ण है।

— गैर-तनाव-गहरी नींद (NDSR): अभ्यास जैसे *योग निद्रा* NDSR की श्रेणी में आते हैं। यह एक निर्देशित ध्यान है (आप यूट्यूब पर पा सकते हैं) जो आपको गहराई से आराम करने में मदद करेगा।

स्टैनफोर्ड स्कूल ऑफ मेडिसिन के एक न्यूरोबायोलॉजिस्ट डॉ एंड्रयू ह्यूबरमैन ने अवधि 'नॉन-स्लीप-डीप-रेस्ट' इन तकनीकों का वर्णन करने के लिए लाया है, जो आपके मस्तिष्क को रिचार्ज करने के लिए वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हैं।

— नियमित व्यायाम - किसी भी प्रकार का व्यायाम लंबे समय तक तनाव को नियंत्रित करने में मदद करता है। निरंतरता मायने रखती है।

जो लोग नियमित रूप से ध्यान करते हैं, वे कम तनाव का स्तर, विकास में बढ़ोत्तरी और कम आराम करने वाली हृदय गति का अनुभव करते हैं।

— नियमित अच्छी गुणवत्ता वाली नींद। अच्छे मानसिक स्वास्थ्य और तनाव को प्रबंधित करने के लिए 7-8 घंटे की अच्छी गुणवत्ता वाली नींद महत्वपूर्ण है।

— अपनी तनाव की मानसिकता को बदलना। तनाव को विकास के अवसर के रूप में देखें। अपने आप को चुनौती देने के लिए इसे एक स्टेपिंग बोर्ड के रूप में उपयोग करें।

— बेहतर सामाजिक जुड़ाव। शोध से पता चला है कि जब आपके जीवन में आपका समर्थन करने वाले अन्य लोगों के साथ मजबूत संबंध होते हैं, तो तनाव कम हो जाता है और अधिक प्रबंधनीय होखोज जाता है।

जबकि जीवन में तनाव एक मिला हुआ है, आप इसके तत्काल प्रभावों और दीर्घकालिक परिणामों के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, यह नहीं मिला है। तनाव के तात्कालिक प्रभावों को नियंत्रित करने के लिए अपनी सांस का उपयोग करने से तनाव-हार्मोन द्वारा बनाए गए अप्रिय लक्षणों को दूर किया जा सकता है। व्यायाम, ध्यान, श्वास और नींद जैसे दैनिक विषयों को बनाने से पैरासिम्पेथेटिक तंत्रिका तंत्र को तनाव के प्रति बेहतर प्रतिक्रिया करने में मदद मिल सकती है। हालांकि तनाव को प्रबंधित करने का सबसे महत्वपूर्ण पहलू आपकी तनाव मानसिकता हो सकती है जो वास्तव में अभिघातज के बाद के विकास को जन्म दे सकती है।

लेखिका एक जीवन शैली चिकित्सक है।
sheela.nambiar@gmail.com
www.drsheelanambiar.com

Rotary at a glance

Rotary clubs	:	36,754
Rotaract clubs	:	10,934
Interact clubs	:	17,067
RCCs	:	12,061
Rotary members	:	1,191,822
Rotaract members	:	239,329
Interact members	:	392,541

As on February 22, 2022

Membership Summary

As on February 1, 2022

RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians (%)	Rotaract Clubs	Interact Clubs	RCC
2981	134	6,110	7.53	48	52	238
2982	76	3,447	7.19	47	98	73
3000	131	5,373	9.32	94	281	214
3011	116	4,489	26.38	73	118	36
3012	148	3,959	25.18	65	79	61
3020	78	4,735	7.29	32	166	350
3030	96	5,172	15.39	118	251	361
3040	99	2,427	13.76	55	81	196
3053	69	2,781	18.55	34	49	118
3054	166	6,938	20.60	104	179	563
3060	104	5,068	15.17	64	71	149
3070	119	3,196	15.24	47	37	59
3080	97	4,152	13.27	137	159	115
3090	90	2,273	5.63	42	73	123
3100	98	2,198	10.05	13	26	146
3110	139	3,771	11.93	14	17	106
3120	86	3,561	16.43	63	34	55
3131	139	5,493	23.79	111	235	140
3132	87	3,552	10.87	32	125	166
3141	113	6,263	27.06	141	186	102
3142	98	3,631	21.12	79	147	81
3150	110	4,145	13.15	82	143	118
3160	77	2,574	8.78	29	20	82
3170	139	6,292	15.02	85	243	169
3181	86	3,451	8.81	35	196	115
3182	85	3,444	9.64	42	127	104
3190	160	6,662	18.49	168	207	71
3201	154	6,044	9.53	116	96	71
3203	92	4,719	7.80	73	233	36
3204	61	2,078	6.64	21	27	13
3211	151	4,976	8.40	7	24	133
3212	130	4,855	11.51	76	204	153
3231	92	3,481	8.04	29	81	419
3232	162	7,803	18.58	120	215	100
3240	101	3,512	15.86	62	405	218
3250	104	3,900	20.41	63	73	185
3261	91	3,158	17.16	15	24	44
3262	124	4,105	14.30	71	82	118
3291	168	4,180	23.30	133	97	652
India Total	**4,370**	**167,968**		**2,640**	**4,961**	**6,253**
3220	72	2,232	15.68	88	133	75
3271	114	2,246	17.94	97	185	25
3272	157	1,831	17.31	70	22	47
3281	303	7,301	17.60	273	150	209
3282	178	3,633	11.09	199	47	47
3292	152	5,962	17.28	171	132	128
S Asia Total	**5,346**	**191,173**		**3,538**	**5,630**	**6,784**

Source: RI South Asia Office

District Wise TRF Contributions as on January 2022

(in US Dollars)

District Number	Annual Fund	PolioPlus	Endowment Fund	Other Funds	Total Contributions	EREY Donors (in numbers)	EREY %
India							
2981	97,027	1,247	15,000	183,814	297,088	160	3.0
2982	33,195	5,633	1,500	3,449	43,777	149	4.6
3000	4,121	638	0	38,402	43,160	15	0.3
3011	9,452	6,428	0	151,796	167,676	22	0.5
3012	20,530	3,811	50,041	323,182	397,564	37	1.0
3020	63,102	8,868	30,596	4,620	107,186	177	4.2
3030	31,570	721	63,185	15,704	111,179	76	1.6
3040	34,258	270	0	21,361	55,890	8	0.3
3053	3,250	1,811	27	0	5,088	6	0.2
3054	4,814	2,766	0	205,254	212,834	17	0.2
3060	52,423	1,442	0	86,419	140,284	808	16.8
3070	20,665	27	0	27,601	48,293	92	3.0
3080	22,864	5,804	3,889	9,760	42,317	153	4.8
3090	25,347	0	29,000	0	54,347	129	6.2
3100	21,838	100	0	2,537	24,475	72	3.3
3110	20,551	355	1,014	0	21,919	85	2.4
3120	59,189	1,000	0	0	60,189	143	4.2
3131	337,264	31,471	27,000	398,882	794,617	1,689	36.0
3132	25,116	1,978	5,000	11,400	43,495	47	1.4
3141	271,999	4,700	89,865	630,764	997,328	512	8.7
3142	263,593	3,481	8,145	35,839	311,058	617	18.2
3150	64,621	9,411	91,000	88,588	253,621	577	14.6
3160	91,558	4,423	17,264	0	113,244	40	1.7
3170	46,518	10,926	1,710	31,901	91,055	242	4.1
3181	27,388	4,639	203	0	32,229	154	4.7
3182	32,285	8,469	0	15,274	56,028	104	3.3
3190	163,797	17,227	31,762	36,518	249,305	590	9.6
3201	72,934	58,672	0	239,093	370,699	348	6.1
3203	27,275	16,438	7,086	197,371	248,170	163	4.0
3204	20,967	4,623	0	1,036	26,626	28	1.4
3211	25,337	657	0	17,858	43,852	47	1.0
3212	25,565	1,899	1,036	4,561	33,061	54	1.1
3231	15,114	9,620	0	2,851	27,586	143	4.2
3232	59,748	61,931	99,155	470,201	691,035	115	1.6
3240	83,459	12,292	0	75,237	170,988	309	9.5
3250	15,018	2,992	1,036	19,842	38,888	210	5.8
3261	5,683	983	300	146,447	153,413	14	0.5
3262	6,667	1,954	0	0	8,621	23	0.6
3291	81,182	2,137	11,171	16,584	111,074	216	5.7
India Total	**2,287,284**	**311,843**	**585,982**	**3,514,147**	**6,699,255**	**8,391**	**5.4**
3220 **Sri Lanka**	40,478	6,661	1,510	1,000	49,649	119	5.2
3271 **Pakistan**	6,240	3,431	0	17,755	27,425	9	0.5
3272 **Pakistan**	16,732	11,133	0	2,117	29,982	14	0.8
3281 **Bangladesh**	37,161	6,150	17,000	207,392	267,703	110	1.4
3282 **Bangladesh**	27,475	9,099	1,000	29,943	67,516	76	2.0
3292 **Nepal**	88,094	10,424	0	100,611	199,129	616	10.6
South Asia Total	**2,503,464**	**358,740**	**605,492**	**3,872,965**	**7,340,660**	**9,335**	**5.2**

Annual Fund (AF) includes SHARE, Areas of Focus, World Fund and Disaster Response.

Source: RI South Asia Office

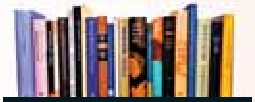

Wordsworld

In the end, it's always love

Sandhya Rao

When more than half the boys in a PG Business Communication class choose the romance genre for a reading-related assignment, something's on the happen.

We relate to these stories, said one young man. I feel like he's telling my story, said another. Easy read, said a third. But there are also layers, clarified a fourth, it's not so simple. And it flows with feelings, said a young woman. Listen, I love romance, said my friend, my age. Unabashedly. And another friend, my age, a feminist and women's studies professor who has written several academic books that escape my comprehension entirely, has read practically every single Mills&Boon in Raviraj Lending Library, T Nagar, when we were in college. And recently, a highly erudite fellow book clubber confessed to having a soft-soft spot for romantic novels. In her words: 'Not many people can reconcile to the fact that people can read serious creative stuff along with historical romance brain candy.'

At my students' age I was more of an Edgar Wallace, Agatha Christie, Georgette Heyer, Zane Grey, Lobsang Rampa fan. Chicklit has never been my thing and I only read one Chetan Bhagat out of curiosity (although he's justifiably popular and has expanded his repertoire considerably). I find it hard to plough through lovey-dovey yarns despite poring over my mother's copies of *Women's Weekly*'s short stories at age 11–12. I have not felt the urge to dip into *Fifty Shades of Grey* by E L James, but in my defence, I have read, with interest in college, *Lolita* by Vladimir Nabokov as also *Lady Chatterley's Lover* by D H Lawrence.

Given all this, you will understand my surprise at my students' choices. However, what this communicated was that young people today feel a great need to be loved and to love, to feel wanted and needed and valued. It's another matter that for many, this was the first book in any language they were reading — and that, for a bookaholic like myself, is puzzling in itself. This month's booklist, then, is a tribute to my students, especially to those who may — hopefully just may — have come down with a case of readingitis, however mild.

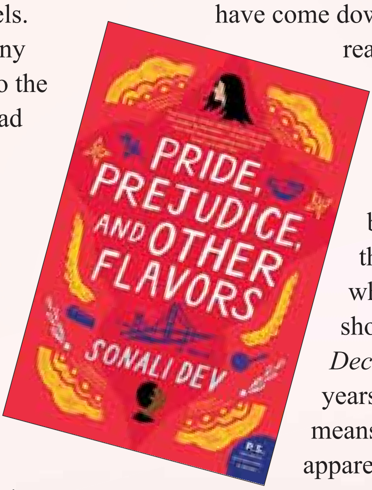

Andaleeb Wajid was my first choice. I had been fascinated by the name, Andaleeb, when I first saw her short stories in the *Deccan Herald* many years ago. (The name means nightingale, apparently.) Then, a few years ago, I chanced upon *More Than Just Biryani*, and enjoyed it. This Bangalore-based writer has more than 25 books to her credit, covering many genres. Her favourite, she's said in an interview, is romance.

The two I picked were *Twenty-nine Going on Thirty* and *All Drama No Queen*, because they are connected — except that I read them in the wrong order because they were delivered that way! Priya stars in the first one, Fatima in the second. While they are primarily romances, there's some intrigue going on as well, apart from a weaving in of other complicated relationships, not all to do with love-shove. Andaleeb Wajid writes lucidly and is clearly in touch with the world as we know it today. Tragically, she lost her husband and mother-in-law to the corona virus last year. Writing for *Scroll.in* about how writing is helping her through these dark times, she

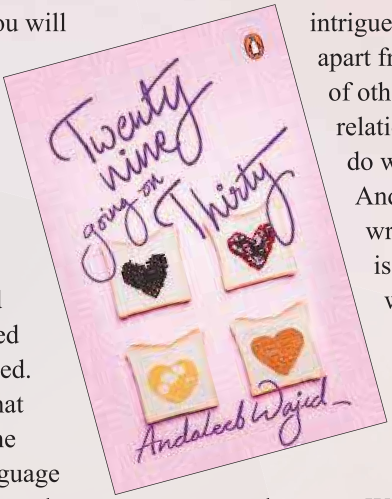

Young people today feel a great need to be loved and to love, to feel wanted and needed and valued.

concludes: 'As I scribble away in my notebook to plan the next book, I often look at my phone. The lock screen has a photo of my husband: a screenshot I took from a video of him driving, where he kept looking at me and making funny faces. I look at the photo a hundred times a day. Sometimes, I cry. Sometimes, I wonder why this happened. I rail at the unfairness of it all. And then, I get back to work.'

Readers may have seen the film, *The Zoya Factor*, featuring the delectable Dulquer Salman. Well, it's based on a book by Anuja Chauhan, widely regarded as being among the best writers of popular fiction in India today (move over, whoever!). Her books are well researched, racy, pacy, and her characters are, well, characters alright! In fact, it would seem that all her novels are movie material. She is often described as one of the best writers of chicklit, to which an entry in Wikipedia claims she responds with: 'Chicks are small, brainless, powerless creatures, bred to be eaten. I'm not a chick and I don't write for chicks.'

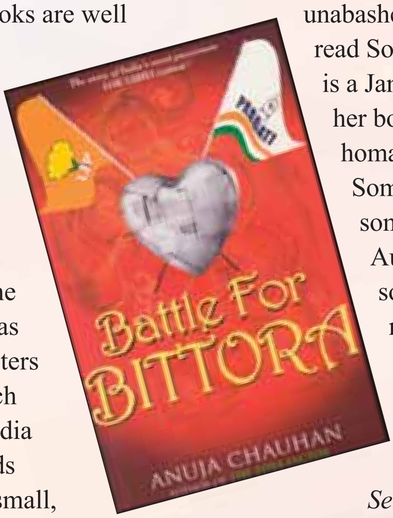

Among my favourite books is her *Battle for Bittora*, a novel that authentically explores the dynamics of elections. Not surprising, considering that the Congress leader of long standing, Margaret Alva, is her mother-in-law. Anuja Chauhan writes fearlessly and vigorously, all the drama, even melodrama, in her writing never pushing the romance into the shadows. For this month's column, I read *The Zoya Factor* (far more intriguing than the film) and *Baaz* (totally gripping). What made *Baaz* even more fascinating was that the main action is set against the backdrop of the creation of Bangladesh in 1971. Coincidentally, I've been watching *Jo Bicchar Gaye*, a Pakistani serial about what they refer to as 'the fall of Dhaka', told from the (West) Pakistani perspective. Seeing something from different points of view is an education, always interesting, always insightful.

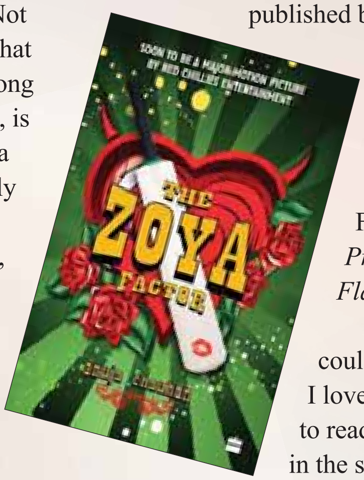

My friend who loves romance unabashedly pushed me to read Sonali Dev. This writer is a Jane Austen fan, so her books kind of pay homage to that writer. Some time ago, there was something called the Austen Project in which some of Jane Austen's most famous novels were re-imagined by modern writers. These included *Sense and Sensibility* by Joanna Trollope, *Northanger Abbey* by Val McDermid and *Emma* by Alexander McCall Smith. I must admit I was not a fan of this project, and took my friend's recco with some reservation. Sonali Dev's list of published books is long, so I went with the first of a series about the Rajes, an immigrant family living in San Francisco: *Pride, Prejudice and Other Flavours.*

Once I started, I couldn't put it down! I loved it and can't wait to read the next books in the series, as well as some of her other books. The plot is engaging, the style is riveting, the characters are well put together, and best of all, the mileu is multicultural. The description on the back of the book says Sonali Dev 'writes Bollywood-style love stories that let her explore issues faced by women around the world while still indulging her faith in happily-ever-afters'. In PPOF, the mom character is a former Bollywood actor. For Austen fans, here are the names of the books in this series that follow: *Recipe for Persuasion*, *Incense and Sensibility*, *The Emma Project*… !

Of course, these are just three names in a long and growing list of serious writers of romance. Which only goes to prove that in the final analysis, it doesn't matter in whom we trust, or whether we cover our heads or not. We all want love. Romance, yes, but also the warm feeling that comes from feeling safe and secure and wanted. It comes from our world of family, friends and other animals, and all that we experience with them in all the things we do.

The columnist is a children's writer and senior journalist

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब पांडिचेरी व्हाइट टाउन - रो ई मंडल 2981

बूथुरई पंचायत संघ प्राथमिक विद्यालय में 130 छात्रों को किताबें एवं स्टेशनरी सामग्री दान की गई।

रोटरी क्लब दिल्ली साउथ सेंट्रल - रो ई मंडल 3011

क्लब के अध्यक्ष रजनीश मित्तल ने सफदरजंग अस्पताल को 15 भ्रूण-संबंधी डॉपलर मशीनें दान की।

रोटरी क्लब विल्लुपुरम सेंट्रल - रो ई मंडल 2982

क्लब ने रोटरी क्लब विल्लुपुरम के साथ मिलकर वाहन चालकों के बीच संदेश फैलाने के लिए 2,500 किमी की विशाल ट्रैफिक जागरूकता मोटर रैली का आयोजन किया।

रोटरी क्लब पिलखुवा सिटी - रो ई मंडल 3012

एक विकलांग व्यक्ति को ट्राइसाइकिल दान की गई। कई सालों से, क्लब ऐसे लोगों को ट्राईसाइकिल दान कर रहा है।

रोटरी क्लब मानवई क्वींस - रो ई मंडल 3000

एक सिलाई प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन रोटेरियन नीलावती गोपालकृष्णन और मीना सुब्बैय्या द्वारा किया गया।

रोटरी क्लब वैज़ाग ऐलीट - रो ई मंडल 3020

एक विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें रोटरी ब्लड बैंक द्वारा 170 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब कश्मीर - रो ई मंडल 3070

रोटरी आशा किरण सेंटर, बंदीपुर, में बच्चों को स्कूल बैग और स्टेशनरी वितरित की गई।

रोटरी क्लब कुशीनगर - रो ई मंडल 3120

क्लब ने शहर के बुद्ध मुख्य द्वार पर एक मेले में आने वाले लोगों को 15,000 मास्क वितरित किए।

रोटरी क्लब कुरुक्षेत्र - रो ई मंडल 3080

वंचित लड़कियों को उनके स्कूल आने-जाने के लिए साइकिल वितरित की गई।

रोटरी क्लब पुणे कर्वेनगर - रो ई मंडल 3131

पुणे के दूरदराज के गांवों में 52 ज़िला परिषद स्कूलों (2,500 छात्रों) में ₹14.56 लाख की CSR परियोजना के माध्यम से UV जल शोधक स्थापित किए गए।

रोटरी क्लब मेरठ उमंग - रो ई मंडल 3100

श्रीराम सरस्वती शिशु मंदिर में रोटरी क्लब मेरठ यूनिक और चंद्रमोहन फाउंडेशन के सहयोग से एक वर्षा जल संरक्षण इकाई स्थापित की गई।

रोटरी क्लब न्यू बॉम्बे सीसाइड - रो ई मंडल 3142

आचार्य श्री ननेश्वर अस्पताल, बेलापुर, को आठ मोटर चालित ICU बेड (₹10 लाख) दान किए गए। इस परियोजना को GN हियरिंग इंडिया द्वारा वित्त पोषित किया गया था।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब गुंटूर विकास - रो ई मंडल 3150

क्लब ने सड़क किनारे रहने वाली एक निराश्रित महिला को 60 किलो चावल दान किया और एक अनाथालय स्कूल को 50 प्लेटें दी गईं।

रोटरी क्लब बेलहोन्नूर - रो ई मंडल 3182

वैश्विक अनुदान और कर्नाटका बैंक द्वारा आंशिक वित्तपोषण के माध्यम से सरकारी अस्पताल में एक डायलिसिस इकाई स्थापित की गई।

रोटरी क्लब गुड्डूर - रो ई मंडल 3160

DG वी तिरुपति नायडू ने पुनर्निर्मित राम नगर नगरपालिका उद्यान का उद्घाटन किया गया। इस परियोजना को ₹5 लाख की लागत से पूरा किया गया।

रोटरी क्लब बैंगलोर कैन्टोन्मेन्ट - रो ई मंडल 3190

इसके दो वर्षीय प्रोजेक्ट हेल्दी मदर हेल्दी इंफेंट के तहत, 18 स्तनपान कराने वाली और गर्भवती माताओं को मासिक आधार पर पोषण किटें दी जा रही है।

रोटरी क्लब हुबली सेंट्रल - रो ई मंडल 3170

हुबली के नेकर नगर स्थित एक सरकारी स्कूल में 450 छात्रों के लिए रोटेरियन डॉ श्रुति पाटिल द्वारा दंत शिविर लगाया गया।

रोटरी क्लब त्रिचूर सिटी - रो ई मंडल 3201

ग्रेट त्रिशूर साइक्लोथॉन ने 300 साइकिल चालकों की भागीदारी के साथ हृदय और फेफड़ों की बीमारियों पर जागरूकता पैदा की।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब कारमडई - रो ई मंडल 3203

एक आदिवासी गांव के लिए एक पोंगल महोत्सव का आयोजन किया गया। ग्रामीणों को चावल की बोरियों और कंबल के साथ ₹3.5 लाख के गिफ्ट हैंपर दिए गए।

रोटरी क्लब शिवकाशी - रो ई मंडल 3212

पोंगल पर, क्लब अध्यक्ष एम एन मनोहरन ने एक विकलांग व्यक्ति अय्यनर को कपड़े, मिठाई और किराने का सामान उपहार में दिया।

रोटरी क्लब ओड़यांचल - रो ई मंडल 3204

कासरगोड जिले के आयरोटे निवासी एम के आदर्श को क्रॉन्स रोग के इलाज के लिए ₹20,000 की वित्तीय सहायता दी गई।

रोटरी क्लब राउरकेला क्वींस - रो ई मंडल 3261

प्रशिक्षण कार्यशालाओं के बाद RCC बिर्केरा के सदस्यों को सिलाई मशीनें और ओवन दान किए गए। लाभार्थियों को कंबल वितरित किए गए।

.रोटरी क्लब एलेप्पी ग्रेटर - रो ई मंडल 3211

क्लब ने थाथमपल्ली वार्ड में वंचित महिलाओं के लिए एक प्रशिक्षण केंद्र शुरू करने के लिए एलेप्पी नगरपालिका को सिलाई मशीनें दान की।

रो ई मंडल 3291

एंटाली अकादमी में आयोजित एक स्वास्थ्य शिविर में 400 लोगों की जांच की गई, जो एक गैर सरकारी संगठन एंटाली सप्तशिखा के सहयोग से आयोजित किया गया था।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

फिल्म अवलोकन में क्रमिक विकास

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

एक वक़्त था, ज़्यादा नहीं, सिर्फ 25 साल पहले, जब अधिकांश लोग साल में तीन या चार फिल्म देखते थे। क्योंकि फ़िल्में बनती ही कम थीं। लोग, ज्यादातर शीर्ष सितारों की फिल्में देखते थे, फिल्म खराब है या बढ़िया इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। लेकिन, उस वक्त अच्छी बात ये थी कि तब फ़िल्में देखना न तो बहुत महंगा था और न ही समय खराब होता था। और फिर, 1990 के दशक में प्रवेश हुआ मल्टीप्लेक्स का।

1960 के मध्य में इसकी शुरुआत चेन्नई में नीलम थिएटर से हुई थी, जिसमें तीन हॉल होते थे - पहला तमिल के लिए, सबसे बड़ा; दूसरा अंग्रेजी के लिए, थोड़ा छोटा; और तीसरा अन्य क्षेत्रों की विविध फिल्मों के लिए। यह सबसे छोटा था। आप एक टिकट खरीदें और चाहें तो उसमें पूरे दिन बैठे रहें। कॉलेज के बाहर रोमांस के लिए कम भीड़ भाड़ वाले इलाके की तलाश में भटक रहे युवा लड़कों और लड़कियों के लिए ये जगह उपयुक्त थी - सार्वजनिक स्थल मरीना बीच की तुलना में कम लोग होते थे लेकिन होते तो थे। जैसा कि देश के हजारों थिएटरों में होता है, गेट कीपर की टॉर्च ने अँधेरे में होने वाले रोमांटिक क्रिया कलाप की सीमाएँ बांध दी थीं। जहां तक मुझे ध्यान पड़ता है ऐसा मॉडल सिर्फ चेन्नई में ही था।

मल्टीप्लेक्स आने के बाद फ़िल्में देखना महंगा हो गया है। आपको एक फिल्म देखने की कीमत, देखते हुए आप क्या खाते हैं उसे मिला कर ₹1,000-₹1,500 के बीच पड़ती है। इसलिए फिल्म देखना एक लग्जरी बनकर रह गया है। आमतौर पर एक परिवार एक वर्ष में आधा दर्जन से अधिक फिल्में नहीं देख पाता, भले ही इच्छा बहुत होती हो। अकेला व्यक्ति अधिक से अधिक एक दर्जन देख सकता है, बस। प्रत्येक अपने अपने टिकट का भुगतान करते हैं।

फिर आया, सैटेलाइट टीवी का युग, सन 2000 के आसपास, और अचानक से आप घर बैठे लगभग शून्य लागत पर फिल्म देख सकते थे। लेकिन चैनल कम थे, करीब एक दर्जन। उनमें से अधिकांश मुफ्त में उपलब्ध थे, जिसका मतलब है कि बहुत जल्द उनके पास दिखाने योग्य जो कुछ भी था जल्द ही चुक गया। अगर आप एक हफ्ते में तीन फिल्में देखते हैं, तो इस हिसाब से साल भर में 156 फिल्में हुईं। और इतनी फ़िल्में किसी भी चैनल के पास नहीं थीं, और वो शायद ही नई फिल्मों के अधिकार खरीदते थे। नतीजतन धीरे धीरे, कुछ सालों में सैटेलाइट टीवी पर फिल्में देखने का आकर्षण भी कम हो गया।

यहां तक कि क्षेत्रीय भाषा के सिर्फ फिल्म वाले चैनलों की आई बाढ़ से भी कोई सहायता नहीं मिली। इसलिए 2000-10 के उछाल के बाद 2010 से लगभग एक दशक में, हम वापस वहीं पहुँच गए थे जहां से चले थे, क्योंकि फिल्मों की मांग 1,000 गुना बढ़ गई थी। भले ही फिल्में लगभग मुफ्त थीं, लेकिन एक टीवी सेट और एक सैटेलाइट डिश की जरूरत तो थी। अपेक्षाकृत संपन्न लोग ही उन्हें वहन कर सकते थे।

> **मल्टीप्लेक्स आने के बाद फ़िल्में देखना महंगा हो गया है। आपको एक फिल्म देखने की कीमत, देखते हुए आप क्या खाते हैं उसे मिला कर ₹1,000-₹1,500 के बीच पड़ती है।**

2015 के बाद से तो पूरा परिदृश्य ही बदल गया। सस्ते स्मार्टफोन और डिजिटल सामग्री तक लगभग मुफ्त पहुंच से, 2020 आते आते, अविश्वसनीय तरीके से पहुंच बेहतर और लागत कम हो गई और आपूर्ति लगभग असीमित मात्रा में बढ़ गई थी क्योंकि अब आप पूरी दुनिया की फ़िल्में सबटाइटल के साथ देख सकते थे। नेटफ्लिक्स, डिज़नी-हॉटस्टार और अमेज़ॅन प्राइम ने लॉकडाउन की तकलीफ को काफी हद तक कम कर दिया था। यदि आप चाहें, तो एक दिन में 10 फ़िल्में देख सकते हैं, भले ही फास्ट फ़ॉरवर्ड मोड में, जिससे इसकी अवधि औसतन 100 मिनट से घटकर 60 हो जाती है।

लेकिन अब एक नई समस्या खड़ी हो गई। मैं बहुत जल्दी भूल जाता हूं कि मैंने क्या देखा था, महीने भर में ही, क्योंकि मैंने पूरी फिल्म ही नहीं देखी और अगर देखी भी तो अन्य कार्यक्रम देखते हुए या कोई और काम करते हुए देखी, जिसमें एक टेस्ट मैच देखना, लेख लिखना, फोन से ज़ूम पर बात करना शामिल है। और कभी कभार घर का काम भी, हालांकि वो बहुत कम होता है। आप पूछ सकते हैं, तो आपकी पत्नी क्या करती है? ठीक है, वो भी ठीक वही करती है जो मैं करता हूं - वह उस आधे भाग को देखती है जो मैंने नहीं देखा। आप भी यह करके देखो, दोस्तों, यह ठीक वैसे ही है जैसे धोनी और जडेजा क्रीज पर विकेटों के बीच दौड़ते हैं।■

संक्षेप में

स्कूलों के लिए एंटी-बुलिंग ऐप

पाथवे स्कूल, गुड़गांव की 13 वर्षीय कक्षा 8 की छात्रा अनुष्का जॉली ने स्कूल में बदमाशी को रोकने के लिए एंटी-बुलिंग स्क्वॉड (ABS) नामक एक मोबाइल ऐप बनाया है। उन्होंने इस सोशल वेंचर की शुरुआत 2018 में की थी। ABS ने 100 से अधिक स्कूलों और विश्वविद्यालयों के 2,000 से अधिक छात्रों को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है और एक उद्यमी रियलिटी शो, 'शार्क टैंक इंडिया' से ₹50 लाख का फंडिंग ऑफर प्राप्त किया है।

तेजी से पिघल रहे हैं हिमालय के ग्लेशियर

'नेशनल सेंटर फॉर पोलर एंड ओशन रिसर्च', जो कि 2013 से पश्चिमी हिमालय के चंद्रा बेसिन में छह ग्लेशियरों की निगरानी कर रहा है, ने एक अध्ययन जारी किया है, जो पुष्टि करता है कि पिछले 400 से 700 वर्षों में हिमालय के ग्लेशियर लगभग 40 प्रतिशत क्षेत्र खो चुके हैं- 28,000 वर्ग किमी से सिकुड़कर लगभग 19,600 वर्ग किमी पर आ गए हैं।

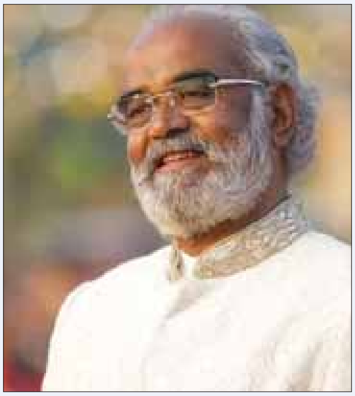

पद्म श्री पुरस्कार विजेता ने हेलिकॉप्टर दान किया

पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित 'हरि कृष्ण हीरा कंपनी' के मालिक सावजी ढोलकिया ने हाल ही में उनके परिवार द्वारा उपहार में दिया गया ₹50 करोड़ का हेलिकॉप्टर दान में दिया। नए हेलिकॉप्टर का उपयोग सूरत में चिकित्सा और अन्य आपात स्थितियों के लिए किया जाएगा। वह पहले अपने कर्मचारियों को महंगे लॉयल्टी प्रोग्राम से पुरस्कृत करने के लिए सुर्खियों में आए थे।

प्रतिशोधि बंदर

महाराष्ट्र के बीड जिले में एक अजीबोगरीब घटना सामने आई है, जिसमें गुस्साए दो बंदरों ने कथित तौर पर करीब 250 पिल्लों को मार डाला है। घटना की शुरुआत उसी क्षेत्र में एक नवजात बंदर के मारे जाने के बाद हुई। बदले के रूप में डब किए गए पिल्लों की हत्या ने स्थानीय अधिकारियों को उन दो बंदरों को गिरफ्तार करने के लिए मजबूर किया जो पिल्लों को ऊंची इमारतों में ले जा रहे थे और उन्हें वहाँ से नीचे फेंक रहे थे।

डेथ कैफे का विस्तार

2011 में लंदन में शुरू हुआ 'डेथ कैफे आंदोलन' 70 देशों में फैल गया और 10,000 से अधिक डेथ कैफे मीटिंग्स को पूरा कर चूका है। जो लोग मौत के बारे में बात करना चाहते हैं, उनके लिए कैफे मुफ्त और खुले हैं। कैफे इस विषय पर जागरूकता बढ़ाने और लोगों को उनके नुकसान से निपटने में मदद करने के लिए एक सुरक्षित और सहायक वातावरण में मौत की चर्चा को बढ़ावा देते हैं।

किरण ज़ेहरा द्वारा संकलित; एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा।

Registered No. TN/CCN/359/2021-2023 | Total number of pages in this monthly
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/21-23 | issue, including cover, 84. Price: ₹35
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on the first week of every month

रोटरी पत्रिका का सब्स्क्रिप्शन नहीं लेने वाले क्लबों को बंद किया जाएगा

कई वर्षों से **रोटरी क्लबों द्वारा रोटरी पत्रिका का सब्स्क्रिप्शन नहीं लिए जाने या पत्रिका की बकाया राशि का भुगतान नहीं किए जाने से क्षेत्रीय पत्रिका प्रबंधक निराश है।** सब्स्क्रिप्शन नहीं लेने से रोटरी के मुख्य संदेशों को साझा करने पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

नवंबर बोर्ड की बैठक में इसका अनुपालन न करने वाले क्लबों के लिए रो ई संचार समिति से विचार-विमर्श करने के बाद, **रो ई ने ऐसे क्लबों के लिए अपने नियमों को अपडेट किया है जिससे अब उन्हें निष्कासन का सामना करना पड़ सकता है।** मौजूदा एवं नए नियम:

पिछली प्रक्रिया	1 जुलाई 2022 से शुरू होने वाली नई प्रक्रिया:फ
पत्रिका कार्यालय अनुपालन न करने वाले क्लबों की रिपोर्ट रोटरी अंतर्राष्ट्रीय को भेजता है।	पत्रिका अनुपालन न करने वाले क्लबों की एक रिपोर्ट रो ई को भेजती है, **यह स्पष्ट करने के लिए कि क्या वे भुगतान न करने के कारण गैर-अनुपालन की श्रेणी में है - या - अब तक उन्होंने सबस्क्राइब ही नहीं किया है।** रिपोर्ट त्रैमासिक भेजी जानी चाहिए।
मंडल सचिवालय से पत्र का प्रारूप पत्रिका कार्यालय के साथ साझा किया जाता है, जो बाद में उसे उपयुक्त क्लबों को प्रेषित करता है।	पत्रिका क्लबों को पत्र भेजती है; रोटरी एक अलग पत्र के माध्यम से मंडल गवर्नरों को सूचित करेगी।
क्लब के पास अनुपालन करने या निलंबित होने के लिए 120 दिन होते है।	क्लब के पास अनुपालन करने या निलंबित होने के लिए **90 दिन** होते है।
यदि क्लब अनुपालन नहीं करते है, तो पत्रिका रो ई को एक रिपोर्ट भेजती है। क्लबों को निलंबित किया जाता है।	**90-दिन की रियायत अवधि से दो सप्ताह पहले उन क्लबों को एक और अनुस्मारक भेजा जाता है जो अभी भी अनुपालन नहीं कर रहे है। यदि क्लब अनुपालन नहीं करता है तो पत्रिका रो ई को एक रिपोर्ट भेजती है। क्लबों को निलंबित किया जाता है।**
यहां प्रक्रिया समाप्त होती है।	**180 दिनों के लिए निलंबित होकर भी अनुपालन न करने वाले क्लबों को एक और पत्र भेजा जाएगा जिसमें लिखा होगा कि बोर्ड अपने विवेक से उस क्लब को बंद कर सकता है।** क्लब का निरीक्षण करें।
	PETS और GETS पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से सब्स्क्रिप्शन के बारे में जानकारी शामिल होगी।
	अपालन को परिभाषित करने हेतु एक सीमा निर्धारित की जाएगी: या तो 20% या 50% क्लब सदस्य?

चूंकि इस प्रक्रिया को अब **रोटरी कोड ऑफ पॉलिसीस में शामिल किया जाएगा,** इसलिए हमें बेहतर अनुपालन की उम्मीद है। निदेशक मंडल अपने क्षेत्रों में पत्रिकाओं की वकालत करेगा। **निदेशक क्लबों के अपालन को जानकार दंग रह गए, और इस बात पर भी कि अनेक मंडल गवर्नर और क्लब अध्यक्ष अनिवार्य सब्स्क्रिप्शन से अवगत नहीं है।** इसका मतलब यह है कि रोटरी को PETS और GETS में अनिवार्य सब्स्क्रिप्शन पर जागरूकता बढ़ानी होगी।

(हमारे पाठकों की जानकारी के लिए, जर्मन क्षेत्रीय पत्रिका 65,000 से अधिक रोटेरियन को वितरित की जाती है - कुल संख्या का लगभग 99 प्रतिशत। बाकी *रोटरी* की सदस्यता लेते हैं। जापान में, 85,000 सदस्यों में से, 99 प्रतिशत *रोटरी-नं-टोमो* की सदस्यता लेते हैं; शेष एक प्रतिशत और कई अन्य रोटेरियन, *रोटरी* की सदस्यता लेते हैं। स्विट्ज़रलैंड और लिकटेंस्टीन में - कुल 13,200 रोटेरियन के साथ - केवल एक क्लब है जो किसी भी रोटरी पत्रिका की सदस्यता नहीं लेना चाहता है। स्थानीय डीजी अब इसे समस्या को हल कर रहे हैं।)

रोटरी न्यूज़ हमारे ज़ोन में रोटरी क्लबों से आग्रह करता है कि वे अपने सब्स्क्रिप्शन बकाया का भुगतान सतत रूप से करें।

रो ई से संदेश